अध्याय 13

समतावादी समाज के पक्षधर चरणसिंह

चौधरी चरणसिंह अमीर व गरीब, गाँव व शहर की बढ़ती खाई से बेहद चिन्तित थे। इसमें कोई संदेह नहीं है कि पश्चिम के कुछ विचारक यह कहकर चले गये हैं कि समता एक स्वप्न है। मानव-मानव के बीच अन्तर केवल धन के आधार पर ही नहीं है शरीर, बल, साहस, मानसिक बौद्धिक व भाव स्तर पर बहुत बड़ा अन्तर है। पश्चिम के एक प्रसिद्ध विचारक फ्राईड ने कहा है कि समता एक झूठी कहानी है असमानता एक तथ्य है। हिटलर ने बड़ा जोर देकर कहा था कि इस पृथ्वी पर केवल श्रेष्ठजन को ही रहने का अधिकार है। श्रेष्ठ लोगों को इस पृथ्वी पर शासन करने का जन्मसिद्ध अधिकार है। सैनिक इस पृथ्वी का सर्वश्रेष्ठ फूल है। युद्ध परमावश्यक है यह उन लोगों को कुलीनता की श्रेणी में लाकर खड़ा कर देता है जिनमें युद्ध में डटे रहने का साहस है। हिटलर के गुरू नीत्से ने कहा था कि इस पृथ्वी के जो नामक (शीर्ष) व्यक्ति हैं वे सभी शक्ति के प्यासे हैं। मेरी आत्मा सैनिक को देखकर फैल जाती है संन्यासी को देखकर सिकुड़ जाती है। इस देश में भी मनुवादी व्यवस्था में कोई वर्ग सर पर चढ़कर बोलता है कोई पैरों की धूल बनकर जमीन पर घिसटता है। चौधरी चरणसिंह इस भेदभाव को उचित नहीं मानते उनके अनुसार जन्म से कुछ भी तय नहीं होता कर्म से तय होता है। उन्होंने अपनी एक पुस्तक में लिखा था कि शोषण के कारण असमानता है। उनके अनुसार—

"किस तरह दौलत पैदा करने वाला (किसान) अपने को बेबस समझता है और उसकी मेहनत पर किस तरह थोड़े से लोग धन का संचय करके बड़े लोग बन जाते हैं।"

चौधरी चाहते थे कि किसान व मजदूर अपने अधिकारों के लिये संघर्ष करें। यदि इनकी जिन्दगी में प्रभात नहीं भी आ पाता तो भी उन्हें यह विश्वास दिलाया जाना चाहिये कि उनके बच्चे जब जवान होकर जीवन के कर्मक्षेत्र में पैर रखेंगे तो वे समतावादी समाज के दर्शन करने में सफल होंगे। इन भावों से यही उजागर होता है कि चौधरी साहब समतावादी समाज के पक्षधर थे। उन्होंने एक अवसर पर कहा था कि—

"स्वतंत्र भारत को निर्धनता, बेरोजगारी, अपूर्ण रोजगार और

विभिन्न वर्गों में आय में भारी असमानता इत्यादि समस्याएं ब्रिटिश सरकार से विरासत में मिली थीं। आजादी के बाद कई दशक बीत जाने पर भी सरकार इन समस्याओं का समाधान नहीं कर सकी बल्कि इन समस्याओं में भ्रष्टाचार की समस्या का और इजाफा हो गया।"

इन शब्दों से यहीं प्रकट होता है कि चौधरी साहब असमानता को एक रोग मानते थे। उन्होंने कहा था कि समतावादी समाज तभी बन सकता है जब सत्ता गाँव के हाथ में होगी। हमे वर्ण व्यवस्था से मुक्ति पानी होगी। उन्होंने यह भी कहा था कि भारत के ज्यादातर लोग झुग्गी-झोपड़ियों मे रहते हैं इन लोगों को ध्यान में रखकर नीतियाँ नहीं बनाई गई बल्कि विदेशी नीतियों को भारत पर लाद दिया गया। समाजवाद जो कि समता का नारा देता है, सरकार ने समतावादी समाज का निर्माण करने का वायदा किया परन्तु कार्य इसके विपरीत किया। कुटीर उद्योगों के बल पर ही समतावादी समाज का निर्माण हो सकता है परन्तु बड़े उद्योगों की नीति ने अमीर व गरीब की खाई को और चौड़ा कर दिया।

जिन लोगों का बचपन सुख व चैन से बीता है जो ज्वार व ईख के पौधे का भेद नहीं जानते वे जनता जनार्दन का भला नहीं कर सकते। जनता को नींद से वही जगा सकता है जो गाँव व गन्दी बस्तियों की स्थिति को भली भाँति जानते हैं। अब समय आ गया है जब संगठित प्रयास करके भारत की दो अलग-अलग दुनियाँ की गहरी खाई को पाट दिया जाये। इस तरह के भाव रखने वाले चरणसिंह अमीर व गरीब के बीच बढ़ती गहरी खाई को पाटकर एक समतामूलक समाज की स्थापना करना चाहते थे। जिससे गाँव गरीबी व भूखे लोगों को निकट से देखने का अवसर नहीं मिला वह समता की बात भी उठाने से हिचकता है। उन्होंने राजनेताओं तथा उच्च पदस्थ अधिकारियों के वैभवपूर्ण जीवन पर कटाक्ष करते हुये एक बार कहा था कि—

"हमारे देश के कुछ राजनेता और नौकरशाही तंत्र के अधिकारी भारत की अर्थव्यवस्था को अपने मनोरंजन और लाभों का आधार मानते हैं। हजारों भारतीय अधिकारियों ने काफी समय से समृद्धिशाली जीवन बिताया है और उनका यह वैभवशाली जीवन हमारे देश के असंख्य दीन दुखियों की कीमत पर पनपा है।"

इन शब्दों से भी यही प्रकट होता है कि वे यह नहीं चाहते थे कि धरती पर

रहने वाला एक वर्ग शोषण की चक्की में पिसता रहे तथा दूसरा वर्ग उनका खून चूसकर वैभव-विलास का जीवन जीने लगे। जीवन में एक ऐसी व्यवस्था का होना आवश्यक है जिसमें निम्न को ऊपर उठाकर उसे सम्मानपूर्वक जीवन जीने का अधिकार दिया जाये तथा राजनेता व अधिकारी मर्यादा में रहना सीखें जिससे उनके ऊपर यह ऊंगली न उठे कि वे दूसरों का खून चूस कर फूल रहे हैं। जब तक देश में असमानताओं की खाई को नहीं पाटा जाता तब तक यह देश महान नहीं बन सकता। वही देश महान बनता है जहाँ गरीबी का जड़मूल विनाश हो जाता है, बेरोजगारी मिट जाती है। असमानता की अन्यायी व्यवस्था ध्वस्त हो जाती है तथा देश के नेता सबसे पहले नींव को मजबूत बनाने के लिये आधार पर खड़े लोगों के साथ अपना भाग्य जोड़ते हैं। उच्च लोगों के साथ गुप्त संधि देश को महान नहीं बनाती। जब अन्तिम खड़ा आदमी प्रसन्नता व अनुग्रह का भाव पैदा करता है तथा प्रकट करता है तभी देश महानता के शिखर पर चढ़ने लगता है। असमानता के विरुद्ध संघर्ष ही वर्तमान युग का धर्मयुद्ध व सार्थक कर्म है। जब पेट में भूख लगती है तो चाँद भी रोटी जैसा ही दिखाई देता है। चौधरी साहब के अनुसार भगवत कृपा का ऐसा विधान नहीं है कि हमारे बच्चे अभाव व दीनता में जीवित रहें। मानव परिस्थितियों का निर्माता है। जो गिर सकता है वह उठ सकता है जो भटक सकता है सही राह पर आ सकता है। मानव तभी प्रसन्न रहता है जब उसके चारों ओर समान स्तर पर जीने वाले लोग निवास करते हैं जब एक आदमी शोषण के बल पर विलासता का जीवन जीने लगता है तो वह सम्मान नहीं पाता है। गीता में भी कहा गया है कि जो सबको समान देखता है वह ज्ञानी है। उनके अनुसार मानव का सच्चा हितैषी वही है जो समतावादी समाज के सृजन का शिल्पी है। मानव केवल रोटी खाकर सन्तुष्ट नहीं रह सकता वह थोड़ा ऊपर उठकर गर्व का अनुभव करता है परन्तु कुछ दुर्जन लोग उसके इस सपने को ध्वस्त कर देते हैं। समतावादी समाज के मार्ग में सबसे बड़ी बाधा शिक्षा की समस्या है। चौधरी साहब के अनुसार माध्यमिक स्तर तक निशुल्क शिक्षा की व्यवस्था कराना सरकार की गहन चिन्ता का विषय होना चाहिये। बिना उपर्युक्त शिक्षा समता एक खोखला नारा बनकर रह जायेगी। दूसरे शहरी शिक्षण संस्थानों में इतने अधिक शुल्क लिये जाते हैं कि साधारण किसान व मजदूर के लिये उन्हें वहन करना बहुत कठिन होता है। कुछ मामलों में तो यह शुल्क इतना अधिक होता है कि इसको

वहन करना गरीबों के बस की बात ही नहीं रहती। दूसरे भेदभाव की नीति भी समता पर आधारित समाज बनाने में बाधक रही है। इन विचारों के अवलोकन से स्पष्ट हो जाता है कि चौ० चरणसिंह समतावादी समाज के समर्थक थे तथा जन्म पर आधारित वर्ण व्यवस्था को वे ध्वस्त देखना चाहते थे। उनका यह सपना एक दिन अवश्य साकार होकर रहेगा।

□■□

अध्याय 14

आर्य समाजी आस्था में मूर्तरूप चौधरी चरणसिंह

चौधरी चरणसिंह ने अपने जीवन पर साम्प्रदायिकता व हठधर्मी के प्रबल विरोधी राजा महेन्द्र प्रताप का प्रभाव स्वीकार करते हुये एक बार कहा था कि—

"मैंने अपनी जवानी के दिनों में जिन लोगों से प्रेरणा ली थी उनमें राजा महेन्द्रप्रताप का स्थान बहुत ऊँचा था।"

वास्तविकता यह है कि उनके जीवन की हर श्वास आर्य आस्था की गवाही देती थी। अत: यह जानना आवश्यक है कि आर्य समाज हमें मूलमंत्र क्या-क्या सिखाते हैं तथा वे जीवन को किस तरह प्रभावित करते हैं? आर्य समाज एक ईश्वर में विश्वास करता है जिसका पृथ्वी पर कोई दलाल या ठेकेदार नहीं है। वह निराकार है अत: निराकार ईश्वर की उपासना ही सच्ची है। मूर्ति पूजा पाखण्ड है। प्रत्येक स्त्री पुरूष को समान रूप से शिक्षा प्राप्त करने का अधिकार है। भाग्य से सदा पुरूषार्थ बड़ा है। पुरूषार्थ के बल पर हर मानव अपना कायाकल्प कर सकता है। धर्म धारण करने के लिये है अत: ऊँच नीच के भेद के बिना प्रत्येक को उसे धारण करने का अधिकार है। जन्म से कोई शूद्र, ब्राह्मण नहीं होता जैसा कर्म करता है वह उसी प्रकार का होता है। पाखण्ड खण्डन हर आर्य का कर्त्तव्य है। अत: आर्यधर्म के मूलमंत्रों को समझना आवश्यक है जो इस प्रकार हैं—

- जो 'ओम' को शिखर पर रखता है वह आर्य समाजी है।
- जे पुरुषार्थ को भाग्य से बड़ा मानता है वह आर्य समाजी है।
- जो जड़ व चैतन्य की विभाजन रेखा को पहचानता है वह आर्य समाजी है।
- जो जीव को ब्रह्म का अंश मानता है आर्य समाजी है।
- जो अपने हाथों अपने भाग्य का कायाकल्प करने में समर्थ है वह आर्य समाजी है।
- जो जड़ पदार्थ की पूजा छोड़कर दीन दुखियों की सेवा को असली धर्म मानता है वह आर्य समाजी है।
- जो जीवन संग्राम से भागता नहीं वरन् जीवन की समस्याओं के प्रति जागता है वह आर्य समाजी है।

- जो गायत्री महामंत्र की महिमा को पहचानता है उसे अपने जीवन मे धारण करता है आर्य समाजी है।
- जो वर्ण जन्म से नहीं कर्म से मानता है आर्य समाजी है।
- जो वेदों को ज्ञान का भण्डार तथा जीवन समस्या का समाधान करने वाले सूत्रों का पिटारा मानता है वह आर्य समाजी है।
- जो उठो जागो तथा तब तक लक्ष्य प्राप्त न हो जाये मत रुको के वेदमंत्र को अपना पथ प्रदर्शक बनाता है वह आर्य समाजी है।
- जिसकी जीवन ऊर्जा श्रेष्ठ को समर्पित है वह आर्य समाजी है।
- जो श्रेष्ठ शुभ को बचाने के लिये अपना तन, मन, धन सब अर्पित करने को तत्पर रहता है वह आर्य समाजी है।
- जो व्यक्तियों का नहीं सिद्धान्तों का विरोध करता है आर्य समाजी है।
- जो नारी जाति को शिक्षा व गृहस्थ में समान अधिकार देने का पक्षधर है वह आर्य समाजी है।
- जो पलायन नहीं करता वरन् प्राणयाम से अपने प्राणों का विस्तार करता है वह आर्य समाजी है।
- जो जड़ पत्थर पर पड़ी धूल नहीं अपनी चेतना पर पड़ी कुसंस्कारों की धूल झाड़ता है वह आर्य समाजी है।
- जो अपना उत्तरदायित्व अपने कन्धों पर लेता है वह आर्य समाजी है।
- जो गहन अध्ययन के पश्चात् ही अपने विरोधियों की आलोचना करता है आर्य समाजी है।
- परमात्मा पलायनवादी का नही पुरुषार्थी का साथ देता है जो यह मानता है वह आर्य समाजी है।
- जो स्वयं का सुधार व समाज सेवा को जीवन का प्रस्थान बिन्दु बनाता है वह आर्य समाजी है।
- जो शरीर से स्वस्थ, मन से स्थिर हृदय से आस्थावान होकर आत्मा से अविद्या व अन्धकार को दूर भगाता है वह आर्य समाजी है।
- जिसके लिये संन्यास संसार से पलायन नहीं वरन् अज्ञान व अविद्या से जागरण है वह आर्य समाजी है।

- जो झणभंगुर पदार्थ के नहीं शाश्वत विराट के रहस्यों को उजागर करने में अपना जीवन दाव पर लगता है आर्य समाजी है।
- जो जीवन की मशाल को दोनों तरफ से जलाकर जीता है आर्य समाजी है।
- पत्थर पूज कर आदमी पथरीला हो जाता है तथा जड़ प्रकृति से उलझ कर आदमी जहरीला हो जाता है जो ऐसा मानता है आर्य समाजी है।
- मूर्ति पूजा आत्मक्रान्ति को भयानक रूप से हानि पहुँचाने वाला अन्धविश्वास है जो ऐसा मानता है वह आर्य समाजी है
- जो घोंसले का मोह छोड़कर खुले आकाश की चुनौती स्वीकार करके अपने पंख खोलता है वह आर्य समाजी है। वह आदर्श व्यर्थ है जिसे धरती की धूल से नहीं उतारा जा सकता। वह व्यवहार बचकाना है जो किसी आदर्श से प्रेरणा नहीं लेता जो ऐसा मानता है वह आर्य समाजी है।
- जो शरीर से आलस्य की बेड़ी, जो मन से अस्थिरता की बेड़ी, जो हृदय से अन्धविश्वास की बेड़ी तथा जो आत्मा से अविद्या की बेड़ी काटने से समर्थ है वह आर्य समाजी है।
- जिसके लिये वेद ज्ञान के गौरीशंकर हैं। वह आर्य समाजी है। यह आत्मा या तो तमस के आलस्य में भटकती है या रजस की आपाधापी में विक्षिप्त होती है अथवा सत्व के अहंकार में अधर में लटकी रहती है ये तीनों आत्मा के शाप हैं तथा अष्टांग योग समाधान है जो ऐसा मानता है वह आर्य समाजी है।
- विकृति जिसके लिये अभिशाप है प्रकृति जिसके लिये अग्निपरीक्षा है और संस्कृति जिसके लिये अमृत रूपी वरदान है वह आर्य समाजी है।
- गुरुकूल जिसके लिये माँ है गायत्री जिसके लिये महामंत्र है वेद जिसके लिये महागुरु हैं वह आर्य समाजी है।
- जो झूठे धर्म को प्रतिष्ठा के सिंहासन से उतार कर सच्चे आर्य धर्म को जीवन में धारण करता है वह आर्य समाजी है।
- जिसके नेत्र रहस्य को खोजते हैं और यथार्थ को पहचानते हैं वह आर्य समाजी है।
- जो भारतीय संस्कृति को विदेशी सभ्यता से श्रेष्ठ मानता है वह आर्य समाजी है।

महर्षि दयानन्द ने बहुत सी प्रचलित मान्यताओं को झकझोर कर हिलाया तथा धराशायी कर दिया। उन्होंने अपनी पांचों ऊंगली उठाकर जीवन में जो गलत था उसका खुला विरोध किया। उनके अनुसार वर्ण जन्म से नहीं कर्म से हैं। जीवन से पलायन सच्चा संन्यास नहीं है। स्त्री पुरूष दोनों को शिक्षा का समान अधिकार है।

पत्थर पूजा मूढ़ता से उपजा अन्धविश्वास है। भाग्यवादी दर्शन जीवन के लिये अभिशाप है भाग्य से पुरूषार्थ सदा बड़ा है। जो इन महत्त्वपूर्ण वचनों का अनुसरण करता है, आर्य समाजी है।

चौ० चरणसिंह ने अपने जीवन में जितना महत्त्व महर्षि दयानन्द व उनके दर्शन को दिया उतना अन्य किसी को नहीं दिया। महर्षि दयानन्द को उन्होंने अपना गुरू स्वीकार किया तथा शास्त्रों में कहा गया है कि जिसके मुख में गुरू का मंत्र होता है उसके सभी कार्य सिद्ध हो जाते हैं। जो जीवन से अंधेरा दूर करे वही गुरू है। माँ-बाप से जन्म मिलता है गुरू से जीवन मिलता है। माँ-बाप से संस्कार मिलते हैं गुरू से सत्संग मिलता है। चौ० चरणसिंह ने स्पष्ट रूप से कहा था कि **"देश सेवा के क्षेत्र के लिये आर्य समाज मेरा प्रथम सोपान है।"** उन्होंने अपने जीवन में आर्य समाज को प्राथमिकता दी। अर्थनीति पर वे गांधी जी से प्रभावित थे तथा शासन-प्रशासन की कुशलता में उन पर सरदार पटेल की छाप थी परन्तु वे आजीवन महर्षि दयानन्द की दिव्यता से अभिभूत थे। उन्हीं के दर्शन की ऊंगली पकड़ कर चलते रहे। उन्होंने इस विषय पर अपनी मान्यताओं से कभी भी समझौता नहीं किया।

चौधरी चरणसिंह के अनुसार महर्षि दयानन्द अपनी मुक्ति को उतना महत्त्व नहीं देते थे जितना वह समाज के उत्थान तथा व्यक्ति के दुख व अज्ञान को दूर करने को महत्त्व देते थे। वे समाज के भौतिक, नैतिक व धार्मिक उत्थान की कामना से भरे थे।

व्यक्ति किस जाति में पैदा होता है इससे उसका मूल्य नहीं आँका जाना चाहिये। अपनी योग्यता व श्रेष्ठता से वह किस सोपान पर पहुँचता है उससे उसको

सम्मानित किया जाना चाहिये। वे वर्ण व्यवस्था को लचीली बनाना चाहते थे। वर्ण की कठोर व्यवस्था के कारण ही यह देश बहुत वर्षों तक दासत्व की बेड़ी में जकड़ा रहा। इससे राष्ट्र की शक्ति का क्षय होता है।

शिक्षा प्राप्त करने के पश्चात् राज्य द्वारा व्यक्ति के वर्ण का निर्धारण महर्षि दयानन्द का मौलिक योगदान है जिससे गुण अथवा ज्ञान के आधार पर वर्ण का निर्धारण समाज में अन्याय दूर करने में सफल होगा। मानव मानव की भिन्नता एक ऐसा तथ्य जिसे झुठलाया नहीं जा सकता।

मनुष्य के ज्ञान की क्षमता भिन्न है। कुछ लोग अपने आप को केवल शरीर मानते हैं कुछ अपने आप को मन मानते हैं। कुछ अपने आपको हृदय मानते हैं और कुछ अपने आपको बुद्धि मानते हें। शरीर के स्तर पर आदमी रोटी, कपड़ा व मकान से सन्तुष्ट हो सकता है परन्तु बुद्धि के स्तर पर पहुँच कर वह ज्ञान व विज्ञान के बल पर पृथ्वी से चाँद तक की यात्रा करता है। इस प्रकर मानव को समान अवसर तो दिये जा सकते हैं समान नहीं बनाया जा सकता। एक विचारक ने सही कहा था कि असमानता एक तथ्य है तथा समानता एक झूठी कहानी है। महर्षि दयानन्द की व्यवस्था में हर मानव अपने ज्ञान के बल पर ब्राह्मण बन सकता है।

महर्षि दयानन्द ने एक ऐसी शिक्षा प्रणाली का सूत्रपात किया जहाँ केवल बुद्धिबल ही न बढ़े वरन् पूरे व्यक्तित्व का विकास हो। जहाँ शिक्षा केवल बुद्धि का तर्क बनकर न रह जाये हृदय का विकास व संवेदनाओं का आदान प्रदान बने। विद्यार्थी शहरी प्रदूषण से दूर ताजी हवा से श्वास लेकर जीवन के सूत्रों को जानकर केवल बुद्धिमान ही न बने वरन् ज्ञानी भी बने। केवल सफल शिक्षार्थी ही न बने शक्तिशाली भी बने। चौधरी चरणसिंह गुरुकुल शिक्षा पद्धति के समर्थक थे।

चौ० चरणसिंह ने महर्षि दयानन्द को इस युग का महान मनीषी माना तथा पूरे विश्व का चुनौती देने वाला कुशाग्र बुद्धि सम्पन्न सीमातीत शक्ति वाला कहा। उनके अनुसार महर्षि दयानन्द ने इस देश को संगठन का वरदान दिया था। उनका संन्यास एक अभूतपूर्व जीवनदर्शन था। उन्होंने बचपन से लेकर अन्तिम समय तक एक विलक्षण प्रतिभा के साथ-साथ एक ऐसा जीवन सन्देश दिया जो जन-जन का प्रेरणा स्रोत्र बना तथा उनका हर कृत्य अनुकरणीय व वन्दनीय था।

मनुष्य ने पृथ्वी पर दो तरह के जीवन दर्शन विकसित किये हैं प्रथम प्रेय का

जीवन दर्शन दूसरा श्रेय का जीवन दर्शन। श्रेय का जीवन दर्शन साधना उपासना व योग से मानव के भीतर छिपी दिव्यता को उजागर करने पर बल देता है। यह जीवन ऊर्जा को ऊर्ध्वगामी बनाता है प्रेय का जीवन दर्शन इन्द्रियों को तृप्त करने में ही सुख मानता है। इसके जन्मदाता चार्वाक थे जिन्होंने कहा था कि पृथ्वी पर जितने समझदार लोग हैं वे सब तरह से अपनी इन्द्रियों को तृप्त कर लेते हैं। महर्षि दयानन्द श्रेय के जीवन दर्शन पर आर्य समाज की आधारशिला रखकर चले गये। जो उनके सपनों को पूरा करने के लिये कृत सकंल्प हैं वह आर्य समाजी हैं आर्य समाज की मान्यता है कि जब तक मानव शरीर व इन्द्रियों को ही अपना होना माने हुये है तब तक वह प्रौढ़ नहीं हुआ है।

शरीर स्वस्थ या अस्वस्थ होता है। मन चंचल या स्थिर होता है। हृदय प्रेमपूर्ण या कठोर होता है आत्मा मूर्छित अथवा जागृत होती है। जो योग से शरीर को स्वस्थ रखता है। जो परोपकार से हृदय को प्रेमपूर्ण रखता है जो उपासना से आत्मा को जागृत रखता है वह आर्य समाजी है।

पत्थर के पास सत्ता है। पेड़ के पास सत्ता व जीवन दो तत्व हैं। पशु के पास सत्ता, जीवन व चेतना तीन तत्व हैं। मनुष्य के पास सत्ता, जीवन, चेतना व स्वचेतना चार तत्व हैं। मनुष्य को अच्छे, बुरे, धर्म अधर्म, न्याय, अन्याय तथा शुभ व अशुभ का भी बोध है इसी कारण मनुष्य योनि इस पृथ्वी पर सर्वश्रेष्ठ है। यह सर्वेश्रेष्ठ प्राणी जब एक तत्व वाले पत्थर के सामने खड़ा होकर अपना र्मागदर्शन खोजता है तो जीवन का दुर्भाग्य शुरू होता है। श्रेष्ठ के सामने झुकने से आदमी श्रेष्ठता की ओर बढ़ता है निम्न के सामने झुकने से पतन के गर्त में गिरता है। इसी कारण कहा गया कि आत्मा और परमात्मा का मिलन वहीं हो सकता है जहाँ दोनों के मिलने की सम्भावना हो और यह स्थान मानव का अन्तःकरण ही है जहाँ आत्मा और परमात्मा सह उपस्थित हैं अतः ध्यान से ही यह धन्यता की घड़ी आती है। जो सत्य को अपने भीतर खोजता है वह आर्य समाजी है। जिस प्रकार हर लकड़ी के भीतर अग्नि छिपी है उसी प्रकार हर देह के भीतर आत्मा छिपी है। जिस प्रकार अग्नि को कोई तलवार नहीं काट सकती उसी प्रकार आत्मा को भी कोई तलवार नहीं काट पाती। जो मरणधर्मा देह के भीतर आत्मा की ज्योति पर अवधान देता है आर्य समाजी है।

शास्त्रों में कहा गया है कि सुख भूमा (विराट) में है छुद्र जो सीमा में बंधा

है उसमें सुख नहीं है। धर्म मानव को उस चैतन्य की प्रतिष्ठा करना सिखाता है जिसे न तो बनाया जा सकता है और न जिसकी महिमा को घटाया जा सकता है। विराट को छोटे आकार में बांधने का हर प्रयास मूढ़ता है। जो असीम का आकांक्षी है वह आर्य समाजी है।

आज संसार में जो दुख की काली घटा दिखाई दे रही है उसका मुख्य कारण यही है कि मानव जड़ पदार्थ से सन्तुष्ट होना चाहता है। जो आदमी की मुट्ठी में कैद हो जाता है वह आदमी से छोटा होता है और जो अपने से छोटा है वह सदा के लिये तृप्त नहीं कर सकता। शक्ति व स्थायी आनन्द देने की क्षमता निराकार सूक्ष्म शक्ति में होती है जो हमारी आत्मा है। इस आत्मा का कोई मेल क्षुद्र से नहीं होता। समान ही समान से मिल सकता है। जब मन क्षुद्र सीमाओं व आकार की परिधि को तोड़कर आत्मा साक्षात्कार की क्षमता जुटाता है तभी आनन्द की वर्षा होती हे। जो मन को मौन व शान्त करके असीम का आलिंगन करता है आर्य समाजी है।

आदमी अपने ही हाथ से बनाई आकृतियों के जंगल में भटक गया है। पृथ्वी पर देवी देवताओं की मूर्तियाँ बाढ़ की तरह बढ़ती जाती हैं परन्तु मनुष्य के मन का संताप उसकी पीड़ा व दुख बढ़ता ही चला जा रहा है। शांति की एक झलक के लिये आदमी तरसता है। मानव की आंखे आँसुओं से भरी हैं। मस्तिष्क में तनाव है। प्राणों में विनाश का भय है। जीवन में निराशा है जीवन एक महा उपद्रव बन गया है। उसके जीवन में कोई रसधार नहीं है चिन्ता व निराशा की भरमार है। जब तक मानव इन छोटी खिड़कियों को छोड़कर आकाश की चुनौती स्वीकार करके पंख नहीं खोलता उसके जीवन में धन्यता की वर्षा नहीं हो सकती। जो मन को आकृतियों के मोह से मुक्त करके सही समय पर सही विधि से ध्यानयोग अपनाता है वह आर्य समाजी हे।

ईश्वर के समीप आसन लगाना उपासना है तथा ईश्वर में लीन होना समाधि है। जहाँ वासनारहित निकटता है वही उपासना है जहाँ आत्मा की बूँद परमात्मा के सागर में गिरकर एकाकार होती है समाधि है। जिस प्रकार हर कुँआ सागर से जुड़ा है उसी प्रकार हर आत्मा-परमात्मा से जुड़ी है। आत्मा व परमात्मा के बीच पर्दा केवल आत्मा की अविद्या का है वह अपना स्वरूप भूलकर बाहर सुख की खोज में भटकती है। उपासना इस भटकन से अपने घर की वापसी है। जो उपासना

को अपने जीवन की अनिवार्य आवश्यकता बना लेता है आर्य समाजी है।

असली धर्म परम्परा का अन्धा पोषण नहीं होता और न ही परम्परा का अन्धा विरोध। जहाँ परम्परा में जो श्रेष्ठ है उसको बचाकर उसके विरूद्ध बिगुल बजाया जाता है जो ऊपर से थोप दिया गया है तब सद्धर्म का उदय होता है। अन्धविश्वास निश्चित बुरा है परन्तु अन्ध विरोध और भी बुरा है। समय की कसौटी पर परखे गये सूत्र व सिद्धान्त समय की धारा में नहीं मिटते वरन् और निखरकर सामने आ जाते हैं परन्तु जिस प्रकार हर दर्पण पर धूल जम जाती है उसी प्रकार पाखण्डी लोग शास्त्र शब्दों सद्धर्म में तोड़-मरोड़ करते हैं। शास्त्रों के शब्दों में छिपे अर्थ को उजागर करना ही सत्यार्थ प्रकाश है। जो अपना जीवन सत्यार्थ प्रकाश की धुरी पर चलाता है आर्य समाजी हैं।

तामसी दुराचारी होकर, राजसी अत्याचारी होकर तथा सात्विक अहंकारी होकर संसार में भटकते रहते हैं। इस जीवन में केवल वे ही भटकन के पार होते हैं जो उपासना व ध्यानयोग से प्रकृति के तीनों बन्धनों के पार हो जाते हैं। जो बन्धन के कारण को समझकर मुक्ति के मार्ग का तीर्थयात्री है वह आर्य समाजी है।

भाग्य से पुरूषार्थ बड़ा होता है। पुरुषार्थी पर परमात्मा का आशीर्वाद बरसता है। पुरूषार्थी अपने मन को अखण्ड बनाता है। जीवन का सारा दुख परमात्मा से दूरी बढ़ने से पैदा होता है उपासना परमात्मा से निकटता है। जो अपनी इच्छा को सर्व की इच्छा के अनुरूप साध लेता है वह इसी जीवन में अपने सारे बंधन काट देता है। जो पुरूषार्थ को परममूल्य देता है वह आर्य समाजी है।

जिस मानव के भीतर मनुष्यता की सीमा लाँघ कर दिव्यता के द्वार पर प्रवेश करने का सपना पैदा नहीं हुआ वह अभागा है। विचार करने में असमर्थता से पशुता प्रकट होती है। विचारों के जगत में शोध व सफलता से मनुष्यता का जन्म होता है। जबकि यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार धारणा ध्यान और समाधि के योगमार्ग से मानव दिव्यता में प्रवेश करता है। जो योग का रहस्य समझकर उसे अपने जीवन में धारण करता है वह आर्य समाजी है।

जो स्वयं जागा है वही दूसरो को जगा सकता है जो स्वंय ज्ञानी है दूसरो को ज्ञान दे सकता है जो स्वयं सम्पन्न है दूसरों को मार्ग सुझा सकता है। जिस

तरह फूल की गन्ध, सोने का असली होना, हीरे की चमक, घी, शहद व पानी की शुद्धता उसके भीतर बसी होती है उसी प्रकार मानव का धर्म उसके भीतर छिपा होता है। अधर्म आदमी ऊपर से ओढ़ लेता है। बुरे विचार व बुरे कर्म के बिना अधर्म सम्भव नहीं होता है। ये सब अर्जित करने होते हैं तथा मानव को अन्धकार की ओर ले जाते हैं। धर्म अन्धकार से प्रकाश, मृत्यु से अमृत तथा अज्ञान से ज्ञान की ओर यात्रा पथ है। यही असली तीर्थयात्रा है। जो इस तीर्थयात्रा पर निकलता है वहीं आर्य समाजी है।

पश्चिमी देशों ने जो विज्ञान विकसित किया है तथा उसके बल पर जो आर्थिक प्रगति की है उसे हम सभ्यता करते हैं। गगनचुम्बी भवन, यातायात के तीव्रगामी साधन, जैट, एटमबम पृथ्वी से लेकर चाँद तक की यात्रा व अन्य चमत्कार उसकी देन हैं। इस प्रगति ने पूरी मानव जाति को महाविनाश के कगार पर लाकर खड़ा कर दिया है। आज तीसरे विश्व युद्ध की आशंका से मानव के प्राण काँप रहे हैं। पूरी मानव जाति अपना आखिरी अध्याय लिख रही है। एक प्रसिद्ध वैज्ञानिक ने एक बार कहा था कि तीसरे विश्वयुद्ध के बाबत तो वह नहीं बता सकता परन्तु चौथा विश्वयुद्ध ईट पत्थरों से लड़ा जायेगा। उसके कहने का अर्थ यही था कि तीसरे विश्वयुद्ध में पूरी मानव जाति व मानव सभ्यता के नष्ट होने का खतरा पैदा हो गया है। इस पूरी पृथ्वी के खाली होने का खतरा पैदा हो गया है। बचाव का मार्ग केवल भारत के पास है। भारत ने जीवन का जो दर्शन दिया उसे संस्कृति के नाम से जाना जाता है। जहाँ बाहरी चमक दमक के स्थान पर भीतरी सद्गुणों का विकास किया जाता है। हृदय सद्भावना से भरा शरीर परोपकार में लगा संवेदनशील मन अखण्ड ऊर्ध्वगामी, बुद्धि प्रज्ञा बनकर मानव को सच्चा आर्य बना देते हैं। सभ्यता प्लास्टिक के फूलों की चमक है संस्कृति असली फूलों से निकली सुगन्ध है। सभ्यता स्व का अर्थ भूलकर सर्व के विनाश में आतुर है। संस्कृति स्व का सुधार करके सर्व की मंगलकामना सिखाती है। अतः आज पूरे विश्व को भारतीय संस्कृति के मार्गदर्शन में चलने की प्यास पैदा हो चुकी है। भारतीय संस्कृति के दिग्विजयी अभियान के लिये यह शुभ घड़ी है। जो भारतीय संस्कृति के इस पावन अभियान में तन, मन, धन से जुड़ने को तैयार है वह आर्य समाजी है।

जब भी समाज में किसी जागृत आत्मा ने अंधेरे में भटके लोगों के सपनों

व अन्धविश्वासों पर चोट की है तभी जीवन में एक नई उथल पुथल मच जाती है। बिना चोट पहुँचाये तत्व को समझाना कठिन ही नहीं असम्भव है। सत्य को महिमा मण्डित करने के लिये असत्य व अज्ञान को काटना ही पड़ता है। जब भी किसी महापुरूष ने मानव को धर्म की गरिमा की याद दिलाकर मूढ़ता त्यागने को कहा है तभी उसे अपमान उपेक्षा विष या शूली का सामना करना पड़ा है। मनुष्य को नींद से जगाओ तो भी वह नाराज होता है उसके अहंकार पर आघात करो तो भी नाराज होता है। झूठे सहारे छीने जाने पर आदमी क्रोध से बौखला उठता है। महर्षि दयानन्द को पग-पग पर अवरोधों का सामना करना पड़ा था। चौधरी चरणसिंह बोल उठते हैं कि **"महर्षि दयानन्द को पत्थरों तथा विष के रास्ते से सफलता अर्जित करनी पड़ी थी।"** वास्तव में सद्ज्ञान बांटने वाले की पूजा उसकी मृत्यु के बाद होती है जीते जी आत्मज्ञानी क्रान्तिकारी प्रणेता की पूजा व सम्मान वे ही कर सकते हैं जो दुस्साहसी हैं तथा जिनका जीवनमंत्र सत्य के सैनिक बनना है दुनियां क्या कहती है उसकी उन्हें लेशमात्र भी परवाह नहीं होती है। सत्य के मार्ग पर पीड़ा भी प्रसाद बन जाती है असत्य के मार्ग पर सुविधा भी संकट ही खड़ा करती है। धन्यभागी हैं वे लोग जो सत्यपथ के तीर्थयात्री हैं। ऐसा तीर्थयात्री ही आर्य समाजी है।

मानव का दुर्भाग्य यह है कि मानव खण्ड-खण्ड टूटकर अनेक हो गया है। उसका मन हजार टुकड़ों में टूट गया है जो आपस में टकराते रहते हैं इसी कारण मानव अनिद्रा, उच्च रक्तचाप व विषाद से भर गया है। अनेक को पूजने वाला बिखर जाता है एक को पूजने वाला अखण्ड हो जाता है। पत्थर अनेक हैं पेड़ अनेक हैं मानव अनेक हैं परन्तु परमात्मा एक है अतः उस एक पर ध्यान जीवन की हर समस्या का समाधान है। जो अनेक के कर्त्ता, धर्त्ता व हर्त्ता ईश्वर की उपासना से जीवन का उत्थान करता है आर्य समाजी है।

जिस प्रकार एक गाड़ी दो पहियों पर चलती है मानव दो पैरों पर खड़ा होता है पक्षी दो परों से उड़ता है उसी प्रकार आम जाप व स्वाध्याय दोनों का सहारा लिये बिना साधना अधूरी रहती है 'ओ' अक्षर कंठ से 'उ' अक्षर ह्रदय से तथा 'म' अक्षर नाभि से बोला जाता है अतः ओम का जप तीनों केन्द्रों को पुष्ट करके प्राणों को विस्तार देता है। अधिक मात्रा में प्राणवायु भीतर जाने से प्रफुल्लता का उदय होता है तथा श्रेष्ठता में प्रवेश मिलता है। स्वाध्याय से सिद्धों द्वारा दिये सिद्धान्तों को पढ़कर सही विधि व सही दिशा निर्देश मिलता है तथा उससे भी

बढ़कर स्वाध्याय अपने मन में चलते विचारों व विकारों का भी अध्ययन है। स्वयं पर विचार से निरन्तर परिष्कार होता है। जो भी वृत्ति प्रकाश में आ जाती है शुद्ध होने लगती है। जिस प्रकार विषैले जीव घर के अंधेरे कोने में पलते हैं प्रकाश होते ही छिपने के लिये भागने लगते हैं उसी प्रकार विकार भी ध्यान देने से मिटने लगते हैं जिसने अपने मन को पूरी तरह पढ़ लिया वह फिर साधारण नहीं रहता सिद्ध हो जाता है। जिसने भी अपने भीतर पलती हर वासना व कामना को आँख गड़ा कर देख लिया वही शिखर पर चढ़ने लगा। जिस पेड़ की जड़ें विकार रहित होती हैं उस पर सुन्दर फल आते हैं जिसका अचेतन मन उजाले में आ गया वही महिमाशाली बनने लगा। आज के युग में स्वाध्याय इस युग की हर व्याधि का उपचार है। जो ओम जप व स्वाध्याय को अपनी जीवनचर्या बना लेता है आर्य समाजी है।

योग व यज्ञ जिसने इन दो शब्दों का अर्थ नहीं जाना उसने जन्म तो लिया परन्तु जीवन के रहस्य से कोई नाता नहीं जोड़ा। जहाँ रहस्य नहीं होता वहा रस भी नहीं होता। विज्ञान के हर आविष्कार से रहस्य उजागर नहीं हुआ और घना हो गया है। जो कर्म अपने स्वार्थ के लिये नहीं किया जाता वह यज्ञ है। जो कर्म श्रेष्ठ उद्देश्य के लिये समर्पित है यज्ञ है। जो कर्म धन्यवाद स्वरूप किया जाता है यज्ञ है। जो कर्म भिखारी बनकर नहीं दाता बनकर सर्वमंगल की भावना से किया जाता है यज्ञ है। इस पृथ्वी पर अग्नि के आविष्कार से बड़ा कोई आविष्कार आज तक नहीं हो पाया है। ठन्डी लकड़ी के भीतर छिपी अग्नि रूपी ऊर्जा को जिसने पहली बार खोजा वह मानव जाति का सबसे बड़ा हितैषी सिद्ध हुआ। अग्नि में जो खूबी है है वह पानी में नहीं है। पानी नीचे की ओर बहता है अधोगामी है चेष्टा से ही आप उसे ऊपर चढ़ा सकते हैं अग्नि ऊपर और ऊपर ही उठती है उर्ध्वगामी है जो जीवन को उच्च बनाने का सन्देश देती है। अग्नि में जो घी डाला जाता है वह आकाश को समर्पित होकर सबका कल्याण करता है पानी में यह गुण नहीं है। पानी के साथ मिलकर घी पृथ्वी पर पड़ा रहता है अग्नि के साथ मिलकर वह पृथ्वी छोड़कर आकाश में उठ जाता है अतः अग्नि उत्थान में सहायक है। मानव के शरीर में एक निश्चित मात्रा में अग्नि जीवन के लिये आवश्यक है। जब तक शरीर एक सीमा तक गर्म है तभी तक जीवन की आशा है। यज्ञ भीतर की इस अग्नि को उर्ध्वगामी बनाने का सन्देश देता है। जब जीवन ऊर्जा उर्ध्वगामी

बनती है तो क्रोध दया बन जाता है। काम सदाचार बनता है। मोह सर्वमगंल भाव बनता है। लोभ ब्रह्मचर्य बन जाता है। यज्ञ में घी कपूर व सुगन्धत सामग्री डाली जाती है। घी सीधा नहीं मिलता विधियों से प्राप्त किया जाता है सीधा तो दूध मिलता है उसे दही बनाकर मथना पड़ता है इसी तरह धर्म भी सीधा नहीं मिलता योग साधना से मिलता है। कपूर माया की तरह जिसका प्रभाव क्षणिक है। थोड़ी देर सुख का आभास देकर कपूर उड़ जाता है इसी तरह माया क्षणभुगुर आनी जानी है। इसी तरह यज्ञ में अन्न के दाने भी डाले जाते हैं जिनका अर्थ है कि अहंकार जब बीज रूप में हो तभी उसे जला देना चाहिए। बड़ा होकर वह बड़े दुख देता है। इस प्रकार यज्ञ जीवन के लिये वरदान है यह विषाक्त वायु को शुद्ध करता है तथा भीतर सद्‌भावना को जन्म देता है। विराट से मैत्री बढ़ाता है तथा धर्म में आस्था को पुष्ट करता है। धन्यभागी हैं वे लोग जिनका जीवन यज्ञमय है। जो द्रव्य के स्वार्थ से ऊपर उठकर यज्ञ के परमार्थ का हिमायती है, आर्यसमाजी है।

चौधरी चरणसिंह ने ग्राम उत्थान का अलख जगाया था। देश की समृद्धि के लिये गाँव के खेत खलिहान उनके लिये प्रगति रथ था परन्तु देश सेवा के लिये आर्य सभाज उनके लिये राजपथ था। जो सन्यास को संसार पलायन न समझकर समस्याओं से जूझने का संकल्प बना लेता है आर्यसमाजी है।

मनुष्य को एक जन्म अपनी मां के पेट से लेना पड़ता है तथा एक जन्म धर्म के गर्भ से लेना पड़ता है जो धर्म के गर्भ से पुनः नया जन्म लेता है वह द्विज कहलाता है। इसी कारण चौधरी चरणसिंह ने कहा था कि **"आर्य समाज मेरी माँ है तथा उसके जन्मदाता मेरे गुरू हैं।"** शास्त्रों में कहा गया है कि जिसके मुख में गुरू का मंत्र होता है उसक सारे कार्य सिद्ध हो जाते हैं। चौ० साहब की किर्ति का कारण उनके गुरू का मंत्र ही था क्योंकि चरण सिंह निष्ठा के धनी थे। जो अपने गुरू के सन्देश को समझकर सोलह आने अपने आपको उनके कार्य में डुबा देता है वह महाजीवन का फल चखता है। जो गुरु के इशारे का समझकर सही दिशा में गतिमान होता है, आर्य समाजी है।

हिटलर ने अपनी पुस्तक **मेन काफ** में लिखा है कि किसी राष्ट्र को अगर बड़ा होना है ता युद्ध के बिना कभी कोई बड़ा नहीं हो सकता और जो राष्ट्र बहुत दिन तक बिना युद्ध के रह जाते हैं उनकी रीढ़ टूट जाती है। अगर कोई युद्ध भी न हो रहा हो तो भी देश में जान बनाये रखने के लिये युद्ध की अफवाह बनाए

रखना चाहिए कि अब युद्ध हो रहा है अब युद्ध हो रहा है। उत्तेजना में लोगों का खून तेजी से दौड़ता है, आत्मा जोर से धड़कती है लोग प्राणवान होते हैं। चौधरी चरणसिंह युद्ध के तो समर्थक नहीं थे परन्तु उन्हें भाग्यवादी बनकर परास्त होते रहना भी स्वीकार्य नहीं था। भारत में प्रथम श्रेणी का नागरिक संसार विमुख होकर अपनी मुक्ति के लिये जंगल को भागता रहा तथा मायावाद के सिद्धान्त ने जनमानस को संसार की समस्याओं के प्रति उदासीन बना दिया और इस उदासीनता का परिणाम इस देश को बहुत लम्बे समय तक भुगतना पड़ा। भारत पराधीन रहा। भारत आपस में टुकड़ों में बटा रहा तथा जातिवादी नीति ने भारत के हितों को गंभीर हानि पहुँचाई। महर्षि दयानन्द ओम के जाप से आन्तरिक सबलता पैदा करना चाहते थे। वे वर्ण व्यवस्था के घातक परिणामों से अवगत थे अत: उन्होंने उस विषय पर स्पष्ट विचार व्यक्त किये तथा सुधारवादी आन्दोलन चलाया। जो आन्तरिक सबलता का समर्थक है आर्य समाजी है।

मानव शरीर में इन्द्रियों के नौ द्वार है जिनसे हमारा बाहर के जगत से सम्बन्ध जुड़ता है। दो आँख, दो कान, दो नाक के छेद, एक मुंह और मल मूत्र विसर्जन के द्वार। विधाता ने इन सभी इन्द्रियों के दरवाजे बाहर की ओर खोल दिये है भीतर की ओर खुलने वाला कोई भी दरवाज़ा नहीं है यही विधाता की लीला है। आत्मा भीतर है इन्द्रियों की घुड़दौड़ बाहर की ओर है इसी कारण आत्मा विस्मृत पड़ी रहती है। तम, रज व सत् प्रकृति के पाश में बंधा जीव सुख की आशा करता है और बदले में दुख पाता है। पदार्थ बाहर है आत्मा भीतर है इसी कारण दोनों का मेल नहीं होता है। धनी के घर में हीरा-मोती सोने के अम्बार लग जाते हैं परन्तु भीतर सब कुछ उजड़ा उजड़ा रहता है। भीतर की प्यास कुछ इस प्रकार की है कि पदार्थ से नहीं मिटती है जो भी आदमी की तिजोरी में बन्द है वह उसे स्थायी रूप से तृप्त नहीं करता है इसी कारण ज्ञानियों ने सुझाया था कि भीतर आत्मा का अभाव परमात्मा की निकटता के अलावा और किसी चीज से नहीं मिटता है। निर्धन खिन्न रहता है धनी उदास रहता है। एकमात्र ध्यानी उपासक ही बोल उठता है कि परमात्मा की अनुकम्पा अपार है। जिसकी निकटता से जन्मों-जन्मों के अज्ञान के बन्धन कट जाते हैं, सत्य दृष्टि उपलब्ध हो जाती है, सारे सन्देह समाप्त हो जाते हैं तथा जीव जो पाशबद्ध था पाशमुक्त हो जाता है। मन में गत जन्मों से उठा अशान्ति का तूफान शान्त हो जाता है। इस प्रकार युग व्याधि का उपचार केवल

ध्यान उपासना है और जो जीवन के इस तत्व को समझकर अपना उद्धार करके दूसरों को भी उसी मार्ग का तीर्थयात्री बनाता है, आर्य समाजी है।

प्रकृति में हर छोटी वस्तु को अगर देखा जाये ता पता चलेगा कि प्रकृति में कोई छोटा नहीं रहना चाहता। बीज बड़ा पेड़ बनना चाहता है। नदी सागर होना चाहती है। छोटे पद वाला बड़ा पद पाना चाहता है छोटा नेता बड़ा नेता होना चाहता है। बच्चा शीघ्र जवान होना चाहता है। छोटे मकान वाला बड़ा मकान, छोटी कार वाला बड़ी कार लेना चाहता है। आदमी की महत्वकांक्षा की कोई सीमा नहीं है परन्तु महत्वंकाक्षा तो सिकन्दर भी पूरा नहीं कर पाता है तथा मरते दम अपनी असफलता की उद्घोषणा करके जाता है कि वह संसार से खाली हाथ जा रहा है। दुनियां उसको आज भी भूलवश सिकन्दर महान् कहती है। असफल आदमी कभी भी महान नहीं हो सकता। सिकन्दर स्वयं अपने जीवन की असफलता स्वीकार करता है उसे सिकन्दर महान नहीं कहना चाहिये। महान तो वे लोग होते हैं जो जीवन में धन्यता को उपलब्ध होते हैं तथा वे लोग दूसरों को भी निमन्त्रण देते हैं कि जिस चेतना की ऊँचाई पर वे खड़े हैं वह पाने योग्य सब पा लिया जाता है और जानने योग्य सब जान लिया जाता है। महान लोगों का हर शब्द उनके जीवन की गवाही देता है। असफल लोगों का हर शब्द उनके भीतर का रुदन प्रकट करता है। जब भीतर के मन मन्दिर में शांति व आनन्द की घंटिया बजती हैं तब आदमी सफल होता हे। यह सफल आदमी दूसरों को सुफल अर्थात मीठे फल देता है। जो सफल होकर सुफल बनता है आर्य समाजी है।

मूढ वही है जो जन्म भर जीने का प्रबन्ध करता रहता है और जीवन को कल पर टालता रहता है। वह बड़ा मकान तो बना लेता है परन्तु खुद खण्डहर हो जाता है। मूढ़ सर से पैर तक माया में डूबा होता है। वह दिन में व्यापार वृति छीनाझपटी छल कपट से धन कमाता है, रात को सपनों में योजना बनाता है। संसार ने जब धन की बात की तो धर्म ने परमधन की बात उठाई, संसार ने जब पद की कामना की तो धर्म ने परमपद की बात उठाई, संसार ने जब उपहार की बात रखी तो धर्म ने उपासना की बात उठाई, संसार ने जब वस्तु संग्रह को सही माना ता धर्म ने विवेक की बात उठाई, संसार ने जब युक्ति को सही माना ता धर्म ने यज्ञ की बात उठाई, संसार ने जब प्रगति के गीत गाये तो धर्म ने प्राणायाम की बात उठाई। जीवन की एक साधारण धारा बह रही है जहाँ हर आदमी सफलता व पहचान की सीढ़ी पर

चढ़कर अधिक से अधिक संग्रह करना चाहता है इसी धारा को जब उल्टी बहाकर भीतर सद्‌गुणों की ओर मोड़ दिया जाता है तो यही धारा राधा बन जाती है। श्री कृष्णा जी की राधा एक यौगिक प्रक्रिया थी जिसमें बाहर भटकी दृष्टि को भीतर की ओर मोड़कर अर्न्तदृष्टि जगाई जाती थी। जो आम बहती धारा को मोड़ता है वह आर्य समाजी है।

एक विचारक ने एक बार कहा था कि हम सब एक ही सूर्य की भटकी किरणों के समान है तथा हमें अपने कारण अपने असली घर की खोज करनी है। महर्षि दयानन्द को ज्ञात था कि प्रचार के बल पर कुछ भटके लोग स्वधर्म को छोड़कर चले गये थे तथा हिन्दू धर्म वाले उन्हें पुनः अपने धर्म में प्रवेश देने को तैयार नहीं थे। चौधरी चरणसिंह के अनुसार सन्तों तथा सुधारकों की लम्बी पक्ति में महर्षि दयानन्द पहले व्यक्ति थे जिन्होंने वैदिक धर्म के दरवाजे अहिन्दू लोगों के लिये खोल दिये थे। जो भूतकाल की भूलों को मिटाकर वैदिक धर्म के प्रचार व प्रसार का समर्थक है, आर्य समाजी है।

एक पक्षी को आकाश में उड़ने के लिये दो पँखों के साथ-साथ एक पूंछ का होना भी आवश्यक है। बिना पूंछ के भी पक्षी सन्तुलन नहीं साध सकता और उड़ान सम्भव नहीं हो पाती। सच्चे वैदिक धर्म का अनुयायी बनने के लिये सद्ज्ञान व सत्य के दो पंख तथा नैतिकता की पूंछ की आवश्यकता है। जो इन तीनों के बल धर्म के आकाश में उड़ान भरता है, आर्य समाजी है।

जब एक बार राष्ट्रपति राधाकृष्णन विदेशी भूमि पर भारतीय संस्कृति की महिमा की चर्चा कर रहे थे तभी एक दार्शनिक ने खड़े होकर पूछा था कि जब यह संस्कृति इतनी महान है तो यह देश इतने लम्बे समय तक गुलाम क्यों रहा? तथा आज भी भाषा धर्म व प्रान्तों के नाम पर टुकड़ों में क्यों टूटा है? राष्ट्रपति राधाकृष्णन को उत्तर खोजने में कठिनाई का सामना करना पड़ा था। उन्हें शायद महर्षि दयानन्द के समाधान का स्मरण नहीं आया था जिन्होंने सारे देश को जोड़ने के लिये हिन्दी को राष्ट्रभाषा की मान्यता देने पर बल दिया था। स्वामी जी ने स्पष्ट सन्देश दिया था कि जिस समय भारत में धर्म, भाषा व लक्ष्य की एकता स्थापित हो जायेगी उसी समय भारत महान बन सकेगा। जो इस लक्ष्य की ओर अग्रसर है आर्यसमाजी है।

संत की परीक्षा संसार में है। जो संसार क कोलाहल के बीच शान्त तथा संसार के प्रलोभन के प्रति अकम्प बना रहने की क्षमता जुटा लेता है वही सच्चा संत है। जंगल में जहाँ कोई भीतर के काम, क्रोध को भटकाने वाला नहीं मिलता वहाँ पर मन शांति व सद्‌गुणों का धोखा देने में समर्थ हो सकता है संसार की कीचड़ में जो कमल बनकर ओरों को भी कीचड़ से उद्धार की प्रेरणा देता है वही सच्चा धार्मिक है। जो काजल की कोठरी से उज्जवल कपड़े लिये गुजर जाता है उसके नीचे गिरने का फिर कोई उपाय नहीं रहता है। हर संत का भटका भूत तथा हर पापी का उज्जवल भविष्य होता है। मानव के सुधार की क्षमता अनन्त है इसी कारण सदगुरू हताश व निराश नहीं होते हैं। सारी दुनिया में भटककर एक दिन हर मानव को धर्म की शरण में आना होता है क्योंकि धर्म ही मानव की मूल बीमारी आत्मअज्ञान का उपचार है। जो वैदिक धर्म को युगव्याधि का उपचार मानता है, आर्य समाजी है।

अमर शहीद भगतसिंह ने एक बार कहा था कि यदि स्वप्न दृष्टा चले भी जाये तो भी उनके सपने नहीं जाते तथा भावी पीढ़ी का यह दायित्व है कि उनके सपनों को साकार करे। चौधरी चरणसिंह ने महर्षि दयानन्द के उपदेशों की चर्चा करते हुये एक बार कुछ इस प्रकार कहा था कि हमें ठन्डे दिमाग से सोचना चाहिये कि हम उनके सपनों को किस सीमा तक मूर्तरूप देने में सफल हुये हैं। क्या हम जीवन से जातिवादी व्यवस्था के कलंक को दूर करने में समर्थ हुये हैं? क्या हम नारी वर्ग को अपने समान अधिकार देने मे समर्थ हुये हैं? क्या हम सामाजिक अन्याय के विरूद्ध संघर्ष करते हैं? क्या हम जाति व धर्म पर आधारित शिक्षा के स्थान पर सार्वभौम शिक्षा के मानव का जन्मसिद्ध अधिकार बनाया है? जो चौधरी साहब द्वारा उठाये प्रश्नों का समाधान खोजने को अपना पुनीत कर्म मानता है तथा उनके हर सपने को साकार करना चाहता है आर्य समाजी है।

जहाँ असली सोना है वहाँ नकली सोना है, जहाँ असली घी है वहाँ नकली घी है, जहाँ असली फूल है वहाँ प्लास्टिक के नकली फूल भी है, जहाँ असली सिक्के हैं वहाँ नकली सिक्के भी हैं, जहाँ असली आसूं हैं वहाँ नकली आंसू भी हैं, उसी प्रकार जहाँ असली धर्म है वहाँ नकली धर्म भी पैदा हो जाते हैं। नकली बिना असली के हो भी नहीं सकता। महर्षि दयानन्द के अनुसार मूर्ति पूजा, मूर्ति

शोभायात्रा, दूर दूरस्थ तीर्थों की यात्रा सत्यनारायण की कथा जिसमें न सत्य है और न ही नारायण की महक है, स्वयं भू धर्म गुरूओं का तंत्रजाल कब्र पूजा, बलि, आदि मिथ्या धर्म के रूप हैं जिनसे हटकर स्व की सोई सम्भावना को जगाना ही असली धर्म है। जो सत् असत् का पारखी है, आर्य समाजी है।

इस दुनियाँ में दो तरह के आदमी हैं एक वेदमुख दूसरे मनमुख। जो वेदमुख हैं वे परमेश्वर की स्तुति, प्रार्थना व उपासना को अपनी जीवन शैली बनाते हैं तथा उनकी मान्यता है कि दुराचारी व विखण्डित होकर लम्बे समय तक जीने से ध्यानी बनकर थोड़े दिनों जीना भी सौभाग्य है। ध्यानी व शीलवान लोगों का बहुमत समाज में सुखों की वर्षा करता है। जो लोग मनमुख होते हैं वे गलघोटू प्रतियोगिता, धन का अनावश्यक संग्रह, चोरी, हत्या, अपराध, तरस्करी व नाना प्रकार क उपद्रवों में लिप्त पाये जाते हैं। मन उनको स्वर्ग का प्रलोभन देकर घनघोर नर्क में डाल देता है। मन के आश्वासन, मन की अस्थिरता व मन में बसा अहंकार व अविद्या ही दुख के मूल हैं और मन इन्हीं के सहारे जीवन भर जीव को छलता रहता है। जब आत्मा को यह भ्रम हो जाता है कि वह केवल मन व शरीर है तो वह बन्धन में बँधकर अपने कर्म फल को भोगती रहती है। जिस प्रकार तपती दोपहरी मे पेड़ की शीतल छाया सुख देती है, सर्दी में अग्नि के पास बैठकर शीत से छुटकारा होता है, जिस प्रकार पारस के स्पर्श से लोहा सोना बन जाता है, ठीक उसी प्रकार परमात्मा की निकटता से जीवात्मा के गुण, कर्म व स्वभाव पवित्र हो जाते हैं। जिस पेड़ की जड़े पाताल तक गहरी चली जाती हैं उसे आँधी का सामना करने में हिचक नहीं होती। यज्ञ पृथ्वी का आकाश को दान है तथा उपासना जीवन का परमात्मा के प्रति अनुग्रह व धन्यवाद हैं। जो परमात्मा के प्रति अनुग्रह से भरा नहीं होता वह कपटी है। जो अनुग्रह, आशा व अमृत की चाह से भरा है, आर्य समाजी है।

तैतरीय उपनिषद् में कहा गया है कि "यदि कभी आपको अपने कर्म या आचरण के सम्बन्ध में सन्देह उत्पन्न हो तो जो विचारशील, तपस्वी, कर्त्तव्यपरायण, शान्त स्वभाव, धर्मात्मा ब्राह्म्ण हो, उसकी सेवा में उपस्थित होकर अपना समाधान करिये और उनके उपदेश और आचरण का अनुसरण करिये।" भारत भूमि के शास्त्र सद्गुरू की महिमा के गीत गाते हैं। व्यर्थ को हटाकर जो सार की ओर इशारा करता है, वह पूजनीय है। उसी से तत्व ज्ञान प्राप्त होता है। निम्न वृत्ति को श्रेष्ठ बनाने की विधियां जानना जरूरी है। सही समय, सही विधि व सही गुरू जीवन

का कायाकल्प कर देते हैं। श्रेष्ठ के पास सद्ज्ञान सीखने जाना ही पड़ता है। जहाँ भी सद्ज्ञानी श्रेष्ठ सदगुरू मिल जाये वहाँ सौ काम छोड़कर उसके सत्संग में बैठना सौभाग्य है। जो इस प्रकार के सत्संग का खोजी है आर्य समाजी है।

जब तक कन्या गुड़ियों से खेलना नहीं छोड़ती, समझदार नहीं कहलाती। जब तक छात्र शब्दों को चित्रों की बिना सहायता पढ़ना नहीं सीखता, उसे ऊँची कक्षा में प्रवेश नहीं मिलता। जब तक मानव मूर्ति के मोह से मुक्त नहीं होता, प्रौढ़ नहीं बनता। महाभारत में उल्लेख है कि "जिसमें वृद्ध आदमी मौजूद नहीं है वह सभा नहीं है, जो धर्म को नहीं बतलाते वे वृद्ध नहीं हैं। जिसमें सत्य नहीं वह धर्म नहीं है और जिसमें छल मिला हुआ है वह सत्य नहीं है।" जिस मानव को वास्तव में बचपन में गोद, जवानी मे शोध तथा बुढ़ापे में बोध मिल जाता है वह धन्यभागी है। वृद्ध वही है जिसे बोध मिल गया। शुद्ध जल, शुद्ध घी शुद्ध शहद, शुद्ध दूध तभी तक शुद्ध रहते हैं जब तक उनमे विजातीय तत्व नहीं मिलाया जाता। शुद्ध दूध में शुद्ध पानी मिलने पर भी दूध अशुद्ध हो जाता है। इसी प्रकार जब सत्य में समय की लोभ की भाषा मिला दी जाती है तो वह विकृत हो जाता है। शुद्धता की रक्षा ही सद्धर्म है और जो शुद्धता का पक्षधर है, आर्य समाजी है।

मानव की मूढ़ता आकाश जितनी ही असीम है। वह अपने हाथों अपना आत्मघात करने की तैयारी कर रहा है। उसने वायुमण्डल को प्रदूषण से भर दिया है। बाजारों को शोरगुल से अस्त-व्यस्त कर दिया है। मन को अन्धमान्यताओं व अन्धविश्वासों से भरा लिया है। घर के कोने-कोने को व्यर्थ की वस्तुओं के सग्रह से भर लिया है। वायुमण्डल की पर्तों को तोड़कर भविष्य के लिये खतरे की घंटी बजा दी है तथा जनसंख्या में अतिशय वृद्धि से भोजन की भीषण समस्या का भय पैदा कर दिया है, अणु युद्ध के खतरे से पूरी मानव जाति के सामूहिक विनाश की सम्भावना पैदा कर दी है। इसमें कोई सन्देह नहीं है कि मानव ने अपने आपको विकास के एक उच्च सोपान पर लाकर खड़ा कर लिया है जहाँ से लौटना सम्भव नहीं है। एक बार मानव के रूप में जन्म मिलने पर सौभाग्य के द्वार खुल सकते हैं। मानव पीछे की ओर गिरकर अपनी दीनता ही प्रकट करता है। वह पत्थर को सुधार सकता है पत्थर उसे नहीं सुधार सकता। अतः मानव का दायित्व है कि वह अगला कदम उठाये तथा यह अगला कदम मनुष्यता से दिव्यता की ओर है। मन यदि काबू में रहे तो अद्भुत सेवक व सच्चा सहयोगी है यदि मालिक बन जाये

तो पागल पथ प्रदर्शक बनकर जीव को अन्धकार की पर्तों में उतार देता है। जो मन को उसकी सही जगह सेवक बनाकर बिठा देता है तथा मन की मनमानी नहीं चलने देता, आर्य समाजी है।

वर्तमान युग में विज्ञान के चमत्कार भी अन्धविश्वासों व अन्धी मान्यताओं को जड़ मूल विनाश करने में असमर्थ रहे हैं। आज मानव भौतिक रूप से दानव जैसा विशालकाय बनता चला जा रहा है परन्तु आध्यात्मिक रूप मे बौना हो गया है। इस जीवन में दो तरह की घटनाएं हैं प्रथम वे जो क्षेत्र को घेरती है। आदमी सामान खरीदता है घर में बाजार से लाकर अलमारी फर्नीचर इकट्ठा करता है, मिलों कारखानों में उत्पादन चलता है तथा गोदामों मे भर दिया जाता है। यह सब सामान आदमी के इशारे पर इधर से उधर होता है। आदमी इस सामान से बंधा होता है परन्तु सामान आदमी की परवाह नहीं करता। फिर दूसरी घटनाएं समय में घटती हैं—दो आदमी मित्र बन जाते हैं यह मित्रता स्थान नहीं घेरती समय में घटती है। एक आदमी को अपने गुरू अपने शास्त्रों में श्रद्धा हो जाती है यह स्थान नहीं घेरती। मानव के भीतर जितने भी गुण पैदा होते हैं वे स्थान नहीं घेरते। इनसे ही मानव तृप्त होता है। क्षेत्र में जो घटनाएं घटती हैं, वे प्रचुर मात्रा पर मिलने से भी मानव तृप्त नहीं होता। धर्म सदा से ही यह कहता रहा है कि व्यर्थ को छोड़ों तथा सार्थक को अपने भीतर खिलने दो। इस सार्थक की सुगन्ध ही जीवन में रस पैदा करती है। व्यर्थ के अम्बार भी देर सवेर ऊब पैदा करते हैं। आज पश्चिमी देशों में धन के अम्बार लगे होने पर भी जो दुख की काली घटा दिखाई दे रही है उसका एकमात्र कारण यही है कि उन्होंने जीवन के परम नियम की अनदेखी की है जो यह जीवनमंत्र देता है कि आदमी सामान से नहीं सद्‌गुणों से ही तृप्त होता है। जहाँ भी भीतर सद्‌गुणों की गंगा बहती है वही धन्यता की वर्षा होती है। जो समय के महत्त्व को समझकर उसका सही उपयोग करता है, आर्य समाजी है।

इस धरा पर एक अनूठा यज्ञ हुआ जिसमें सारी अन्धमान्यताओं अन्धश्रद्धाओं, अन्धविश्वासों, निन्दित भेद विभजनों, कुसंस्कारों, स्वकल्पित शरीर धारी मन्दिर में मूर्तिबनकर बैठे भगवानों, धर्म के नाम पर चल रही मदारीगिरी की आहुति दी गई। अग्नि में अशुद्ध जल जाता है शुद्ध और निखर जाता है। जो इस अनूठे यज्ञ के भागीदार बने तथा बन रहे हैं वे आर्य समाजी हैं।

मानव के रंग रूप बुद्धि की क्षमता उनकी रुचियाँ निसन्देह भिन्न हैं। परमात्मा से बड़ा सृजनहार नहीं खोजा जा सकता जो दो मनुष्यों को अलग-अलग रूप व

शक्ल देकर भेजता है। अनादि काल से लेकर आज तक इस पृथ्वी पर असंख्य मानव जन्मे हैं परन्तु दो आदमियों के चेहरे एक जैसे नहीं पाये गये हैं। यह उसकी लीला का चमत्कार है। मानव रंग रूप में कितने ही भिन्न हो परन्तु उन सबका लक्ष्य एक ही है और वह है पूर्णता का आलिंगन। केवल परमात्मा ही पूर्ण है। अतः प्रत्येक मानव को वेदों की प्रार्थना के स्वर सुनने चाहिये जिसमें कहा गया था कि "उठो जागो और जब तक लक्ष्य प्राप्त न हो जाये मत रुको।" जो इस लक्ष्य की ओर बढ़ता है, वही आर्य समाजी है।

जो स्व के पास है, स्वस्थ है जो परमात्मा के निकट है, परम आनन्दित है जो पदार्थ के निकट है, घोर संकट में है। यह जीवन का यथार्थ है जो हर दिन जीवन के राजपथ पर देखने को मिलता है। जिसके नेत्र जीवन के इस यथार्थ को पहचानते हैं वह आर्य समाजी है।

नाव पानी में रहे तो कोई हानि नहीं यदि पानी नाव में घुस जाये तो विपत्ति की सूचना मिलने लगती है। यदि मन आत्मा के बन्धन में है तो सौभाग्य है यदि आत्मा मन के बन्धन में हो जाती है तो दुर्भाग्य के दिन शुरू होते हैं। जिस तरह तट पर बधीं नाव चलाने पर पानी में केवल थरथराती है एक इंच भी आगे नहीं बढ़ती उसी तरह मन के खूटें से बंधी आत्मा एक दिन पाती है कि तेली के बैल की तरह चलना तो बहुत हुआ परन्तु पहुँचना कहीं भी नहीं हुआ। जब इन्द्रियों के घोड़ी की लगाम आत्मा रूपी कृष्ण, मन रुपी अर्जुन को पीछे हटाकर स्वयं संभालते है तभी जीवन की गीता सफल होती है। आत्मा ही इन्द्रियों की सारथी होनी चाहिये अन्यथा जीवन में दुख ही दुख है। जो सोई आत्मा को उसके दायित्व के प्रति जगाता है, आर्य समाजी है।

अमरीकन सरकार ने अपने देश में रहने वाले एक अणुविद् डाक्टर ओपेनहाइमर पर मुकदमा चलाया कि उसे अणु के बारे में जो नये रहस्य पता हैं उन्हें जानने का सरकार को अधिकार है क्योंकि वह अमरीका का निवासी है और उसे रहस्यों को छिपाने का कोई हक नहीं है। आपेनहाइमर पर विशेष अदालत में मुकदमा चला तथा सरकार की ओर से यही तर्क दिया गया कि सरकार को अपने नागरिक से हर रहस्य जानने का अधिकार है इस पर ओपेन हाइमर ने कहा कि "देश से बड़ी निर्णायक मेरी अन्तर आत्मा है। कुछ बाते मैं जानता हूँ जो किसी राजनीतिक सरकार को बनाने को राजी नहीं हूँ क्योंकि हम देख चुके हैं कि हिरोशिमा में क्या हुआ? हमारी ही जानकारी लाखों लोगों की हत्या का कारण बनी।" वास्तव

में अन्तरआत्मा की आवाज ही सही व गलत का निर्णय करती है। जो आदमी दबाव में आकर अपनी आत्मा को दबा देता है आत्मग्लानि से भर जाता है। जो अपनी आत्मा की आवाज को सर्वोपरि मूल्य देता है, आर्य समाजी है।

गृहस्थ के दायित्व से बचकर जंगल को भाग जाना समझदारी नहीं कायरता है। संस्कारों की हीनता की ग्रन्थि से पीड़ित होने के कारण ही कुछ लोग अपने दायित्वों से मुँह मोड़ लेते हैं। वैदिक परम्परा के ऋषि कण्डव, वशिष्ट व पाराशर सभी गृहस्थ थे और गृहस्थ में रहते हुये ही परमज्ञानी बने। भागने में नहीं जागने से जीवन की समस्या का समाधान होता है। जो जागरण को अपने जीवन का मंत्र बनाता है आर्य समाजी है।

जिस प्रकार नदी के किनारे उगने से ही पेड़ अपने आप बड़ा होने लगता है। आग के समीप होने से घड़ा पकने लगता है। भट्टी में निकलने से सोना निखरने लगता है। गुरू के निकट होते ही शिष्य बदलने लगता है। माँ के निकट होते ही बच्चा शान्त होने लगता है, उसी प्रकार परमात्मा के निकट होने से आदमी निर्दोष होने लगता है। जो हर दिन परमात्मा से अपनी निकटता बढ़ाता है आर्य समाजी है।

जो ठोकर खाकर नीचे गिर सकता है वह संभलकर ऊपर भी उठ सकता है। जो पर्वत से नीचे खिसक सकता है वह श्रम से पर्वत शिखर पर भी चढ़ सकता है। जो भटक सकता है वह सही राह पर भी आ सकता है जो सो सकता है वह जाग सकता है। जो बच्चा रूठ कर अपना घर छोड़ सकता है वह फिर सोचकर अपने घर वापिस आ सकता है उसी प्रकार जो लोग भूलवश हिन्दूधर्म छोड़कर अन्य धर्म ग्रहण कर लिये हैं उन्हें पुनः सही धर्म में प्रवेश कराना सबका दायित्व है जो इस दायित्व का निर्वाह करता है आर्य समाजी है।

धर्मयुद्ध, योग व यज्ञ इन तीन शब्दों में धर्म का सार समा जाता है। समाज में फैले पाखण्ड, अनाचार व अन्धविश्वास के विरूद्ध सतत संघर्ष धर्म युद्ध है जब तक व्यर्थ नहीं हटता सार्थक का पता नहीं चलता। आंख में पड़ा तिनका हिमालय को ओझल कर देता है, आकाश पर छाई बदली सूरज को ढक लेती है, इसी प्रकार अन्धविश्वास का कोहरा सत्य के सूर्य को ढके रहता है। धर्म युद्ध खरपतवार उखाड़ने जैसा है। व्यर्थ को हटाना प्राथमिक चरण है खेत से कंकड पत्थर बिना चुगे बीज नहीं बोया जाता। योग बीज बोने जैसा है। जहाँ जल व खाद डालकर बीज बोये जाते हैं। योग के यम नियम खाद पानी देने जैसे हैं। जब योग से आत्मा

का फूल खिलता है तो उसकी सुगन्ध सर्वत्र फैलती है तथा लोकमंगल सधता है। यज्ञ सुगन्ध को सर्वमंगल के भाव से लुटाता है। जहाँ धर्मयुद्ध, योग व यज्ञ की त्रिवेणी मिलती है वहाँ मंगलवर्षा है। जो इन तीनों के सहयोग से स्व व सर्व का कल्याण करता है, आर्य समाजी है।

मानव के फेफड़ों में छः हजार छिद्र हैं। उनमें से इस युग का आदमी केवल डेढ़ हजार छिद्रों से श्वास लेता है शेष छिद्रों में कार्बन भरी रहती है जिसके कारण वह बुझा-बुझा जीता है। प्राणायाम उन सभी छिद्रों से प्राणवायु खींचकर मानव को शक्ति प्रदान करता है। छोटे-छोटे टायरों में हवा भरी रहने के कारण ही वाहन भारी बोझा ढोने के समर्थ बनता है यह शक्ति हवा की दी हुई शक्ति है इसी प्रकार भीतर भी शक्ति बढ़ती है। जिसके भीतर जितनी अधिक वायु होती है वह उतना ही अच्छा वक्ता होता है। प्राणायाम से शरीर ही शुद्ध नहीं होता, नेतृत्व की क्षमता भी आती है। जो प्राणायाम का महत्त्व स्वीकार करता है, आर्य समाजी है।

शक्ति सूक्ष्म में बसती है। मस्तिष्क में चलते विचार हृदय में बसा प्रेम शरीर में बहते प्राण, पत्थर में छिपे अणु आंखों से दिखाई नहीं देते परन्तु उनमें बहुत बड़ी शक्ति है। इसी प्रकार उनसे भी सूक्ष्म आत्मा अति बलिशाली है। बाल की नोक से सौवे भाग के पुनः सौ भाग किये जाने पर जो एक भाग होता है वही जीवात्मा का स्वरूप समझना चाहिये, और यह आत्मा असीम भाव वाला होने में समर्थ है। आत्मा का यह विवरण श्वेताश्वरों उपनिषद् में किया गया है। शरीर मन व इन्द्रियों से संयुक्त होकर ही यह आत्मा जीव कहलाता है। वह आत्मा अनश्वर है। एक प्रकृति दूसरा जीव तीसरा परमात्मा ये तीनों ही अनादि अनन्त हैं। प्रकृति शब्द का अर्थ यही है कि जो कृति से भी पहले विद्यमान थी। जिस प्रकार हर कुँआ सागर से पानी लेने पर भी पृथक सत्ता रखता है तथा अपने गुण कर्म के आधार पर मीठा खारा पानी रखता है उसी प्रकार जीव भी अपने कर्मों के अनुसार सुख-दुख पाता है। परमात्मा के हाथ में जीव के कर्म की डोर नहीं है। जीव कर्म करने में स्वतंत्र है। अतः आत्मा उत्तम व अधम जैसा कर्म करता है उसी के अनुसार फल भोगता है। जो ईश्वर, जीव तथा प्रकृति के अनादि अनन्त तथा प्रथम सत्ता रखने वाला मानता है, आर्य समाजी है।

एक समय था कि भारत अपने गौरव के शिखर पर था। यहाँ पर मानव को केवल अमृतपुत्र कहकर ही नहीं पुकारा गया था बल्कि विज्ञान के क्षेत्र में भी आश्चर्यजनक प्रगति की थी। एक समय था जब विज्ञान के सम्बन्ध में भारत से

विकसित देश पूरी पृथ्वी पर नहीं था। आज जो देश विज्ञान के बल पर अन्य ग्रहों पर पहुँच रहे हैं वे सब बचकाने असभ्य व अविकसित थे। उनके पास विज्ञान की कोई समझ नहीं थी। भारत ने गणित व विज्ञान के गहन रहस्यों की खोज की थी। भारत में सश्रुत नाम के व्यक्ति ने सर्जरी की खोज की थी उसने आज की सर्जरी के बारीक बातों के स्पष्ट सूत्र दिये हैं। उसने प्लास्टिक सर्जरी के बाबत भी लिखा है। यदि हम अपनी अमूल्य सम्पदा को सुरक्षित रखते तो आज की हर खोज बचकानी मालूम पड़ती। वायुयान पहले ही खोज लिया गया था। हमारे ग्रन्थों में वैज्ञानिक शोधों का उल्लेख है। बहुत सा विज्ञान महाभारत काल में नष्ट हुआ। भारत का मन बार-बार पीछे मुड़कर इसी कारण देखता है क्योंकि भीतर कोई स्वर बजता है जो संकेत देता है कि हमने सभ्यता का वो सर्वोच्च शिखर छू लिया था जिसके सामने सारा संसार नतमस्तक होता था। इसी कारण इस देश में परम्परा का मूल्य है। जो भारत के अतीत के गौरव का पुजारी है आर्य समाजी है।

जर्मन विचारक नीत्से ने लिखा है कि शक्ति पाने की आकांक्षा ही मनुष्य की आत्मा है। पृथ्वी पर जो मानव पृथ्वी के नमक हैं वे सभी शक्ति के प्यासे हैं। सैनिक, मनुष्य के जीवन का सर्वश्रेष्ठ फूल है। सैनिक को देखकर मेरी आत्मा विस्तीर्ण हो जाती है, सन्यासी को देखकर सिकुड जाती है। मैंने इस जगत में जो सर्वश्रेष्ठ संगीत सुना है यह वहीं है जब सैनिक अपनी नंगी तलवारों को लेकर धूप में अपने पैरों की लय बद्ध आवाज करते हुये गुजरते हैं। उनके पैरों की लयबद्ध आवाज ही पृथ्वी का श्रेष्ठतम संगीत है क्योंकि उसी के साथ जगता है पौरुष उसके साथ ही जगती है शक्ति की आकांक्षा। इन शब्दों से यही प्रकट होता है कि नीत्से के अनुसार "सैनिक, जीवन के पुरूषार्थ का प्रतीक है तथा सन्यासी, जीवन से पलायन का सन्देशवाहक है।" महर्षि दयानन्द सैनिक को शिखर पर नहीं रखते व सर्वगुण सम्पन्न सद्गुरु तथा धर्मप्राण आर्यों को सबसे ऊपर रखते हैं। सर्वोत्तम शक्ति बाजू से नहीं अन्तःकरण से आती है। आत्मशक्ति के सामने हर शक्ति फीकी है। आत्मा का जादू ही शिखर पर चढ़कर बोलता है। जो आत्मशक्ति को सर्वोपरि मूल्य देता है, आर्य समाजी है।

जो मानव को ग्रहस्थ, घर परिवार छोड़कर मिलता हो वह धर्म नहीं है जो बीच बाजार के कोलाहल में, मृत्यु की रात्रि में, गंभीर बीमारी व अन्य विपत्ति में, युद्ध भूमि में अपने सामाजिक उत्तरदायित्वों के निर्वाह में साधे रखे वह धर्म है।

परमात्मा सर्वव्यापी है तो धर्म भी खण्डों में नही बांटा जा सकता। धर्म मानव के उद्धार के लिये है अतः वह मानव को अपने कर्त्तव्य से भागने का सन्देश नहीं दे सकता। धर्म भागना नहीं जागना है। जो जागरण को अपनी जीवन शैली बनाता है, आर्य समाजी है।

जीव व ईश्वर में कुछ बिन्दुओं पर समानता होते हुये भी भारी भिन्नता है। स्वभाव से दोनों ही अविनाशी तथा चेतन स्वरूप है परन्तु प्रभाव के कारण जीव अल्पज्ञ है जबकि ईश्वर अपने स्वरूप में सर्वज्ञ है। ईश्वर सर्वव्यापी है जीव एक देशीय है। ईश्वर कर्म फल नहीं भोगता, जीव भोगता है। ईश्वर स्वतंत्र है, जीव कर्म करने के लिये स्वतंत्र है परन्तु परिणाम भुगतने के लिये परतंत्र है। इस प्रकार जो जीव की सत्ता, परमात्मा से पृथक् मानता है, आर्य समाजी है।

महर्षि दयानन्द का महत्व इस कारण दिन पर दिन बढ़ता गया क्योंकि उनके या उनके दर्शन के पास जो भी गया उसने अल्पकाल में ही यह पहचाना कि उसका कद बड़ा हो रहा है। उसका धर्म बड़ा हो रहा है उसका देश उसकी संस्कृति बड़ी हो रही है। शुद्र को ज्ञात हुआ कि उसे ब्राह्मण बनने का जन्मसिद्ध अधिकार है। नारी जाति को ज्ञात हुआ कि वह समान सम्मान व शिक्षा की अधिकारी है। आर्यों को पता चला कि उनका वैदिक धर्म सर्वश्रेष्ठ है। धर्म का ध्वज ऊपर उठता है तो मानव ऊपर उठता है, धर्मध्वज नीचे गिरता है तो मानव नीचे गिरता है। आदमी के विचारों से ही उसकी ऊर्जा उठती गिरती है। हिन्दी प्रेमियों को पता चला कि उनकी भाषा राष्ट्रभाषा घोषित होने की अधिकारिणी है। मार्ग वही है जो मंजिल तक पहुँचाये। सद्गुरु वही है जो भीतर विराटता का बोध दे। जो अपना आकार हर दिन बढ़ाने के लिये संघर्षरत है, आर्य समाजी है।

पुराणों में अवतारों की एक लम्बी सूची है जो सतयुग से लेकर कलियुग तक फैली है। कुछ विद्वानों का मत है कि जो आत्माएं इस पृथ्वी पर वासना अथवा पूर्व जन्म के कर्मों के कारण नहीं वरन् करुणा व दूसरों के उद्धार के कारण जन्म लेती है उन्हें ईश्वर पुत्र, ईश्वरावकार, तीर्थंकर, पैगम्बर इत्यादि नामों से पुकारा जाता है। पुराणों मे ऐसी आत्माओं को ईश्वरावतार कहा गया है। अवतार केवल विष्णु का ही होता है। सतयुग के कच्छप से कलियुग के कल्कि अवतार तक का उल्लेख पुराणों में मिलता है। महर्षि दयानन्द ने इस अवतारवाद की धारणा का खण्डन किया तथा जनमानस को समझाया कि परमात्मा निराकार ही नहीं सर्वशक्तिमान भी

है उसे जन्म लेने की कोई आवश्यकता नहीं है। कोई भी देहधारी चाहे वह कितना ही विद्वान व महान हो कदापि भगवान नहीं हो सकता। इस अवतारवाद के कारण समाज में फैली अज्ञानता व शोषण का जाल, जिससे मुक्ति पाने के लिये समाज आज भी छटपटा रहा है। मनुष्य के द्वारा मनुष्य के शोषण की कहानी का जाल बहुत प्राचीन है और यह शोषण केवल अर्थ तक ही सीमित नहीं रहा धर्म को भी अपनी लपेट में ले लिया। जिस प्रकार गंगा में बहुत से गन्दे नाले मिल गये हैं उसी प्रकार धर्म की गंगा में भी बहुत कुछ विजातीय मिला दिया गया है। मानव का शोषण लोभ व भय के द्वारा ही किया जा सकता है और इन कथाओं में दोनों की सहायता ली गई है। जो अवतारवाद के समर्थक हैं वे यह बताने में असमर्थ रहे हैं कि एक ही समय में विष्णु को दो-दो अवतार लेने की क्या आवश्यकता थी? जब ईश्वर धरती पर अवतरित था तो उन्हें भूख क्यों लगती थी? जब वे दूसरों के कल्याण के लिये आये थे तो अपनी हानि पर उन्हें दुख क्यों होता था? वास्तव में जीव की पृथक् सत्ता है तथा वह अपने कर्मों से सुख-दुख भोगता है। जो अवतारवाद के सिद्धान्त को नहीं मानता, आर्य समाजी है।

मानव जबसे निराकार से भागा हुआ है तभी से वह अभागा हुआ है। आदमी साकार की कितनी ही सजावट करे, कितनी ही सुन्दर आकृति बनाये, कितने ही घर में अम्बार लगा ले, कितना ही मोर मुकुट पहनाकर अलंकृत कर ले उससे आनन्द फलित नहीं होता क्योंकि आदमी पदार्थ से बड़ा है और अपने से निम्न से कोई तृप्त नहीं होता। निराकार कितना ही कोहरे से घिरा रहस्यमयी हो, कितना ही आकाश की तरह मुट्ठी में न समाता हो, उसी के पास होकर ही जीवन में जो भी शुभ व आनन्ददायक है, प्राप्त होता है। जहाँ रहस्य है वही जीवन की रसधार है। आकाश का रहस्य वर्षा बनकर बरसता है व परमात्मा का रहस्य आनन्द बनकर बरसता है। परमात्मा की निकटता के अतिरिक्त आनन्द पाने का ओर कोई उपाय नहीं है। पदार्थ से पाये सुख मछली को खिलाये आटे जैसे है। मछली को पल भर तो आटे का सुख रुपी स्वाद मिलता है परन्तु जब काँटा चुभ जाता है तब दुख में छटपटाती है। पदार्थ सागर के तट जैसा है, परमात्मा सागर जैसा है जिस प्रकार सागर से बाहर निकालकर तट पर फैकी मछली बिना जल के तड़पती है तथा तट पर किया हर उपाय उसको प्रसन्न नहीं कर पाता उसी प्रकार परमात्मा के सागर से दूर पदार्थ के तट पर पड़ा जीव दुख के अलावा कुछ नहीं जानता। जब नया

सामान घर में आता है तो दो तीन दिन क्षणिक सुख लगता है फिर भीतर का दुख उभरने लगता है। जीव का भीतर का घाव कुछ इस प्रकार का है कि परमात्मा के मरहम के अलावा कोई उपचार नहीं है। जो भीतर के घाव को परमात्मा की उपासना से मिटाता है, आर्य समाजी है।

बच्चा माँ के पेट में अधेंरे में गर्भ में कुछ महीनों बड़ा होकर जन्म लेने की तैयारी करता है। बीज पृथ्वी के गर्भ मे अधेंरे में फूटकर पेड़ बनने की तैयार करता है। समुद्र की सतह पर अंधेरे में सीप में मोती बन रहे हैं। खानों में अंधेरे में कोयला हीरा बन रहा है। भीतर अंधेरे में रोटी पचकर खून बनकर दौड़ रही है। ह्रदय अंधेरे में धड़क रहा है। जडें अधेंरे में रहकर पेड़ को जीवन दे रही है। इस प्रकार अन्धकार व प्रकाश दोनों मिलकर जीवन में फूल खिलाते हैं। सन्ध्या का समय अन्धकार व प्रकाश के मिलन का समय है जहाँ साधक का अज्ञान व परमात्मा का प्रकाश मिलते हैं वहीं सन्ध्या सफल होती है। अन्धकार में शक्ति का संचय हो तथा प्रकाश में जीवन का विस्तार हो अन्धकार में गहरी निद्रा हो तथा प्रकाश में गहन कर्म हो। अन्धकार में जीवन की जड़े जमी हो तथा प्रकाश में प्रज्ञा का फूल खिले। जो अंधकार व प्रकाश दोनों का सही उपयोग जानता है आर्य समाजी है।

यज्ञ इस पृथ्वी का अनूठा विज्ञान है। यह पृथ्वी का आकाश को दिया महादान है। आकाश के बिना मानव जिन्दा नहीं रह सकता। आकाश के उपकार अनेकों हैं। आदमी आकाश में ही रहता, आकाश में ही सोता तथा आकाश की कृपा से ही खाता पीता है। आकाश से वर्षा होती है। आकाश हर वस्तु को अवकाश देता है जिसके कारण जीवन फलता-फूलता है। घर के भीतर भी अगर आकाश न हो तो मानव एक क्षण भी जिन्दा नहीं रह सकता। दरवाजा जिससे मकान के भीतर

व बाहर आते जाते है खाली आकाश ही है। पृथ्वी भी आकाश के उपकार का बदला चुकाना चाहती है धन्यवाद देना चाहती है और यज्ञ पृथ्वी का आकाश को सुगंध के रूप में अपना सर्वश्रेष्ठ भेट स्वरूप देने का आयोजन है। हवा के घोड़े पर चढ़कर यह सुगन्ध आकाश में दूर-दूर तक फैल जाती है और आकाश को समृद्ध करती है। एक पूरे भरे घर को तीन बार फिर भरा जा सकता है। जो घर यज्ञ की अग्नि के प्रकाश से पूरा भरा है उसे ओम के महामंत्र के जाप के संगीत से फिर पूरा भरा जा सकता है। जो घर प्रकाश व संगीत से पूरा भरा है उसे सुगंध

से फिर पूरा भरा जा सकता है। शब्द अमर हैं ओम का यह जाप आकाश की यात्रा पर निकल जाता है। सुगंध अमर है यह सूक्ष्म से सूक्ष्म होती वायुमण्डल में घुल जाती है। प्रकाश अमर है जीवन की सही यात्रा अधंकार से प्रकाश की यात्रा है इसी कारण यज्ञ से बड़ा कोई दान नहीं है। एक कहानी अकसर दोहराई जाती है कि जिस व्यक्ति ने अग्नि खोजी वह उस चमत्कार की खबर लेकर अपनी बस्ती में गया तथा एक मोहल्ले में पहुँचा तथा इस अविष्कार को बाबत बताया। उस मोहल्ले का मुखिया आया तथा उसने कहा कि उनके शास्त्रों में इस बात का कोई उल्लेख नहीं है, अवश्य ही यह शैतान की खोज है, हम इसके पास भी नहीं जायेंगे और उन्होंने खोज करने वाले को भगा दिया। वह आदमी दूसरे मोहल्ले में गया तथा उसके सरदार ने कहा कि हम तुम्हारी पूजा करने को तैयार है पर हम नई चीज का प्रयोग नहीं करेंगे। तीसरे महोल्ले के लोगों ने कहा कि हम इस आग से अपने विरोधियों के घर जलाकर राख कर देंगे। तीनों ही मोहल्ले वाले अग्नि का लाभ नहीं उठा सके पहले वाले शैतान की खोज समझते रहे, दूसरे लोग खोज करने वाले की पूजा करने लगे पर अग्नि का लाभ नहीं उठाया और तीसरे लोगों ने उसका उपयोग दूसरों के घर जलाने के लिये किया। इस कहानी में चौथे लोगों का उल्लेख नहीं है और ये यज्ञ करने वाले लोग हैं जो अग्नि का प्रयोग केवल अपने घरों में प्रकाश करने के लिये ही नहीं करते वरन् दूसरों की मंगलकामना के भाव से करते हैं। मानव जीवन के श्रेष्ठतम क्षण दान के होते हैं जिस तरह हिमालय

से नदियाँ निकलती हैं उसी तरह आर्यो से सत्कर्म के लिये दान निकलता है। दान से ह्रदय विशाल बनता है। जीवन की जो भी श्रेष्ठ अनुभूति है उसका माध्यम विशाल ह्रदय है। यज्ञ में अग्नि, घी, सामग्री कपूर आदि का प्रयोग होता है। लकड़ी में अग्नि छिपी है जब तक उसे जलाया नहीं जाता ठंडी पड़ी रहती है इसी लकड़ी को जलाने पर छिपी अग्नि प्रगट होती है। जिस प्रकार लकड़ी में अग्नि छिपी है उसी प्रकाश शरीर में आत्मा छिपी है। लकड़ी की राख जमीन पर पड़ी रह जाती है अग्नि ऊपर और ऊपर उठती जाती है। इसी प्रकार देह पृथ्वी पर पड़ी रह जाती है आत्मा की ज्योति ऊपर-ऊपर उठती रहती है। लकड़ी को तलवार से कई टुकड़ों में काटा जा सकता है परन्तु जब अग्नि जल जाती है तो उसे तलवार से नहीं काटा जा सकता। अग्नि कितनी शक्तिशाली है कि उसे तलवार से नहीं काटा जा सकता। उसी प्रकार शरीर को तलवार से काटा जा सकता है

परन्तु आत्मा को नहीं काटा जा सकता। इस प्रकार लकड़ी आत्मा के सत्य को उजागर करती हैं। यज्ञ में अग्नि में घी डाला जाता है। हमें घी सीधे प्राप्त नहीं होता। सीधे तो दूध प्राप्त होता है घी विधि से बनाना पड़ता है उसी प्रकार धर्म भी सीधे प्राप्त नहीं होता। धर्म के लिये धारणा, ध्यान व उपासना की विधियों को अपनाना पड़ता है। यज्ञ में सुगन्ध का प्रयोग किया जाता है मानव जीवन में गुणों से बड़ी कोई सुगन्ध नहीं है। मानव शरीर तो अग्नि में जल जाता है परन्तु सत्कर्मों की सुगन्ध सूक्ष्म शरीर के साथ उड़ जाती है। गीता में कहा गया है कि तप, दान व यज्ञ बुद्धिमानों को भी पवित्र करते है तथा यज्ञ रूपी कर्म बन्धन नहीं लाता। यह भी जीवन रहस्य है कि जब आदमी को चरण श्रेष्ठता की की ओर बढ़ते है तो उसको गोचर व अगोचर स्त्रोतों से बहुत सहायता मिलती है। वास्तव में जो यज्ञ को अपनी जीवन शैली बना लेता है आर्य समाजी है।

चौधरी चरणसिंह की आस्था अडिग थी और उनकी आस्था को उन्हीं के उद्‌गारों के साथ विराम दिया जाता है। उन्होंने कहा था कि—

"हमारा दायित्व है कि हम अपनी श्रद्धा व भावना के पुष्प महर्षि दयानन्द जी को समर्पित करें और अपने आचरणों द्वारा इस शंकालु विश्व को बता दें कि वह युग के महान व्यक्तियों में से एक थे।"

वास्तव में आदमी हिन्दू जन्म से बनता है आर्य तभी बनता है जब वह योग यत्न व यज्ञ की त्रिवेणी बहाकर अपने भीतर का आत्म फूल खिलाता है। जिस दिन यह आत्मफूल खिलता है पूरी पृथ्वी उत्सव मनाने लगती है। धन्यभागी हैं वे लोग जो आर्य बनने के मार्ग के तीर्थयात्री हैं। पुरुषार्थ आर्य समाज का मूल सन्देश है। भाग्यवादी दर्शन त्याज्य है। चौधरी चरणसिंह ने कहा था कि

"पुरूषार्थ में व्यक्ति और राष्ट्र के बदलने की सामर्थ्य होती है।"

इन शब्दों से यही उजागर होता है कि आदमी पुरूषार्थ से जो चाहे वह बन सकता है। महर्षि दयानन्द ने हर धर्म के शास्त्र पढ़े उसके पश्चात् "सत्यार्थ प्रकाश" जैसे अमर ग्रन्थ की रचना की जो बिना पढ़े आलोचना करता है वह अन्धा, है। जो अध्ययन करके आलोचना करता है, असली आर्य समाजी है। संक्षेप में आर्य समाज के अनुसार धर्म उच्चारण करने की चीज नहीं धर्म धारण करने की चीज है। ईश्वर एक है उसका कोई दलाल नहीं है सबको बिना भेदभाव शिक्षा ग्रहण करने का अधिकार है। धर्म का इस धरा पर कोई ठेकेदार नहीं है भगवान का पृथ्वी

पर कोई दलाल नहीं है। प्रत्येक मानव को ध्यान धर्म से धन्यता पाने का जन्म सिद्ध अधिकार है। ध्यान ग्रहस्थी व सन्यासी दोनों के लिये अनिवार्य है। विधवा विवाह धर्म सम्मत है किसी विधवा को जीवनभर विधवा रखना अनाचार है। भगवान निराकार है अतः आकार से निराकार की ओर चलो। अन्धकार से प्रकाश की ओर चलो, अविद्या से सद्ज्ञान की ओर चलो। भाग्य से पुरूषार्थ की ओर चलो, मृणमय से चिन्मय की ओर चलो, छुद्र से विराट की ओर चलो व प्रकृति से परमात्मा की ओर चलो। जो इस तीर्थयात्रा का भागीदार है आर्य समाजी है।

जब परमात्मा कण कण में व्याप्त है, वह पत्थर के टुकड़े में तो व्याप्त है पत्थर की प्रतिमा अर्थात मूर्ति में क्यों नहीं है? जो इस प्रश्न का सटीक उत्तर देने में समर्थ है, आर्य समाजी है।

□■□

अध्याय 15

स्वामी विवेकानन्द से प्रभावित व्यक्तित्व

स्वामी विवेकानन्द ने कहा था कि यदि देश में एक भी आदमी भूखा सोता है तो पूरा देश ही देशद्रोही है। उन्होंने यह भी कहा था कि मनुष्य को पापी-पापी कहकर निन्दा मत करो उसे याद दिलाओ कि वह अमृतपुत्र है उसके भीतर इतनी शक्ति छिपी है कि यदि वह उससे सम्पर्क साध ले तो सारे नक्षत्रों को अपनी मुट्ठी में दबा सकता है। उन्होंने यह भी कहा था कि देश महान तब नहीं बनता जब वह अपने पूर्वजों पर नाज करता है। देश महान तब बनता है, जब पूर्वज देश के सपूतों पर नाज करते हैं। स्वामी विवेकानन्द ने कहा था कि साम्प्रदायिकता व हठधर्मी ने इस धरती को कई बार खून में भिगोया है उसका धर्म से कोई भी सम्बन्ध नहीं है। समझदार वही है जो समय के संकेत पहचानता है अब समय आ गया है जब गरीब अपने अधिकारों के लिये सचेत हो गया है। उसे अब और अधिक नहीं दबाया जा सकता।

ज्ञानदान व विद्यादान देकर सबको उन्नत बनाओ। फैलना ही जीवन है सिकुड़ना ही मृत्यु है। एक वर्ग का दूसरे वर्ग से घृणा करना ही भारत के पतन का कारण है। वेदशास्त्रों का ज्ञान प्राप्त करना भारत के प्रत्येक नागरिक का जन्म सिद्ध अधिकार है। यदि देश को महान बनाना है तो संकुचित मनोवृत्ति को स्वाहा करना होगा। देश उत्थान का मंत्र सुझाते हुये उन्होने कहा था कि "पचास वर्ष के लिये देवी देवताओं की पूजा छोड़ दो एक ही जागृत देव की पूजा करो और वह है भारत देश। यह वह भारत देश है जो मेरे बचपन का झूला, जवानी की बगिया व बुढ़ापे की काशी जैसा है इस देश में ज्ञानदान से सारे विश्व को जगाया है और यदि विदेशी विचारकों की तुलना भारतीय महापुरूषों से की जाये तो विदेशी विचारक खिड़कियों से झांकते छोटे बच्चे जैसे हैं।" प्रत्येक देश को एक सन्देश देना होता है, प्रत्येक देश को एक मिशन पूरा करना होता है और भारत ने सारी दूनियाँ को जो योग विद्या व ज्ञान का महादान दिया है उसके सामने सारी विदेशी खोजें बचकानी हैं। किसी देवी-देवता की पूजा करने जाने की जरुरत नहीं है ज्ञान की पूजा करो और देवी-देवता तुम्हारी पूजा करने स्वयं चले आयेंगे। गुरूपूजा ज्ञान पूजा सर्वश्रेष्ठ है और गुरु वही है जो भय के पार ले जाये ज्ञान वही है जो दिव्यता में प्रतिष्ठित कर दे और दिव्यता उजागर करना ही धर्म का लक्ष्य है। उठो जागो, ज्ञान, योग, भक्ति या निष्काम कर्म में से किसी का सहारा लेकर अपनी दिव्यता

उजागर करो।

चौधरी चरणसिंह के घर में महर्षि दयानन्द के चित्र के साथ स्वामी विवेकानन्द का चित्र अवश्य लगा होता था। स्वामी विवेकानन्द ने भारतीय संस्कृति के ध्वज को आकाश की ऊँचाई तक उठाकर सारे विश्व को यह दिखा दिया कि संकट की घड़ी में बचाव का एकमात्र उपाय भारतीय संस्कृति के पास है। उनके जीवन की एक घटना है कि वह एक दिन हिमालय क्षेत्र में भ्रमण कर रहे थे तभी एक बन्दर उनके पीछे पड़ गया वह तेज चलने लगे तो बन्दर भी उनके पीछे भागने लगा। यह देखकर वह रुक गये और बन्दर की तरफ बढ़े तब बन्दर पीछे हटने लगा। वह बन्दर के पीछे भागे बन्दर भी भागा। स्वामी विवेकानन्द ने अपने संस्मरणों में लिखा है कि उस दिन मुझे समझ में आया कि भागने में कोई सार नहीं है। मुसीबत आये तो टिककर-डटकर सामना कर लेना ही ठीक है। मुसीबत की चुनौती स्वीकार कर लेना ही ठीक है। चौधरी साहब ने इस सीख को अपना जीवन मंत्र बना लिया था। उन्होंने आजीवन हर जोखिम का डटकर मुकाबला किया। वे कभी भी जीवन संग्राम से डर कर नहीं भागे। परिस्थितियाँ मनुष्य को बलवान या निर्बल नहीं बनाती वे तो केवल दिखाती हैं कि आदमी भीतर से कंप रहा है या अकम्प है। चौधरी चरणसिंह के जीवन में एक दिन भी ऐसा नहीं आया जब उन्होंने सुरक्षा की माँग की हो। उन्होंने जो ठीक समझा बेझिझक होकर कहा। उन्होंने जो अहितकर समझा उसका डटकर विरोध किया। उन्हे अपने पूज्य महात्मागांधी में भी जो दोष दिखाई दिये उन्हें उजागर करने में भी वे नहीं चूके और गांधी जी की तीन भूले गिना दी। उनकी कथनी व करनी में कोई अन्तर नहीं था। इन सद्गुणों के कारण ही वे सफलता की सीढ़ी पर चढ़े। महषि दयानन्द ने एक बार कहा था कि—

"जिस देश में करोड़ो की संख्या में दीन-हीन जन हो अनाथ व दलित लोग हों वहाँ उनकी उन्नति के स्थान पर किसी पत्थर की पूजा करना उस पर धनादि चढ़ाना कहाँ तक उचित है? पूजा करनी हो तो किसी अनाथ दलित की करो। माला पुष्प व धन चढ़ाना हो तो जड़ मूर्ति की अपेक्षा किसी सजीव प्रतिमा (मनुष्य) पर चढ़ावों। दीन हीन जन भी उसी ईश्वर के पुत्र हैं जिसके तुम हो।"

महर्षि दयानन्द के इन अमर वचनों को चौधरी चरणसिंह ने अपने जीवन में उतारा उनका पूरा जीवन इन वचनों के एक-एक अक्षर की गवाही देता था। जहाँ

भी दीन दुखी के उद्धार के उपाय किये जाते थे चौधरी साहब का सदा ही उनको समर्थन मिलता था। अच्छा भविष्य की आशा के सहारे ही दुखी आज के कष्ट सहता है। चौधरी चरणसिंह ने अनेक लोगों के हृदयों को आन्दोलित किया। महात्मा गांधी ने गाँवों का सुधार किया सरदार पटेल ने गाँवो को संघर्ष का रास्ता दिखाया परन्तु चौधरी चरणसिंह ने गाँवों को सत्ता में भागीदार बनाकर उन्हें यह दिखा दिया कि मानव को शिखर चढ़ने से गरीबी नहीं रोक सकती। जो लोग बराबर श्रम में लगे रहते हैं तथा जिनके जीवन में कोई उद्देश्य होता है वे एक दिन अपनी मंजिल पर पहुँच जाते हैं। परमात्मा केवल उनके साथ होता है जो सतत प्रयत्नशील होते हैं तथा अपनी साधना के बल ऊँचे सोपानों पर चढ़ना चाहते है। परमात्मा उनके साथ नहीं होता जो हाथ पर हाथ रखे बैठे रहते हैं। जो संकल्पी होते हैं वे आधा युद्ध प्रहार करने से पहले ही जीत लेते हैं।

मानव न जाने क्यों अपनी करनी पर फूला है?
सर्व के विनाश के लिये आतुर लगता है और स्व का अर्थ भूला है ॥

मानव ने जीवन में बड़ी गहरी खोजें की हैं। वह आकाश में भी उड़ा है और सागर की गहराई में भी गया तथा वहाँ पहुँच कर मोती खोज लिये। मानव पहले शान्त था आज अशान्त व दुखी है। उसका सम्पर्क शुभ व श्रेष्ठ से टूटता चला जा रहा है जिसे देखकर चौधरी साहब बहुत चिन्तित थे। जब कोई आदमी शान्त व सुखी होता है तथा सबका हित साधन करता है वह सृजन करता है जब दुखी होता है तो सबको मिटाना चाहता है। आज दुखी आदमी के हाथ में एटम शक्ति है तथा एटम युद्ध की दशा में सामूहिक आत्मघात की सम्भावना बढ़ गई है जिसमें कोई इतिहास लिखने वाला भी नहीं बचेगा और आदमी मनुष्य जाति का आखरी अध्याय लिखकर समाप्त हो जायेगा। चौधरी साहब इसी कारण चाहते थे कि मानव **'आर्य आस्था'** से युक्त हो तथा भीतर से उनके अन्दर मानव कल्याण का भाव हो तभी इस पृथ्वी को महाविनाश से बचाया जा सकेगा। आज की घड़ी निर्णायक है जब मनुष्य के भाग्य का फैसला होना है यदि समय रहते निर्णय नहीं लिया गया तो फिर बहुत देर हो चुकी होगी। चौधरी साहब मानव जाति के भविष्य के लिये आश्वासन थे तथा वे मानव जाति के शुभचिंतक थे।

स्वामी विवेकानन्द ने उठो-जागो और जब तक लक्ष्य प्राप्त ना हो जाये मत

रुको का वेदमंत्र जन-जन को समझाया था। उनकी वाणी को 'उठिस्थ जागृत' के शीर्षक से कविता रूप में समझाने का प्रयास किया गया है। चौधरी साहब अगर कवि होते तो उनके उठो-जागो वेदमंत्र का इस प्रकार उद्घोष करते—

उत्तिष्ठत-जाग्रत (उठो-जागो)

(1) उठो तुम्हारे घर आंगन से
प्रेम का पौधा उखड़ रहा है।
उठो तुम्हारा सुख शांति उपवन
शनै-शनै अब उजड़ रहा है।

(2) उठो वतन की नैतिकता की
बेहद डाल झुकी लगती है
उठो अतीत गौरव की गाथा
सचमुच आज रुकी लगती है।

(3) उठो तुम्हारी देव भूमि के
रहस्य द्वार अब बन्द पड़े हैं।
उठो तुम्हारी मातृभूमि के
जीवन के स्वर मन्द पड़े हैं।

(4) उठो हिंसा बनी ताड़का
जीवित मानव सटक रही है।
उठो तुम्हारी संस्कृति की
पावन-धारा भटक रही है।

(5) उठो तुम्हारी हर सीमा पर
शत्रु ने घेरा डाला है।
उठो विदेशी गुप्तचरों ने
यहाँ वहाँ डेरा डाला है।

(6) उठो तुम्हारे धर्म ध्यान पर
पश्चिम कर प्रहार रहा है।
उठो तुम्हारे वेद शास्त्रों को
विज्ञानी ललकार रहा है।

(7) उठो तुम्हारी गली-गली मे
मुक्त अपराधी विचर रहे हैं।
उठो तुम्हारी जीवन वीणा के
तार-तार सब बिखर रहे हैं।

(8) उठो आंख खोलकर देखो
काला बादल सिर पर घिरा है।
उठो अन्नत खाई में झाको
मानव जाकर जहाँ गिरा है।

(9) उठो तुम्हारे तपस्वी की
वाणी में कोई ओज नहीं है।
उठो तुम्हारे धर्म दूत में
सत्य की गहरी खोज नहीं है।

(10) उठो शस्त्र टकराहट देखों
ज्वाला मुखी फटने वाला है।
उठो महा उपद्रव रोको
महाविनाश घटने वाला है।

(11) उठो भयंकर विप्लव देखों
श्रेष्ठ व शुभ खोने वाला है।
उठो काल पगध्वनि सुन लो
सर्व-स्वाहा होने वाला है।

(12) उठो आंख खोलकर देखो
आत्मघाती हर तैयारी है।
उठो कुछ उपाचर सुझावों
हर रात बड़ी बोझिल भारी है।

(13) उठो युवक चबा नशीली गोली
परम्परा बेदम् बना रहा है।
उठो तुम्हारी सीमाओं पर
शत्रु अणुबम बना रहा है।

(14) उठो तुम्हारी पावन धरती
निज संचित गौरव खोती हैं।
उठो दहेज के दैत्य सतायी
अबला विलख-विलख रोती है।

(15) उठो तुम्हारे तंत्र-मंत्र का
रंग कुछ उड़ा हुआ लगता है।
उठो तुम्हारा महाविजय रथ
कुमार्ग मुड़ा हुआ लगता है।

(16) उठो तुम्हारे देश के अन्दर
नई विकृति जाग रही है
उठो तुम्हारे वतन की प्रतिभा
अन्य देशों को भाग रही हैं।

(17) उठो तुम्हारे संस्कृति तरु के
कुम्लहा अणगित फूल रहे हैं।
उठो अतीत की गौरव गाथा
देश के बच्चे भूल रहे हैं।

(18) उठो धर्म तोतारटन्त बस
व्यक्तित्व बासा उधार है।
उठो तुम्हारे मन्दिर खाली
मदिराल्य लम्बी कतार है।

(19) उठो तुम्हारे धर्म का साधक
संसारी से भिन्न नहीं है।
उठो तुम्हारी ब्रज भूमि में
योग का बाकी चिन्ह नहीं है।

(20) उठो तुम्हारे गुरुजनों का
पहले सा सम्मान नहीं है।
उठो चमक में खोया मानव
स्वरूप की उसे पहचान नहीं है।

अध्याय 16

नारी शिक्षा व समानता के प्रबल समर्थक चौधरी चरणसिंह

किसी भी समाज की प्रगति की सबसे बड़ी कसौटी नारी है। नारी के साथ किया गया व्यवहार ही समाज को सभ्य या असभ्य बनाता है। महात्मा गांधी ने नारी के बारे में जो उदगार प्रकट किये थे उन्हें इस प्रकार कहा जा सकता है कि—

"नारी रहे सीमित रसोई तक
यह कोई धर्म विधान नहीं है।
देव करें नहीं उस घर बासा
जहाँ नारी का सम्मान नहीं है।"

चौधरी साहब भारतीय संस्कृति के नैतिक मूल्यों के रक्षक के रूप में यह तो कहते थे कि भारतीय सभ्यता पुरूषों को स्त्रियों से हाथ मिलाने की इजाजत नहीं देती। सभा में आई हुई किसी स्त्री को यदि हार अथवा फूलमाला पहनाने की जरुरत हो तो यह कार्य किसी स्त्री अथवा कन्या से कराया जाना चाहिये अन्यथा वह हार अथवा माला उस स्त्री के हाथ में दे देनी चाहिये परन्तु साथ ही साथ यह भी कहते थे कि नारी के साथ किया व्यवहार ही समाज को उन्नत बनाता है अथवा पतन के गर्त में धकेलता है। उन्होंने साफ शब्दों में कहा था कि **"जिस परिवार अथवा समाज में स्त्री जाति का सम्मान होता है जहाँ के पुरूष स्त्रियों के आत्मसम्मान की रक्षा करने में अपना जीवन उत्सर्ग करने को उद्यत रहते हैं वहाँ सुख, शांति और हर प्रकार का अभ्युदय है।"**

माता पिता का यह दायित्व है कि वे अपनी संतान का पालन इस प्रकार से करें कि पुत्र-पुत्री में कुछ भेद न हो। यह भेद न शिक्षा के बारे में हो न भोजन के बारे में हो। शास्त्रों में कहा गया है कि जहाँ नारी का सम्मान होता है वहाँ देवता वास करते हैं।

संसार में जितने भी सुख है वे स्वास्थ्य, शिक्षा व सद्ज्ञान तीन की त्रिवेणी में स्नान करने से ही प्राप्त हो सकते हैं और चौधरी साहब नारी को तीनों मे से एक से भी वंचित नहीं करना चाहते थे। वे कहते थे कि शिक्षा से व्यक्ति का मस्तक खुल जाता है।

स्वामी विवेकानन्द ने एक बार कहा था कि यदि मुझे पांच सौ निष्ठावान

कार्यकर्ता मिल जायें तो में भारत का कायाकल्प पचास वर्षों में कर दूंगा और यदि पचास निष्ठावान औरतें मिल जाये तो कुछ ही सालों में भारत का कायाकल्प कर दूंगा। यह थी उनकी नारी शक्ति में आस्था और नारी की निष्ठा में अटूट विश्वास। इस विश्वास को चौधरी साहब ने आकाशी बुलन्दी दी। स्वामी विवेकानन्द समर्थन पर बल दे रहे थे चौधरी साहब ने शिक्षा पर बल दिया। नारी जाति की सार्वजनिक जीवन में भागीदारी पर बल दिया। यह कहा गया है कि यदि तुम पुरूष को शिक्षित करके उपयोगी बनाते हो तो तुम एक व्यक्ति को उपयोगी बना रहे हो और यदि तुम नारी को शिक्षित करते हो तो पूरे परिवार को सफल व उपयोगी बना रहे हो। इसी कारण जिनका ध्यान नारी शिक्षा की ओर गया वे समाज के सच्चे हितैषी थे।

चौधरी साहब नारी शिक्षा के क्षेत्र में महर्षि दयानन्द के योगदान को बराबर उजागर करते हैं। उनके अनुसार महर्षि ने चारों वर्णों के लिये ही समान शिक्षा की वकालत ही नहीं की थी उन्होंने पुरूषों के साथ महिला वर्ग की शिक्षा का समर्थन सबल शब्दों में किया था और साथ ही साथ यह भी चेतावनी दी थी कि शिक्षा के अभाव में देश की समृद्धि की कोई सम्भावना नहीं है। **नारी को शिक्षित किये बिना परिवार व राष्ट्र दोनों नहीं पनप सकते हैं।** राजा महेन्द्रप्रताप ने एक बार कहा था कि बिना शिक्षा मस्तिष्क खाली ढोल जैसा होता है। उन्हीं का समर्थन करते हुये चौधरी साहब बोल उठते हैं कि स्वामी दयानन्द विवाहित जीवन की खुशियों का आधार पति व पत्नी दोनों का शिक्षित होना मानते थे और नारी शिक्षा का प्रतिपादन व समर्थन करने वालों में स्वामी जी अग्रणी थे। उन्होंने इस विषय पर पहल की थी। संसार से पीठ फेरने से जीवन का उद्धार नहीं होता शिक्षा की ओर मुंह करने शिक्षा मुखी होने से ही जीवन का उद्धार होता है।

जिसको भी दास बनाना हो जिसका भी शोषण करना हो उसे शिक्षा से वंचित कर दो यह दुर्जन लोगों की सनातन कूटनीति रही है। इस देश में जो अन्धविश्वास का विषैला जाल जड़ जमाये रहा है उसके पीछे शिक्षा का अभाव है। पुराने युग में आकाश में कड़कती बिजली की आवाज सुनकर अज्ञानी मानव हाथ जोड़कर खड़ा हो जाता था कि शायद आकाश नाराज है और उसकी प्रार्थना जरुरी है आज विज्ञान ने उसका कारण बता दिया। चौधरी साहब की देशना है कि तुम्हें किसी पत्थर के देवता की पूजा करने की जरुरत नहीं है देश के हर वर्ग और घर के अन्दर पुत्र व कन्या दोनों को समान रूप से शिक्षित करो और देवता तुम्हारे घर पर प्रसन्नता

की वर्षा कर देंगे। सदियों पुराने कपट जाल से मुक्त होना होगा। आदमी का सनातन धर्म अज्ञानी जन का शोषण रहा है। एक कवि ने एक बार गीत गाया था कि आदमी ने आदमी के साथ अगणित छल किये हैं जिनकी बावत हवा, पानी व जिन्दगी चाहे जिससे पूछा जा सकता है। चौधरी साहब के अनुसार इस छल में नारी के साथ किया अत्याचार सीमातीत है, सबसे अधिक है। नारी को जानबूझ कर अशिक्षित रखा गया, उसे घर की चारदीवारी के अन्दर बन्द कर दिया गया। वह समाज की हलचल से बेखबर रही। उसे हर तरह से अज्ञानी रखने की चेष्टा की गई क्योंकि अज्ञानी का शोषण करना सबसे सुगम है। उसको सती होने पर मजबूर किया गया। उसे हर तरह की शारीरिक व मानसिक पीड़ा दी गई। वह जिन्दा रहकर भी मुर्दों की तरह जीती रही। उसका अपना अलग अस्तित्व नहीं रहा। वह बचपन में किसी की बेटी कहकर बताई जाती रही। जवानी में किसी की पत्नी बनी तथा उसी के गोत्र के अनुसार उसका भी नाम पुकारा जाने लगा। वह पति के गोत्र का भाग हो गई। उम्र बढ़ने पर वह किसी की माँ बन गई। समाज में कुछ ऐसी व्यवस्था की थी कि नारी अपनी अलग पहचान न बना सके। स्कूलों में उसका पुत्र अपने पिता का नाम अपने साथ लिखाने लगा। रावण की पराजय व सीता की मुक्ति के पश्चात जब युद्ध के मुख्य कारण का प्रश्न उठा तो भगवान राम ने सीता को सम्बोधित करते हुये कहा था कि उन्होंने युद्ध सीता के लिये नहीं कुल की मर्यादा की रक्षा उसके सम्मान की रक्षा के लिये किया था। नारी सम्पत्ति मानी जाती रही और यही कारण था कि महाभारत काल में द्रोपदी को जुओ में दाव पर लगाया गया तथा हारने पर उसे अपमानित होना पड़ा। इस पुरूष प्रधान समाज में नारी ने समय समय पर अपनी पीड़ा तो उजागर की परन्तु वह बराबरी का स्तर प्राप्त करने में असफल रही। जब वाणों की शैया पर पड़े भीष्म पितामह से ज्ञान सीखने का प्रश्न उठा तो द्रोपदी ने हंसकर कहा था कि वे ज्ञान का उपदेश कैसे कर सकते हैं? जो उस समय गर्दन झुकाये बैठे थे जब मैं नंगी (निर्वस्त्र) की जा रही थी। यह हंसी महाभारत की प्रसिद्ध हंसी है। यो तो गार्गी भी शास्त्रार्थ में निपुण थी तथा उसने शकंराचार्य जी तक को मुश्किल में डाल दिया था परन्तु ये सभी अपवाद हैं। सामान्यता नारी का जीवन दुख व अज्ञान का जीवन रहा है। वह शादी के बाद अपने पति की श्रीमती बनती रही है। अज्ञान के अंधेरे कूप में जब भी कभी उसने कीर्ति अर्जित की वह अपने चरित्र व साहस के बल पर की थी। अन्यथा

उसका परिचय केवल पति के साथ जुडा था। पुराने जमाने के नीतिशास्त्र यह घोषणा करते रहे कि लड़की जब तक क्वारी रहे उसके पिता का दायित्व है कि उसकी रक्षा करे जब जवान हो जाये तो पति रक्षा करे जब बूढ़ी हो जाये तो बेटा रक्षा करे। इस निर्देश से यह स्पष्ट होता है कि हर अवस्था में पुरूष ही नारी की रक्षा करे। नारी का अलग आस्तित्व समाज को स्वीकार नहीं रहा और इसी कारण सदियों तक नारी अपमान व उपेक्षा का जीवन जीती रही। ज्ञान, शक्ति है। ज्ञान सबसे बड़ा सहारा है। ज्ञान समाज में सबसे बड़ा सम्मान है व सबसे बड़ा रक्षक है। बच्चा अपने शुरु के जीवन का एक महत्त्वपूर्ण भाग माँ के पास बिताता है। माँ उसकी सबसे पहली गुरू होती है जहाँ उसके भीतर संस्कार डाले जाते हैं बच्चे के जीवन की नींव डाली जाती है और जो नीव डालने वाली शक्ति है जब वह खुद अज्ञान का जीवन जी रही होती है तब यदि मानव के जीवन का भवन हिलता है तो कोई आश्चर्य नहीं है। पति पत्नी के बीच मुकदमों की संख्या हर रोज बढ़ती चली जा रही है। आज पूरे विश्व की सबसे बड़ी समस्या घायल परिवार हैं। आज मनोवैज्ञानिक इस निष्कर्ष पर पहुँचते चले जा रहे हैं कि भविष्य में स्थायी विवाह एक कल्पना बन जायेंगे और समाज एक ऐसे युग में प्रवेश कर जायेगा जिसमें पांच या अधिक से अधिक दस साल तक विवाह टिक सकेगा। यह सब नारी पर किये अत्याचार का फल हैं। मानव आज शोरगुल के कारण तनाव से भरा नहीं है वरन् मानव के तनाव से भरे होने के कारण समाज में शोरगुल है। यह शोरगुल हर रोज बढ़ता ही चला जा रहा है क्योंकि तनाव हर रोज बढ़ता चला जा रहा हैं। परिवार की भीतरी कलह ही गलियों से गुजरकर समाज का उपद्रव बन जाता है। आज जीवन महाउपद्रव बन गया है। इस भीतरी तनाव ने समाज में एक विषभरा विश्वास दे डाला कि नारी के साथ रहकर शांति सम्भव नहीं है शांति के लिये बन या पहाड़ों पर जाना जरुरी है। जिस देश में कण्डव, वशिष्ट, पाराशर, रामकृष्ण परमहंस आदि अनेकों संत पलायन के विरुद्ध रहे हो वहाँ पर इस विचार का जड़ जमा लेना कि नारी के साथ रहकर शांति नहीं हो सकती एक दुखद स्थिति है जिसका मुख्य परिणाम यह हुआ कि इस देश को बहुत दिनों तक गुलाम रहना पड़ा। जो प्रतिभाशाली था वह सन्यासी हो गया जो योद्धा था जंगल में छिप कर बैठ गया और मरघट की शांति की यह खोज भारत के लिये बड़ी महंगी पडी।

चौधरी चरणसिंह नारी जाति के सम्मान के रक्षक तथा उसको शिक्षित देखना

चाहते थे। वे अशिक्षा को कोढ़ मानते थे। जो अशिक्षित है उसका जीवन हर दिन सूखता जाता है। यह जीवन का सत्य है कि जब कोई प्रसन्न होता है तो चीजों को बनाना चाहता है सृजन में लगता है जब दुखी होता है तो चीजों को मिटाना व तोड़ना चाहता है। आज समाज में जो बसों के सीसे तोड़े जा रहे हैं, चलती रेलों पर पत्थर फैके जा रहे हैं तथा जगह-जगह आगजनी की दुखद घटनाऐं घट रही हैं उनका एकमात्र कारण घरों के भीतर का तनाव है जो उबल कर समाज में फैल गया है। स्त्री जब प्रसन्न होती है, स्वेटर बुनती है, स्वादिष्ट पकवान बनाती है जब दुखी होती है तो बर्तन व प्लेट तोड़ती है। बच्चा जब प्रसन्न होता है तो बाहर खेलता है। चित्र बनाता है जब दुखी होता है तो अपने खिलौने की टांग तोड़ता है। आदमी जब सुखी होता है तो अपना घर बड़ा बनाता है, जब दुखी होता है तो दूसरों के घरों में आग लगाता है। आदमी जब शान्त होता है तो बगिया में फूल खिलाता है जब अशान्त होता है तो गाड़ी का एक्सीलेटर दबाता रहता है जिससे वाहनों की गति बढ़ती जाती है। आज सड़क पर वाहन दुर्घटनाओं में मरने वालों की संख्या सबसे अधिक है यह दुःखी आदमियों की गति बढ़ाने के कारण है। आज मानव के जीवन पर जो संकट के बादल मडंरा रहे हैं वह विवाह की विकृति के कारण है और अशिक्षित नारी इसका मुख्य स्रोत्र है। शिक्षा गंगोत्री के समान है जिससे सुखों की गंगा निकलती है। जिस प्रकार हिमालय से जड़ी बूटियाँ निकलती हैं उसी प्रकार शिक्षा से सद्‌गुण पैदा होते हैं। जीवन की गाड़ी को ठीक से चलने के लिये नारी व पुरुष दोनों पहियों का ठीक होना जरुरी है। एक नारी के लिये केवल विवाह करके बच्चे पैदा करना व खा पीकर सोना ही मंजिल नहीं है उसे अपने व्यक्तित्व के विकास के लिये पूरा अवसर होना चाहिये और यह अवसर बिना शिक्षा अधूरा है। शिक्षा के बिना मस्तिष्क भूसे के बोरे जैसा होता है जिसमें कोई दाना नहीं होता। दाने के बोने पर ही पौधा पैदा होता है भूसे को बोने पर कुछ पैदा नहीं होता अतः नारी की शिक्षा आज के युग की पुकार है। जिस आदमी में भी थोड़ी समझ है वह रोटी खाकर सन्तुष्ट नहीं हो सकता। रोटी से केवल शरीर की भूख शांत होती है। प्रेम से ह्रदय की भूख शान्त होती है। विचार से मन की भूख शांत होती है। शिक्षा से बुद्धि की भूख शान्त होती है तथा ध्यान से आत्मा की भूख शांत होती है। पुरूष समाज ने नारी के शरीर की भूख शांत करना ही अपना धर्म माना। उसे समाज में बाहर निकलने से रोका। उसे नर्क का

द्वार बता डाला। जिस प्रकार पुरानी पुस्तकें लिखी गई उनसे यह प्रकट होता है कि वे नारी के बाहर निकलने के विरूद्ध थे उसकी स्वतंत्रता के घोर विरोधी थे। जहाँ एक ओर महात्मा गांधी का विचार था कि जिस घर में नारी का सम्मान नहीं है वहाँ देवता निवास नहीं करते। वहीं ग्रन्थों में नारी की स्वतंत्रता का विरोध किया गया और कहा गया है कि स्वतंत्र होने पर नारी बिगड़ जाती है। चौधरी चरणसिंह चाहते थे कि चाहे नारी हो अथवा पुरूष दोनों को शिष्टाचार की सीमा में रहना चाहिये तथा स्वतंत्रता स्वछन्दता नहीं बननी चाहिये परन्तु नारी को रसोई घर का ज्ञान कराकर ही सन्तुष्ट नहीं रहना चाहिये उसे वास्तविक शिक्षा का भी बराबरी का अधिकार होना चाहिये। नैतिकता का पाठ सीखकर नारी पुरुष के साथ कन्धे से कन्धा मिलाकर काम कर सकती है। उसे घर के भीतर चारदीवारी में रहने की कोई जरुरत नहीं है पर्दे में रहने की कोई जरुरत नहीं है। वह स्वेच्छा से शिक्षा ग्रहण करके डाक्टर बन सकती है। समाज को स्त्री शिक्षा से भयभीत होने की आवश्यकता नहीं है। भय की दीवार पर खड़ा भवन स्थायी नहीं होता। भय के स्थान पर नारी पर विश्वास तथा नारी के भीतर आत्मविश्वास जगाना होगा।

शिक्षा के क्षेत्र में नारी को पुरूष की भौडी नकल करने की जरुरत नहीं है क्योंकि नकल से असली चरित्र पैदा नहीं होता। स्त्री व पुरूष दोनों को समान शिक्षा का अधिकार तो होना चाहिये परन्तु स्त्री को पुरुष को नीचा दिखाने व बदले की भावना पालने से बचना होगा। पुरूष जैसे कपड़े पहनने, क्लब व नृत्य में पुरूष के साथ होड़ लगाने से नारी के सम्मान की वृद्धि नहीं होगी। ऊँची एडी की जूती पहनकर क्लब में ताश-जुआ खेलकर या शराब पीने से नारी का कद ऊँचा नहीं होगा। वह बचकानी हरकत नारी के पतन की शुरूआत होगी। नारी अपने भीतरी गुणों व बुद्धि के बल पर ही महान बन सकती है अन्यथा नहीं। महत्वंकाक्षा की पगल दौड़ व सिगरेट आदि के बल पर समकक्ष बनने की हर कोशिश आत्मघाती होगी। जिस प्रकार हर बीज अलग अलग ढंग के पेड़ पैदा करता है उसी तरह नारी की शिक्षा उसके गुण व स्वभाव के आधार पर निर्धारित की जानी चाहिये, अन्धी नकल के आधार पर नहीं। तभी नारी जगत का उत्थान होगा और नारी समाज के पूरे वृक्ष को संभालने वाली जड़ का काम करेगी। स्वभाव के अनुरूप शिक्षा नारी को एक निश्चित दिशा संकेत देगी जो सुनिश्चित विजय का यात्रा पथ बनेगी। स्वभाव के अनुरूप शिक्षा से ही जीवन में क्रान्ति फलित होगी। नारी जब भीतर

से पुष्ट होगी तभी वह महाऊर्जा का भण्डार बनेगी और इस ऊर्जा की छाया में जब बच्चे का लालन पालन होगा तो वह अपनी पूरी क्षमता के साथ विकसित होगा। अच्छी पुस्तकों का साथ उन महापुरूषों से सत्संग है जिनके अनुभव का सार उनमें लिखा है। इन अच्छी पुस्तकों से नारी समाज को दूर रखने का कपट जाल बहुत पुराना है जिसे तोड़ने का भागीरथ प्रयत्न गांधी जी, महर्षि दयानन्द व चौ० चरणसिंह तीनों ने किया। चौधरी चरणसिंह से ज्यादा दिन सत्ता में रहने वाले नेता तो इस देश ने अनेकों पैदा किये परन्तु उनसे अधिक निष्ठावान नेता कोई दूसरा पैदा नहीं किया।

जब उन्होंने नारी की समानता की बात उठाई तो अपनी पत्नी अपनी पुत्री या अन्य सम्बन्धी को शिक्षा व राजनीति में बराबरी का स्तर पाने से नहीं रोका। उन्होंने नारी जगत को अपने पैरों पर खड़ा होने का आह्वान किया तथा नवयुवकों को निर्देश दिया कि माता व पिता दोनों ही बराबरी के स्तर पर पूजनीय हैं। नारी जगत को झांसी की रानी लक्ष्मीबाई, गार्गी, सीता माता, मीरा, महादेवी वर्मा, सरोजनी नायडू आदि ने बहुत ऊँचा उठाया। प्रत्येक नारी एक ही दिशा में दौड़कर पूरी गरिमा में नहीं खिल सकती। उसे अपनी नियति की दिशा खोजनी होगी तथा अपना फूल खिलाने के लिये जूझना होगा। जन्म जीवन नहीं है, बीज पेड़ नहीं है, बूंद सागर नहीं है, परिचय ज्ञान नहीं है। विषय की गहराई में बिना जाये ज्ञान नहीं होता तथा जिस सत्कर्म में किसी नारी का मन अखण्ड होकर जुट जाता है उसी विषय में उसकी प्रतिभा खिलती है। सही समय, सही मौसम व सही जगह पर बीज बोने से ही उस पर फूल आते हैं पत्थरों पर बोये गये बीज नष्ट हो जाते हैं। नारी को बहुत ही सजगता से अपने भाग्य का फैसला करना है।

पुरूषों की अंधी नकल शुभ लक्षण नहीं है उसे अपने मूल स्रोत से जुड़कर अपनी क्षमता को ज्ञात करना है। कर्म में प्रसन्नता इस बात का संकेत देने के लिये पर्याप्त है कि निर्णय सही है तथा सही दिशा में चरण बढ़ रहे हैं। जीवन की हर बाधा गलत दिशा में उठाये कदम के कारण है। जीवन की बाधा कर्म की नहीं कामना की कमी से पैदा होती है। कुनकुने पानी से गाड़ी नहीं चलती कुनकुने निर्णय से पूरे प्राण कर्म में नहीं लगते। जब कामना ही नहीं है तो सफलता मिलने की सम्भावना भी नहीं है। नारी को पुरुषों ने बाहर निकलने से रोका उसके पीछे उनकी मानसिकता थी जो भय पर खड़ी थी। पाप व पुण्य के आधार पर नारी व पुरूषों

का बटंवारा न्यायसंगत नहीं है पापी व पुण्यात्मा दोनों में ही मिल सकते हैं। पर्दा, बुर्का व घूंघट अब बीते जमाने की बाते होने जा रहे हैं। पुराने दिनों में पर्दा, बुर्का व घूंघट में ढकी रहने के कारण ही औरत जीवन को सुन्दर, शुभ व सुखद बनाने के लिये कोई महत्त्वपूर्ण योगदान नहीं कर सकी।

उसने कोई आविष्कार नहीं किया तथा चाँद सितारों पर पहुँचने के लिये उसके मन में कोई सपना पैदा नहीं हुआ। उसने कभी भी आकाश की ओर आश्चर्य से भरकर आंखें नहीं उठाई। उसने तीन कदम से आगे नहीं देखा, तीन दिन से आगे की योजना नहीं बनाई तथा पति, पत्नी व बच्चे इन तीन से आगे के कल्याण का विचार नहीं किया। उसने विज्ञान की खोजों की बाबत नहीं सोचा तथा नक्षत्रों पर विजय पाने के सपने नहीं देखें। इससे वह मनुष्य की अपेक्षा शान्त तो रही परन्तु प्रगति नहीं कर सकी। शिक्षा के अभाव में बुद्धि ऊँची उड़ान भरने में असमर्थ है। बिना शिक्षा सारी गणना दस ऊंगलियों तक सीमित रह जाती है और सारा गणित नमक, तेल, लकड़ी व आटा पर समाप्त हो जाता है। यह भी सत्य है कि जिस खेत में बहुत दिनों तक कोई फसल नहीं बोई जाती तथा वर्षों खाली पड़ा रहता है वह खेत ऊर्जा अर्जित करता रहता है उसी तरह से नारी जगत भी है।

ज्ञान की फसल जब बोई जायेगी तो यह सम्भावना है कि नारी पुरूषों से भी आगे निकल जाये और यह दिन पृथ्वी के लिये सौभाग्य का दिन होगा क्योंकि नारी बच्चे की प्रथम शिक्षक होती है और जब वह ज्ञान से लबालब भरी होगी तो बच्चे का मानसिक स्वर उठाने में सहायक होगी और पुरूषों के कन्धों का भार हल्का होगा। जो ठोकर खाकर गिर सकता है वह सहारा पाकर उठ सकता है। जो भूल से भटक सकता है वह सही संकेत मिलने पर सही मार्ग पर आ सकता है। जो प्रमाद में अपने अधिकारों की माँग के लिये सो सकता है वह हिलाने-डुलाने पर नींद से जाग सकता है और जो भी जब नींद से जागता है उसके लिये तभी सवेरा शुरू हो जाता है। नारी जगत के लिये शिक्षा नये सवेरे की शुरुआत है जिसका कदम-कदम पर स्वागत किया जाना चाहिए। इस देश का यह सौभाग्य रहा है कि यहाँ समय-समय पर कुरीतियों व अन्याय के विरूद्ध धर्म युद्ध छिड़ता रहा है तथा शोषित जन की मुक्ति का संघर्ष सतत चलता रहा है। इस तरह के संघर्षों में शुरु में असफलता का सामना करना पड़ता है परन्तु शुभ कार्य में विफलता भी प्रेरणा की एक लहर छोड़ सकती है जो आगे चलकर सफलता बन जाती है।

बुरे काम में सफल होने से शुभ कार्य में असफल होना अच्छा है। यदि सती प्रथा के विरूद्ध आवाज न उठाई गई होती तो आज भी नारी उसी यातना में जी रही होती। नमन है उनको जिन्होंने शुरू में संघर्ष किया तथा छोटी चिनगारी जलाई। जो चिनगारी शुरू में छोटी दिखाई पड़ती है वही एक दिन पूरे महावन को जला देती है। जिन लोगों ने शुरू में नारी शिक्षा का आन्दोलन चलाया उन्हें पग-पग पर कठिनाईयों का सामना करना पड़ा था परन्तु उनके विवेक के सामने एक दिन सबको नतमस्तक होना पड़ा। असत्य की नियति यही है कि उसे सदा के लिये बचाया नहीं जा सकता। सत्य का सौभाग्य यह है कि उसे सदा के लिये दबाया नहीं जा सकता। सत्य का सूर्य चाहे जितनी आग से गुजरे सदा जीवन व प्रकाश ही देता है। असत्य की काली रात चाहे जितनी भयानक मालूम हो प्रभात की पदचाप सुनते ही अचानक खिसक जाती है। एक छोटा सा दीपक शदियों का अन्धकार मिटाने के लिये काफी है। एक छोटे से बीज की इतनी क्षमता है कि वह सारी पृथ्वी को हरा भरा कर सकता है। केवल कुछ काल तक उससे फूल खिलाकर बीजों को बोने व बचाने की जरुरत है। भारत ने एक लम्बे समय तक नारी के भीतर छिपी क्षमताओं का उपयोग नहीं किया तथा उसे अपनी पूरी सम्भावनाओं को उजागर करने का अवसर नहीं दिया।

परिणाम यह हुआ कि भारत जो एक दिन सोने की चिड़िया कहलाता था पतन की ओर खिसकता चला गया तथा एक बहुत लम्बे काल तक गुलाम रहा। पति पलायनवादी व पत्नी घर से पनघट तक सीमित रहकर सन्तुष्ट होते रहे। संघर्ष करने की क्षमता का विकास नहीं हुआ। कितने आश्चर्य का विषय है कि गौतम बुद्ध जैसे प्रबुद्ध विचारक ने नारी जाति को दीक्षा देने से शुरु में इंकार कर दिया था और जब विशेष निवेदन पर दीक्षा देना शुरु किया तो कहा था कि पहले मेरा धर्म कभी जराजीर्ण नहीं होता अब पांच सौ वर्ष से अधिक नहीं चलेगा। जब उनके चचेरे भाई आनन्द ने शुरु में दीक्षा से नारी जगत को वंचित करने का कारण पूछा तो बुद्ध ने कहा था कि आनन्द ये औरतें क्रोधी स्वभाव की ईर्ष्या व जलन में जीने वाली मूढ होती हैं। मनुस्मृति में कहा गया कि घर की चारदीवारी के अन्दर भी किसी भी बच्चे या औरत को कोई भी कार्य स्वतंत्र रुप से नहीं करना चाहिये। पत्नी पुत्र व दास के कोई स्वतंत्र अधिकार नहीं होते औरत किशोर अवस्था में पिता के सरंक्षण में रहे, विवाह के पश्चात पति के संरक्षण में रहे तथा बुढ़ापे में पुत्र के

सरंक्षण में रहे। मनुस्मृति में नारी को सम्मान देने को तो अवश्य कहा गया परन्तु समान अधिकार स्वीकार नहीं किये गये। जैन धर्म की धारणा रही है कि जब तक साधक पुरूष योनि में जन्म नहीं ले लेता, उसकी मुक्ति सम्भव नहीं है।

चौधरी चरणसिंह ने इन सभी धारणाओं को अस्वीकार किया तथा नारी की समान शिक्षा के अधिकार को स्वीकार किया। उन्होंने आजीवन शिक्षा में समानता के सिद्धान्त की वकालत की। वे सफल ग्रहस्थ के लिये नर नारी दोनों को समान रूप से शिक्षित होना अनिवार्य मानते थे। वास्तव में चौधरी चरणसिंह को पाकर यह धरती धन्य हो गई। नारी जाति उनका उपकार कभी नहीं भुला पायेगी। हमें यह वेदवचन सदैव याद रखना चाहियें कि यदि एक ओर पूरी सेना खड़ी हो और दूसरी ओर विद्या तो विद्या ही जीतती है।

चौधरी साहब के ये शब्द उनकी परिपक्व सोच को प्रकट करते हैं कि—

"विवाहित जीवन की खुशियाँ पति व पत्नी दोनों के शिक्षित होने पर निर्भर करती हैं। एक अयोग्य व अनुत्पादक व्यक्ति के साथ विवाहित होने की अपेक्षा कन्या का अपने पिता के घर रहना ही अच्छा है। वेद के समय नारी सामाजिक जीवन के समस्त कार्यों में समान रूप से भाग लेती थी।"

ये विचार उनकी गरिमा को शिखर स्थान देते हैं। नारी की शिक्षा ही उसका सम्मान है। नारी की शिक्षा ही समाज का असली उत्थान है।

पश्चिम में प्रसिद्ध विचारक अरस्तु ने नारी उत्थान को राष्ट्रउत्थान की नींव मानते हुये कहा था कि

"नारी जाति की अवनति व उन्नति पर ही राष्ट्र की उन्नति या अवनति निर्भर है।"

चौधरी चरणसिंह ने जनमानस को उस वैदिक समय का स्मरण दिलाया जब नारी सभी सामाजिक उत्तरदायित्वों में समान रूप से सहभागी थी। वह समाज बड़भागी है जो नारी को समान शिक्षा देकर धरा पर स्वर्ग उतारता है। इस क्षेत्र में नारी की उपेक्षा आत्मघाती है। उनकी वाणी जो निम्नवृत्ति के लोगों के लिये बाण बन जाती थी, नारी हित में वरदान बनती थी।

■□■

अध्याय 17

चौधरी चरणसिंह का चमत्कारी चिन्तन

देश की समृद्धि के लिये प्रगति के रथ को गांव की ओर मोड़ना होगा यदि यह नहीं होता तो देश उस भवन की तरह होगा जिसकी ठोस नींव ही नहीं है और बिना नींव का हर मकान हर पल हिलता रहता है। चौधरी चरणसिंह की जीवन गाथा अनूठी है। गांव की गरीबी से उठकर दिल्ली की गद्दी तक पहुँचने की उनकी यात्रा हर किसान की नशों में आशा का संचार करने वाली है। उनकी जीवन गाथा दर्शाती है कि मानव की शक्तियों की कोई सीमा नहीं है, उसके उत्थान की कोई सीमा नहीं है। चौधरी का चमत्कार एक मदारी का चमत्कार नहीं है जो हाथ की सफाई से लोगों की आंखों को धोखा देता है, उनका चमत्कार साधारण वेष में असाधारण कर्म का चमत्कार है। संकल्प, संयम व सदाचार का चमत्कार है। अदम्य ऊर्जा, ओज व उत्साह का चमत्कार है। यह वो अनूठा व्यक्तित्व है जो अपनी मान्यताओं पर अडिग रहकर दिल्ली की गद्दी पर पहुँचने से पूर्व न कहीं रुका और न ही किसी दबाव के आगे झुका। उन्होंने हर किसान के अन्तःकरण में एक आन्दोलन की चाह भर दी कि **"कांटे बोये नहीं बीने जाते हैं अधिकार मिलते नहीं छीने जाते हैं। भूतकाल हमको प्रेरणा देता है भविष्य हमको चुनौती देता है अपने पंखों को मजबूत करके उड़ान भरने का निमंत्रण देता है।"**

वर्तमान हमको संघर्ष करने का संकेत देता है। उन्होंने किसानों में अपने अधिकारों के लिये लड़ने के लिये आत्मविश्वास जगाया। जहाँ वे खड़े हो जाते थे नया दल बन जाता था। जब वे चलते थे तो नया मार्ग बनता था। जब वे बोलते थे तो नई चेतना जगती थी। जब वे शहरी कुटिलता पर चोट करते थे तो असंख्य किसान उनका समर्थन करते थे। विकास के पथ पर अग्रसर देश का प्रथम पंग गांव की मिट्टी पर पड़ना चाहिये तभी देश का विकास होगा अन्यथा प्रगति देश को पतन की ओर ले जायेगी क्योंकि खेत और खलिहान की नींव पर खड़ी समृद्धि ही स्थायी हो सकती है और उनका यह विचार समय की कसौटी पर खरा उतरा है। वे जिस दर्शन को हितकर मानते थे उसे अपने जीवन में उतारते थे। उनका भोजन जब वे प्रधानमंत्री थे तब भी साधारण किसान का भोजन था।

सरदार पटेल ने किसानों को जगाया था तथा संघर्ष में डटे रहने को कहा था। उनका मंत्र था कि संघर्ष से हटने में हार है डटे रहने में बेड़ा पार है। महात्मा गांधी ने किसानों के हित में सपने संजोये थे परन्तु जीवन के अन्तिम चरण में उन्हें कहना पड़ा था कि, "मैं खोटा सिक्का हो गया हूँ मेरी कोई नहीं सुनता"। वास्तव

में चौधरी चरणसिंह के साथ ही सच्चे अर्थों में 'किसान युग' का उदय होता है। आज किसान सर्वत्र अपने अधिकारों के लिये संघर्षरत है उसके पीछे उनकी प्राणशक्ति व प्रेरणाशक्ति ही काम कर रही है। एक विचारक ने एक बार कहा था कि "एक छोटी चिगांरी पूरे महावन को जला देती है और एक छोटा बीज पूरी धरती को हरा भरा करने में समर्थ है।"

इस धरती पर जो लोग धर्म के कारण राजनीति से दूर खड़े हो गये हैं उन्होंने राजनीति को पतन के गर्त में गिराने में परोक्ष सहायता की है। चौधरी साहब की धर्म में अकंम्प आस्था थी परन्तु वे आजीवन संसार के तूफानों के बीच खड़े रहे। उन्होंने कीचड़ में कमल की तरह खिलकर यह दिखा दिया कि राजनीति किसी को भी भ्रष्ट नहीं करती, राजनैतिक शक्ति का सहारा लेकर भ्रष्ट लोग स्वयं ही भृष्टाचारी बनते हैं आज के युग में सन्तान मोह सत्ता के गलिहारे में हावी है। चौधरी इसके अपवाद थे। उन्होंने अपने जीवन काल में अपने पुत्र की राजनैतिक क्षेत्र में कोई सहायता नहीं की।

चाहे जो परिस्थिति हो वो अपनी मान्यताओं पर अडिग रहे। वर्तमान युग की स्वच्छन्दता उन्हें पसन्द नहीं थी। अनेकों उनके साथ आये और चले गये परन्तु कोई भी उनको सिद्धान्तों से नहीं हटा पाया। सेठ की तिजोरी उनके आत्मबल से छोटी रही दिल्ली की चमक उनके चरित्र के सामने फीकी रही। आकाश को छूती नगरों की इमारतें उनकी नजर को किसान की झोपडी से नहीं हटा सकीं। सुख सुविधा उनके विश्वास का हरण नहीं कर सके। वे संसार की काजल की कोठरी से जरुर गुजरे पर उनके वस्त्रों पर कोई धब्बा नहीं पाया गया। वास्तव में इतिहास वे ही लोग बनाते हैं जो अपनी जान हथेली पर लेकर चलते हैं।

इतिहास नहीं होता उनका जो
मीठे वचन बोलते हैं
इतिहास सदां होता उनका
जो आंधी में पंख खोलते हैं।

इतिहास की धारा में एक नया मोड़ देने वाले चौधरी चरणसिंह ने कुछ अमूल्य विचार दिये जिनका प्रभाव कभी भी कम नहीं होगा। इन विचारों की एक झलक पुस्तक के इस अध्याय में व्याख्या सहित दी जा रही है यदि उसका एक भी अंश पाठकों के मन मस्तिष्क को आन्दोलित करने में समर्थ रहा तो यह पुस्तक जीवन गीता बन जायेगी।

शास्त्रों में कहा गया है कि "जो मौलिक है उसका विकास होता है जो जीवन के यथार्थ को पहचानता है वह जनता का सबसे बड़ा हितैषी होता है। सौ योजन की सोचने से एक कदम चलना श्रेष्ठ है।" भारत की दुर्दशा का बखान करते हुये चौधरी बोल उठते हैं कि—

"भारत की उन्नति में मुख्य बाधा यह रही है कि हमारा राजनैतिक नेतृत्व विशेषकर हमारे आयोजक शहरी विद्वान रहे हैं। भारत का दुर्भाग्य यह रहा है कि योजना का भवन आदर्शों पर टिकाया गया है और उसमें साधारण समझ का भाव रहा है। गाँवों में शहरों की ओर तीव्र गति से पलायन हो रहा है। कोई भी प्रतिभाशाली आदमी गाँव में बसने को तैयार नहीं है यह देश के लिये दुर्भाग्य का विषय है" इस पर गहन चिन्तन के बाद चौधरी साहब ने कहा कि—

"गाँवों की समस्याओं के निराकरण के लिये ग्रामीण क्षेत्रों में पर्याप्त निवेश ही एक मात्र उपाय है। यही एक ऐसा निदान है जिसकी सहायता से गाँवों से शहरों की ओर तेजी से हो रहा पलायन रुक सकेगा।"

नौकरीशाही देश की छाती पर सवार है। अपव्यय उसकी जीवन शैली है विलासतापूर्ण वस्तुओं का भण्डार इकट्ठा करना उनका शौक हैं। चौधरी साहब इस समस्या का समाधान देते हुये बोल उठते हैं कि—

"हमे नौकरशाही के विस्तार इससे भी अधिक फिजूलखर्ची को बिलकुल ही समाप्त करना चाहिये। साथ ही साथ विलासतापूर्ण वस्तुओं की व्यवस्था के लिये व्यय को समाप्त करना चाहिये और भारी उद्योगों के आगे के प्रसार की गति को धीमा करना चाहिये। इस प्रकार जो वित्तीय संसाधान उपलब्ध होगें उन्हें कृषि उत्पादन की और स्थानान्तरित कर देना चाहिये और गाँवों की सड़कों, स्कूलों, अस्पतालों तथा स्वच्छता की सुविधाओं के जुटाने में लगा दिया जाना चाहिये।"

चौधरी साहब चाहते थे कि अफसरों पर किया गया उपव्यय अनुत्पादक है, विलासिता निन्दनीय है, भारी उद्योगों का जाल देश की छाती पर सवार हैं। नौकरशाही का विस्तार व्यर्थ है जबकि गाँवों में शिक्षा स्वास्थ्य, सड़कों की व्यवस्था जुटाना आज की अनिवार्य आवश्यकता है। यह आज का युगधर्म है। बहुजन हिताय बहुजन सुखाय की नीति अपनाना आज की समझदारी है। पश्चिमी सभ्यता

की नकल देश को दुख के गर्त में धकेल देगी ऐसी धारणा रखने वाले चौधरी भारतीय संस्कृति को विदेशी सभ्यता से श्रेष्ठ मानते थे तथा भारत का विकास पुरातन मूल्यों की छाया में करने के पक्षधर चौधरी बोल उठते हैं कि—

"हमारे वैज्ञानिकों को यह बात ध्यान में रखकर आगे बढ़ना होगा कि यदि राष्ट्र को जीवित रखना है तो वे पश्चिम के सामाजिक आर्थिक ढांचे का अनुसरण नहीं कर सकते।"

पश्चिम में आज परिवार बिखरें है। विवाह का तुरन्त बाद तलाक की स्थिति है। पश्चिम के विचारक स्वीकार कर रहे हैं कि इस तेज गति से भागते व क्षण-क्षण बदलते युग में संयुक्त परिवार व आजीवन चलने वाले विवाह बीते युग की बात होते जा रहे हैं। चौधरी साहब जीवन के पुरातन मूल्यों के पक्षधर थे वे बोल उठते हैं कि—

"हमें, संस्कृति में जो श्रेष्ठ है उसे अपनाना होगा और संयुक्त परिवार पद्धति को बचाना होगा।"

शिष्टाचार, सदाचार व संस्कृति के प्रबल समर्थक चौधरी बोल उठते हैं कि कटु वचन बोलने से मौन रहना श्रेष्ठ है। जीवन परस्पर निर्भर है, वस्त्र, व्यवहार, बोली ऐसी नहीं होनी चाहिये जिस पर लोग उँगलियां उठाने को विवश हों। जीवन पुरूषार्थ, परमार्थ व परिहास का मिश्रण है परिहास प्रसन्नता पैदा करता है परन्तु इस विषय पर चौधरी चेतावनी देते हुये बोल उठते है कि—

"अपने मित्र, परिचित और समव्यस्क व्यक्ति से ही परिहास करना उचित है। शिष्ट परिहास तो वहीं है जिससे प्रसन्नता के साथ शिक्षा भी मिले और बुद्धि भी बढ़े।"

चरित्र का चमत्कार सबके सर पर चढ़कर बोलता है। श्रेष्ठ का संग जीवन की बड़ी उपलब्धि है। सत्संग से प्रतिष्ठा बढ़ती है। चौधरी बोल उठते हैं कि—

"चरित्र की पवित्रता से बढ़कर कोई कोष नहीं हैं......इस अमोघ शक्ति के बल पर ही महापुरूषों ने संसार पर विजय पाई थी।"

यदि देश को बचाना है तो गांधीवादी दृष्टिकोण अपनाना समय की अनिवार्य आवश्यकता है। इस तरह की विचारधारा रखने वाले चौधरी बोल उठते हैं कि—

"गांधी जी की नीतियों पर चलकर ही हम देश को समृद्धि के रास्ते पर ले जा सकते हैं।"

गांधी दर्शन आज भी मंगलमय है और सन् 2000 के बाद भी मंगलमय होगा

इस तरह का उद्घोष करने वाले चौधरी बोल उठते हैं कि यह विचारधारा ना केवल आज वर्तमान में श्रेयकर है यह सन् दो हजार की अर्थ नीति से हटकर देश अपने भाग्य से हट रहा है, दुर्भाग्य को निमंत्रण दे रहा है। आज जो भ्रष्टाचार व बेरोजगारी की विषबेल बढ़ रही है उसका कारण गांधी जी की नीतियों को ठंडे बस्ते में डालना है। गाँधी जी जो कहते थे, करते थे। चौधरी बोल उठते हैं कि जिसका आचरण उदाहरण प्रस्तुत नहीं करता वह किसी को भी प्रेरणा नहीं दे सकता। प्रशासन में किसान बच्चों की भागीदारी देश के लिये वरदान है इस तरह की विचारधारा के धनी चौधरी बोल उठते है कि—

"जब तक प्रशासन के साथ गांव का बच्चा नहीं जुड़ेगा, तब तक स्वराज आकर भी लुटा-लुटा सा रहेगा। किसान संतान को राज्य के प्रशासन में उसकी अपेक्षा कही कम भागीदारी मिली जो उन्हें मिलनी चाहिये थी और जिसके मामले में आज तक गलती की जा रही है।"

भाग्यवादी दर्शन को देश के पतन का कारण मानते हुये चौधरी बोल उठते हैं कि भाग्यवाद को समाप्त करना ही होगा। उन्होंने कहा कि प्रत्येक मानव अपना भाग्यविधाता है अपनी नियति से सन्तुष्ट रहने वाला आंख होते हुये भी अन्धा है। चौधरी बोल उठते हैं कि—

"देश के अधिकांश लोग अपने भाग्य या किस्मत से सन्तुष्ट हो जाते हैं और इस तथ्य पर विश्वास नहीं रकते कि वे अपने भाग्य के स्वयं निर्माता हैं। परिणाम यह है कि हमारा समाज अत्यन्त भाग्यवादी हो गया है और गरीबी की वृद्धि में यह स्थिति सहायक रही है।"

लोग कहते सुने जाते हैं कि समय से पहले तथा भाग्य से ज्यादा कभी किसी को नहीं मिलता। चौधरी साहब पुरूषार्थ को भाग्य से बड़ा मानते थे। उन्होंने साफ शब्दों में कहा था कि मनुष्य भाग्य की कठपुतली नहीं है वरन् परिस्थितियों का निर्माता है।

जनसंख्या नियंत्रण व जातिप्रथा के प्रबल विरोधी चौधरी चरणसिंह जाति प्रथा के जड़मूल विनाश की वकालत करते मिलते हैं तथा जनंसख्या नियन्त्रण के लिये सभी सम्भव उपायों का सहारा लेने का इशारा करते हैं तथा बोल उठते है कि—

"जब तक हम जन्म-दर कम नहीं कर लेते तब तक देश दुर्दशा की खाई से नहीं निकल सकता।"

बेरोजगारी की समस्या भारत के प्राणों पर भारी हैं। यह असंतोष की जननी है। आज का नवयुवक अन्धेरी गली में खड़ा है उसे कोई मार्ग नहीं सूझता। उसे भविष्य की चिन्ता है उसका वर्तमान बांझ है। प्रतिभा का देश से पलायन हो रहा है। यदि देश की अर्थव्यवस्था में यन्त्रों के स्थान पर व्यक्ति के श्रम को अधिक महत्त्व दिया जाये तो यह समस्या स्वतः ही समाप्त हो जायेगी। जिस देश में दो तिहाई लोग अशिक्षित हो वहाँ शिक्षक का बेरोजगार होना शर्म की बात है। जहाँ हजारों पुल, स्कूल अस्पताल बनाये जाने हों वहाँ इन्जीनियर का बेरोजगार रहना नीतिगत त्रुटि है। चौधरी बोल उठते हैं कि—

"हमारी अर्थव्यवस्था ने बेरोजगारी को तीव्र गति से बढ़ाने में प्रमुख भूमिका निभाई है। बेरोजगारी का कैन्सर हमारी राष्ट्रशक्ति को खाये जा रहा है।"

स्वास्थ्य के प्रति सजग रहो और पूर्वजों के समग्र स्वास्थ्य के नियमों का पालन करो। पूर्वजों के संदेश को आकाशी समझना सबसे बड़ी भूल है। पूर्वजों ने सारे विश्व में अपने पौरुष व पराक्रम से हलचल मचाई वह हमारे लिये केवल दिव्यास्वप्न ना बने। उनके आदर्श को धरती की धूल में उतारकर हम उनके सच्चे वंशज बने इस तरह की परामर्श देने वाले चौधरी स्वास्थ्य लाभ के लिये प्रातःकाल ठहलना व व्यायाम को आवश्यक मानते हैं। वे बोल उठते हैं कि—

"ठहलने का व्यायाम बड़ा सरल, गुणकारी और लाभप्रद है।" नंगे पैर हरी अथवा ओस वाली घास पर घूमने से नेत्र, दिल व दिमाग को फायदा पहुँचता है। शुद्ध वायु हमारे लिये सुधा है दूषित वायु हलाहल।

प्रसन्नचित रहो। चिन्ता की चक्की में मत पिसो तभी स्वस्थ रह सकते हो। स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ आत्मा बसती है। पर निर्भरता दुख की जननी है। जो देश दूसरे देशों की दया पर निर्भर है वह स्वाभिमान से सर उठाकर खड़ा होने में असमर्थ होगा इस तरह का विचार रखने वाले चौधरी सादगी के साथ स्वाबलंवन के भी पक्षधर थे। वे बोल उठते हैं कि—

"आज हमारे लिये यह शर्मनाक बात है कि भारत की अर्थव्यवस्था विदेशी पूँजी की दयनीय निर्भरता से ग्रसित है। स्वदेशी भावना, आत्म निर्भरता की भावना और स्वावलम्बी होने के लिये जनता को दृढ़ निश्चयी बनाती है। यह एक ऐसी प्रवृत्ति है जो किसी राष्ट्र को महान

बनाती है। पंडित नेहरू की विदेशी पूँजी और विदेशी प्रौद्योगिकी की निर्भरता की नीतियों ने देश के जीवन संचारक रक्त को दुर्बल बना दिया है। विदेशी सहायता गरीब प्राप्त कर्त्ता को उसकी आंखों में ही गिरा देती है।"

चौधरी साहब के कहने का अर्थ था कि जो अपनी ही नजरों में ही गिर जाता है धरती का सबसे अभागा होता है जो देश पर निर्भर होता है वह पतन के गर्त में गिर जाता है।

अरविन्द ने कहा था कि भारत ने एक छिन्न भिन्न टूटी-फूटी स्वतंत्रता प्राप्त की है। यदि भारत को पुनः महान बनना है तो एकता के सूत्र में बंधना होगा। चौधरी चरणसिंह इस बिखराव की प्रवृत्ति के प्रति सचेत थे तथा कहा करते थे कि यह देश विघटनकारी प्रवृत्तियों से भरा हुआ है हिन्दी ही भारत की राष्ट्रभाषा हो सकती है जो पूरे देश को एकता के सूत्र में बांध सकती है। पूरे देश में एक भाषा ऐसी अवश्य होनी चाहिये जो देश के प्रत्येक भाग में समझी जाती हो। चौधरी बोल उठते हैं कि—

"जिस देश में एक भाषा नहीं होगी, वह देश राष्ट्रीयता के तौर पर मजबूत नहीं रह सकता।"

पूरे देश में ऐसा वातावरण पैदा किया जाना चाहिये कि सरकारी कामकाज की भाषा हिन्दी बना दी जाये और जब तक ऐसा नहीं किया जाता राष्ट्रीय एकता के धागे मजबूत नहीं हो सकते। वे बोल उठते है कि हर दृष्टि से हिन्दी समृद्ध भाषा है और केवल हिन्दी को ही राष्ट्रभाषा के पद पर आसीन किया जा सकता है।

भारी उद्योग देश में कुछ क्षेत्रों में जरुरी हो सकते हैं लेकिन उनको सीमा से अधिक प्रोत्साहन देना देश के हित में नहीं होगा इस तरह के विचार रखने वाले चौधरी चरणसिंह बोल उठते हैं कि—

"मैं भारी उद्योगों का विरोधी नहीं हूँ लेकिन हमेशा यह बात ध्यान में रखने की है कि भारी उद्योग आदमी को बेकार ना बना दे।"

जीवन मे प्रत्येक कर्म को जनकल्याण की कसौटी पर कसा जाना चाहिये। जहाँ करोड़ों हाथ रोजगार मांग रहे हों वहाँ मानव शक्ति को केन्द पर रखकर ही कर्म क्षेत्र में उतरना होगा। अपनी निंजता नकल से बड़ी है। यह कितने दुर्भाग्य

की बात है कि सज्जन की सरकार नहीं सुनती जब किसान हथियार उठाने को तैयार होते हैं तब सरकार की आंख खुलती है। चौधरी बोल उठते हैं कि—

"भारत सरकार तभी किसानों की कठिनाईयों पर ध्यान देगी जब लोग लगभग विद्रोह करने को तैयार हो जायेंगे।"

"कृषि उद्योग की अपेक्षा अधिक महत्त्वपूर्ण है"—इस तरह का विचार रखने वाले चौधरी का हर शब्द कृषि व श्रम को सर्वोपरि मूल्य देता मिलता है। कृषि अग्रदूत की भूमिका निभाती है तथा श्रम पूरी व्यवस्था का आधार है। गांव के उत्थान में देश का सौभाग्य छिपा है इस तरह की विचारधारा रखने वाले चौधरी बोल उठते हैं कि—

"देश की प्रगति तभी होगी जब कृषि उन्नतिशील होगी और गावों का विकास होगा। किसान व गांव के आत्मनिर्भर होने से ही सारा देश आत्मनिर्भर होगा। यदि किसान खुशहाल होगा, अधिक पैसा कमायेगा तो अधिक खर्च करेगा और उसका लाभ शहर वाले दुकानदारों को होगा।"

चौपालों को सांस्कृतिक जीवन की दूरी बताने वाले चरणसिंह आजीवन चौपालों को नहीं भूले और गांव की चौपालें भी उन्हें नहीं भुला सकीं।

सन् 1977 में एक लम्बे अन्तराल के बाद देश की राजनीति के करवट बदली। कांग्रेस को चुनाव मे पराजय का मुंह देखना पड़ा। जनता पार्टी भारी बहुमत से विजयी हुई। इस लोकसभा के चुनाव में लोकनायक जयप्रकाश नारायण तथा चौधरी साहब ने महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। जय प्रकाश नारायण को एक बार आजादी से पूर्व महात्मा गांधी ने बुलाया था तथा उनसे कहा था कि—

"मैं तुम्हारी बहादुरी का लाभ कांग्रेंस के लिये उठाना चाहता हूँ।"

आजादी के पश्चात जब चीनी आक्रमण से भारत लड़खडाया तो राष्ट्रपति राधाकृष्णनन ने जय प्रकाश जी से कहा था कि

"जय प्रकाश देश की बागडोर संभालने के लिये आगे आईये, यह सिर्फ आप ही कर सकेंगे। जब वे जय प्रकाश श्री बीमार नेहरू से मिलने गये तो नेहरू ने उनसे कहा था कि—

"जय प्रकाश अब इन्तजार किसका कर रहो हो। इस वक्त तुम्हारी जरूरत हैं।"

जय प्रकाश ने यह प्रस्ताव अस्वीकार करते हुये कहा था कि—

"एक स्वस्थ लोकतंत्र के लिये, एक स्वस्थ व सबल विपक्ष की जरुरत होती है और हम सबको उसे बनाने में लगना चाहिये क्योंकि स्वस्थ लोकतंत्र ही भारत का भविष्य है।"

5 जून सन् 1974 को पटना में भाषण देते हुये सम्पूर्ण क्रान्ति का नारा दिया था उन्होंने कहा था कि—

"इसके उद्देश्य बहुत दूरगामी हैं, भारतीय लोकतंत्र को वास्तविक तथा सुदृढ़ बनाना, जनता का सच्चा राज्य स्थापित करना, समाज में अन्याय, शोषण आदि को निर्मूल करना; एक नैतिक सांस्कृतिक और शैक्षणिक क्रान्ति करना, नया बिहार बनाना और अन्त में जाकर एक नया भारत बनाना, शांतिपूर्ण लोक-शक्ति जगाना और उसे संगठित करना और सम्पूर्ण क्रान्ति के अन्तिम ध्येय के साथ सामाजिक परिवर्तन के कार्यक्रम शुरु करना।"

उनका उद्घोष था कि अकेला शासन ही ना बदले बल्कि व्यक्ति भी बदले और व्यक्ति के बदलाव के साथ समाज भी बदले। वे कहते थे कि खूनी क्रान्ति नहीं गांधी जी के अहिंसा के मार्ग से ही सम्पूर्ण क्रान्ति लाना उनका उद्देश्य हैं। उन्होंने यह भी कहा था कि भौतिकवाद से परे जाकर अच्छाई की प्रेरणा तलाशनी होगी क्योंकि भौतिकवाद के पास मनुष्य को अच्छा बनाने की कोई तर्क संगत प्रेरणा नहीं है। लोकनायक जय प्रकाश ने जनता दल की सरकार लाने में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया परन्तु सरकार में कोई भागीदारी नहीं की ओर जब जनता दल की सरकार में चौधरी चरणसिंह ने एक सत्ताईस सूत्री कार्यक्रम तैयार किया था जिसका हर शब्द उनकी निष्ठा व गहन चिन्ता उजागर करता है। यह कार्यक्रम यह दर्शाता है कि लोक सेवक का दायित्व गहन है। सत्ता की कुर्सी भोग के लिये नहीं गहन प्रयोग के लिये है। सत्ताधीश को जीवन संग्राम के चौराहे पर अपनी परीक्षा देनी है। जनता का विश्वास जीते बिना सरकार को एक दिन भी सत्ता में रहने का अधिकार नहीं है। लोकतंत्र की जड़े स्वतंत्रता की हवा में ही मजबूत होती हैं। उनकी यह अनूठा सत्ताईस सूत्री योजना का एक एक अक्षर बन्दनीय है।

उन्होंने लिखा था कि नई सरकार का

(1) पहला काम जनता के विश्वास को पुनः स्थापित करना है।

(2) दूसरा काम देश की पैंसठ करोड़ जनता के भाग्य को बदलने के लिये तेजी से प्रयास करना है।

(3) तीसरा काम जनता के मौलिक अधिकार व न्यायपालिका की स्वतंत्रता को सुरक्षित रखना है।

(4) चौथा काम स्वच्छ व सक्षम प्रशासन की बहाली सुनिश्चित करता है।

(5) पाँचवा काम भ्रष्टाचार जो ऊपर से नीचे की ओर फैलता है उसे नष्ट करना है।

(6) छठा काम जनता में पनपती असुरक्षा व अलगाववाद की भावना को दूर करना है।

(7) सातवाँ क़ाम कमजोर वर्ग व पिछडों के विकास हेतु उन्हें अधिक से अधिक सहायता देना होगा।

(8) आठवाँ काम सभी अल्प संख्यकों को आर्थिक, धार्मिक, शैक्षिक और सांस्कृतिक सभी क्षेत्रों में विकास के अवसर देना होगा।

(9) नवां काम मुद्रास्फीति पर नियन्त्रण करना होगा। यह सबसे बड़ी बुराई है।

(10) दसवां काम देश को नैतिक व आर्थिक रूप से शक्तिशाली बनाना होगा।

(11) ग्यारहवां काम व्यापक रूप से फैली गरीबी को दूर करना होगा। देश में किसी बच्चे को भूखा नहीं सोने दिया जायेगा।

(12) बारहवां काम बेरोजगारी को दूर करना होगा। रोजगार विस्तार को प्राथमिकता दी जायेगी।

(13) तेरहवा काम जनसंख्या में हो रही बढ़ोत्तरी पर लगाम लगानी होगी।

(14) चौहदवां काम यह स्वीकार करना होगा कि कृषि भारत का मूल उद्योग है। सरकार का यह दायित्व है कि वह यह सुनिश्चित करे कि कृषकों को उनके श्रम का उचित प्रतिफल मिलें।

(15) पन्द्रहवां काम किसान को बिचौलियों के चंगुल से मुक्त करना होगा। कोई भी किसान जब तक अपंग ना हो, अथवा मानसिक रूप से विकृत ना हो अपना भूमि पट्टे पर नहीं दे सकेंगा।

(16) सोलहवां काम शहरों व देहातों का दिन पर दिन चौड़ी होती खाई को पाटना होगा, रोकना होगा।

(17) सत्रहवां काम ग्रामीण जनता को अधिकाधिक सुविधा देकर उनके विश्वास को जीतना होगा।

(18) अठाहरवां काम ग्रामीण भारत के लिये काम के बदले अनाज तथा रोजगार गारन्टी जैसे कार्यक्रम लागू करने होंगे।

(19) उन्नीसवां काम सरकार ऐसी आत्मनिर्भर उद्योग व्यवस्था कायम करेगी जिसमें अधिक से अधिक रोजगार के अवसर उपलब्ध होंगे तथा विकास के फल का समाज के विभिन्न वर्गों में समान तथा न्यायपूर्ण वितरण करना होगा।

(20) बीसवां सरकार को मौजूदा आर्थिक संकट से उबरना होगा।

(21) इक्कीसवां देश के आर्थिक विकास के लिये श्रमिक की महत्त्वपूर्ण भूमिका है अत: देश की आर्थिक समस्याओं के समाधान हेतु उनसे संवाद करना होगा।

(22) बाइसवां लघु उद्योगों की स्थापना से मुंह नहीं चुराना है।

(23) तेईसवां सरकार चुनावी कानूनों में ऐसे परिवर्तन करेगी जिससे राजनैतिक भ्रष्टाचार समाप्त हो।

(24) चौबीसवां सरकार प्रत्येक बच्चे के लिये प्राथमिक तथा रचनात्मक शिक्षा की व्यवस्था करेगी।

(25) पच्चीसवां भारत को राष्ट्रीय हितों को सुरक्षित रखते हुये गुट निरपेक्षता की नीति का अनुसरण करेगी।

(26) छब्बीसवां प्रत्येक भाषा के पूर्ण विकास के अवसर दिये जायेंगे।

(27) सत्ताईसवां सरकार अपनी वैज्ञानिक प्रतिभाओं का आह्वान करेगी कि वे अपनी ऊर्जा राष्ट्रनिर्माण को समर्पित करें।

इन सभी सूत्रों से सही उजागर होता है कि चौधरी साहब देश के भवन की नींव मजबूत बनाना चाहते हैं जिस देश में बहुमत का हित उपेक्षित रहता है, वह पतन के गर्त में गिर जाता है। वे ही लोग देश के प्राणों को गति दे सकते हैं जिनके नेत्र यथार्थ को पहचानते हैं। व्यक्ति वो सफल होता है जो अपनी सबसे बड़ी कमजोरी को सबसे पहले पहचान कर उसको बाहर निकाल देता है।

महर्षि अरविन्द ने एक बार कहा था कि अच्छा बोलना अच्छा है, अच्छे कर्म करना और भी अच्छा है। परन्तु ऐसा कभी भी नहीं होना चाहिये कि शब्द बड़े हो और कर्म छोटा। कर्म बड़ा और शब्द छोटे होने चाहिये। चौधरी साहब टनों सिद्धान्त व रत्ती भर अभ्यास के विरोधी थे। सौ योजन की सोचने से एक कदम चलना श्रेष्ठ है। मंचों से पृथ्वी पर स्वर्ग उतारने की नेतागण चर्चा करते रहते हैं।

समाज सुधारक समाज में आमूल क्रान्ति की गुहार करते सुने जाते हैं। प्रशासन में बैठे नीति निर्धारक अधिकारी ग्राम उत्थान को कृषि नीति का मूलमंत्र बनाने की चर्चा करते हैं। शिक्षा में व्यापक सुधार की आवश्यकता पर बल दिया जाता है। परन्तु उनको व्यवहार में कभी भी नहीं लाया जाता इस स्थिति से खिन्न होकर चौधरी बोल उठते हैं कि—

''अफसोस हमारे कार्यकर्त्ता, हमारे प्रतिनिधि, हमारे संभ्रान्त लोग या नेतागण ऐसी कोई आवश्यकता महसूस नहीं करतें न ही हमारी शिक्षा प्रणाली को बिल्कुल बदलने या कम से कम सुधारने के लिये कोई व्यवहारिक कदम उठाया गया हैं—हालांकि इसी जरूरत को लेकर बयानबाजी तो हर कोई करता रहता है।"

सोचने से नहीं चलने से मार्ग बनता है बादलों के गरजनें से नहीं बरसने से धरती की प्यास बुझती है। संगठन से शक्ति मिलती है। सम्मेलनों मे सोच मिलती हैं, सत्संग से समझ मिलती है। जिसकी मनस्थिति ठीक है वही परिस्थिति बदल सकता है। जो जानते हैं वे ही जना सकते हैं जो जागे हैं वे ही जगा सकते हैं। भारत की समस्याओं का समाधान विषय पर बोलते हुये उन्होंने एक बार जो कहा वह उस समय भी सार्थक था आज भी सार्थक है आने वाले समय में भी सार्थक होगा। चौधरी बोल उठते हैं कि—

"देश के वही राजनैतिक दल या नेता जनता को जगा सकते है जो अपनी मातृभूमि की परिस्थिति को समझते हैं, जो ये समझते हैं कि गांव और गन्दी बस्तियों की क्या स्थिति है यह वे लोग नहीं कर सकते जिन्हें जन्म से ही सुख-वैभव मिला है और जिन्होंने कभी गरीबी नही देखी है और उसका अनुभव नहीं किया है। वह नेता ग्रामीण शिक्षित नवयुवकों को संगठित करेंगे ताकि वे अब अधिक समय तक अन्याय या शोषण को सहन न करें और यही वे नवयुवक हैं जो भारत की दो अलग-अलग "दुनियाँ" की गहरी खाई को पाट देंगे और राजनैतिक तथा प्रशासन दोनों ही क्षेत्रों में विश्वसनीय भारतीय नेतृत्व के लिये नये प्रकार की व्यवस्था करेंगे। उनकी आंखे और कान अपने देश की पवित्र माटी के प्रति अनुकूल होंगे। ये वही लोग हैं जो भारत की समस्याओं का समाधान देंगे।"

यह था चौधरी साहब का ग्रामीण नवयुवकों की शक्ति पर विश्वास जिसको धरती के काटों को बीनने की चिन्ता नहीं है उसका आकाश के नक्षत्रों का ज्ञान व्यर्थ है।

संगठन एक वरदान की तरह है जो व्यक्ति व समाज की नशों में आशा का संचार करता है। भारत की युवा पीढ़ी का एक भाग नास्तिकता के ज्वर से प्रभावित होने लगा था जिसे देखकर चौधरी विचलित हो जाते थे। उन्होंने देख लिया था कि लोग संयम का उपहास उड़ाते थे स्वतंत्रता अराजकता का रूप लेने लगी थी। महान आत्मा की एक ही पहचान होती है कि वह व्यक्तिगत स्वतंत्रता का पुजारी होता है। देश की स्वतंत्रता का सिपाही होता है परन्तु इस स्वतंत्रता को अराजकता नहीं बनने देता। उन्होंने अजमेर सम्मेलन में नवयुवकों को सन्देश देते हुये कहा था कि—

"अजमेर में हमारे विद्वानों को एकत्र होकर इस तथ्य पर विचार करना चाहिये कि वे कौन से तरीके हो सकते हैं? जिनके द्वारा इस प्राचीन भूमि पर वर्तमान भ्रान्त धर्मो को मिटाने का कार्य प्रारंभ किया जाये।"

भ्रान्त सपनों को दूर करना, भ्रान्त कल्पनाओं को दूर करना तथा भ्रान्त धारणाओं को दूर करना ही भ्रान्त धर्मो को मिटाने का कार्य है। जब किसी विचारधारा को फैलने का समय आ जाता है तो उसे फैलने से दुनियाँ की कोई शक्ति नहीं रोक सकती। अब देश में सच्चे धर्म की प्रतिष्ठा समय आ गया है। अब देश नास्तिकता व नकारात्मकता का बोझा ढोने को तैयार नहीं है। चौधरी साहब का सन्देश आज समय की अनिवार्य आवश्यकता बन चुका है।

जब पढ़ते समय पढ़ने वाला पूरी तन्मयता से पढ़ता है उसका मन टुकड़ों में विभाजित नहीं है तो पढ़ना पाठ होता है और जब सुनने वाला पूरी चेतना इकट्ठी करके सुनता है तो सुनना श्रवण है। जो श्रवण व पाठ की कला नहीं जानता वह मेधावी नहीं बन सकता। चौधरी साहब ने जीवन के लिये अमूल्य सूत्र दिये और ये सूत्र जीवन निर्माण की कला सिखाते हैं। स्वयं के स्वरूप का सृजन पृथ्वी पर अनूठा सृजन है। स्वयं का निर्माण अनूठी कला और उनका दर्शन सुनने की कला पर महत्व देता है। जो ठीक से सुन नहीं सकता उसका मन भागा हुआ और जिसका मन क्षण भर को भी ठहराना नहीं जानता वह अभागा है। चौधरी साहब बोल उठते हैं कि—

"अगर कोई सम्बोधन करे तो उसकी बात ध्यान से सुननी चाहिये। उदासीनता प्रकट करना अशिष्टता है। दूसरे की बात के बीच में बार बार यह पूछना कि आपने क्या कहा है? सिद्ध करता है कि आप उसकी बात गौर से नहीं सुन रहे हैं। जहां चार आदमी बात कर रहे हो उनके बीच अखबार या पुस्तक पढ़ना उचित नहीं है।"

चौधरी साहब जानते थे कि थोड़ा ही ज्ञात है बहुत अज्ञात है और बहुत कुछ अज्ञेय भी है। जो अपने आपको पूर्ण ज्ञानी मानता है सबसे बड़ा अज्ञानी है। परमात्मा के सागर से, बुद्धि बाल्टी भर ही समझ आती है। इसी कारण वे बोल उठते हैं कि

"यह आवश्यक नहीं है कि जो बात आपके अनुभव में नहीं आई वह अवश्य ही गलत हो।"

वास्तव में जीवन रेल की पटरी नहीं रहस्य है जो इसे रहस्य मानकर जीता है समझदार है। चौधरी साहब ने कहा था कि मैंने अपने बचपन के दिनों में जिन लोगों से प्रेरणा ली थी उनमें राजा महेन्द्रप्रताप का स्थान बहुत ऊँचा था। राजा महेन्द्रप्रताप ने कहा था कि दुख व अज्ञान के विरूद्ध संघर्ष करना ही असली सेवा है। उन्होंने यह भी कहा था कि कर्म और विकास का नाम ही जीवन है यदि कर्म जीवन को विकास नहीं विनाश की ओर ले जाता है तो वह कर्म त्याज्य है। जीवन के प्रति मेरी श्रद्धा ही मेरी संचालन शक्ति है। मानव जाति जो विनाश के कगार पर खड़ी है उसे बचाना ही आज का युगधर्म है। उन्होंने कहा था कि कुछ लोग होते है जिनकी मौजूदगी में कर्म व वचन दोनों से ज्यादा बोलती है। समतावादी समाज का नारा देने वाले रूस में आज मजदूर का जीवन स्तर शासकों से बहुत नीचा है। सही शिक्षा वही है जिसमें बच्चा पढ़ते-पढ़ते रोजगार पाने में समर्थ हो जाये। धन्यभागी हैं वे लोग जिनको प्रकृति अधिक उत्थान के पावन कर्म में लगाती है। कोई भी संगठन बना कर देख लो उसमें बुद्धिमान लोग ही शीर्ष पर बैठे मिलेंगे। शिक्षा के बिना मस्तक खाली ढोल होता है। विज्ञान की देन को विनाश मत करने दो उसे विकास में लगाओ। यदि जीवन में कुछ सार्थक करना चाहते हो तो आदत व अहंकार दो से छुट्टी पालो तथा सेवा व व्यापक दृष्टि कोण का वरण कर लो। इस तरह के अनेक प्रेरणादायी विचारों के जन्मदाता महात्यागी महेन्द्रप्रताप, चौधरी साहब के प्रेरणा स्त्रोत थे। राजा साहब ने कहा था अन्याय को गद्दी से उतार कर न्याय को सिंहासन पर बिठाना ही मेरे जीवन का लक्ष्य है। सारा

संसार सौंदर्य, सदाचार, सबलता, सद्ज्ञान व सिद्धि पांच गुणों से प्रभावित होता है। मेरा काम आस्तिकों की अन्धी श्रद्धा व नास्तिकों के अन्धे विरोध की प्रवृति को ध्वस्त करना है। किसी भी संगठन की सफलता सक्रिय व समर्पित कार्यकर्ताओं पर निर्भर करती है। उन्होंने कहा था आज मानव जाति एक दोराहे पर खड़ी है जहां से एक रास्ता समूल विनाश की ओर जाता है और दूसरा धरती के पार दूसरे ग्रहों की यात्रा पर ले जाता है। मानव जाति के लिये विकास व विनाश दोनो रास्ते खुले हैं। चौधरी चरणसिंह उन्हीं की तर्ज पर बोल उंठते हैं कि—

"हठीली रुढ़िवादिता ने जनता के जीवन की प्रक्रिया को जटिल बना दिया है।.... हमारे देश को एक बार फिर महान और शानदार बनाने के लिये सभी प्रयत्न व योजनाएं ऐसी होनी चाहिये कि जिनसे गरीबी मिट जाये, बेरोजगारी समाप्त हो जाये और आर्थिक असमानताओं की खाई को पाट दिया जाये। यह सभी तब तक व्यर्थ ही रहेगा जब तक हमारे देश के लोग काम करने को तैयार नहीं होते और आत्मनिर्भरता की भावना बनाने के लिये उद्यत नहीं हैं। और वे ऐसा तब तक नहीं करेंगे जब तक कि ये ऐसा महसूस न कर लें कि यह विश्व वस्तुतः अधिक यथार्थवादी और मनुष्य अधिकांशतया अपने भाग्य के विधाता हैं। श्रम उतना ही नेक है जितना बुद्धि का कार्य।"

श्रम प्रधान उद्योग ही भारत की अनिवार्य आवश्यकता हैं इस तरह की विचारधारा के सजग प्रहरी चौधरी इस प्रकार के उद्योगों को समतावादी समाज की स्थापना में भी सहायक मानते थे। उन्होंने कहा था कि—

"श्रम प्रधान उद्योग न केवल अधिक उत्पादन करते हैं और न केवल अधिक व्यक्तियों को काम पर लगाते हैं बल्कि हमारे तीसरे उद्देश्य की भी पूर्ति करते हैं। यह तीसरा उद्देश्य समतावादी समाज की स्थापना करना है। ऐसे समतावादी समाज में आर्थिक शक्ति कुछ ही लोगों के हाथ में केन्द्रित नहीं होती और आय के अन्तर अधिक नहीं होते हैं। एक व्यक्ति की आय दूसरे व्यक्ति की आय की कुल असमानताओं का प्रश्न कुटीर उद्योग के मामले में बिलकुल नहीं उठता, जहां कामगार व उसका परिवार स्वयं उद्योग के मालिक होते हैं।"

यही है कि उनकी समतावादी समाज की सोच, व्यक्ति की गरिमा का गुणगान, श्रम का सम्मान।

समतावादी समाज की कल्पना करते हुये महात्मागांधी ने कहा था कि सच्ची आजादी तभी आयेगी जब सत्ताधीश शहरों के आलीशान बंगलों में रहने के मोह का त्याग करके गांव के झोंपड़ों में रहने को तैयार होंगे। उनके अनुसार स्वर्ण युग सपनों से पैदा नहीं होगा, रामराज्य राजमहलों में निवास नहीं करता वह गांव की झोपड़ियों में निवास करता है। उन्होंने साफ शब्दों में कहा था कि—

"स्वर्णयुग तब होता है जब दृढ़तापूर्वक उस चीज को नकारा जाये जिससे लाखों लोग वंचित है। यह नकारने की दृढ़ता हममें यकायक नहीं आ जाती है। सबसे पहले हमें अपने अन्दर ऐसी भावना उत्पन्न करनी है कि हम उन सब चीजों या सुविधाओं को प्राप्त करने का मोह त्यागे जिनसे लाखों वंचित हैं। उसके पश्चात् यथाशीध्र हमें अपने जीवन को इसी मानसिकता के अनुरूप ढालना चाहिये।"

चौधरी साहब ने गांधी जी की इसी देशना को अपने जीवन में उतारा। यदि देश के सौ नेता भी चौधरी के बताये मार्ग का अनुसरण करते तो भारत की हर समस्या का समाधान हो जाता और पूरा भारत समता, सहजता व सरलता की जिन्दगी जीता। वास्तव में ये तीन जीवन के वरदान हैं। जिनके जीवन में संयम, समता, सहजता व सरलता के चार स्तंभ हैं देवता भी उनकी वन्दना करते हैं।

चौधरी चरणसिंह व इन्दिरा गांधी कभी एक मंच पर जुड़े कभी विपरीत धारा में बहे परन्तु इतना अवश्य है कि चौधरी साहब की विचारधारा एक अवसर पर इन्दिरा गांधी को भी प्रभावित करने लगी थी तथा वह ग्राम विकास का गीत गाने लगी थी। इस विषय पर इन्दिरा गांधी ने एक अवसर पर कहा था कि—

"हमारी भर्ती पद्धति की नीति ऐसी होनी चाहिये कि यह अधिकाधिक रूप में ग्रामोन्मुख हो। यह इस लिये नहीं कि इसके पीछे कोई आदर्शवाद है बल्कि यह इस कठोर तथ्य पर आधारित है कि भारत के अधिकांश लोग देहाती क्षेत्रों में रहते हैं और वे भविष्य में भी रहते रहेंगे। हम भारत को औद्योगीकृत करना चाहते हैं लेकिन हम इस बात से पूर्णतया आश्वस्त हैं कि अधिकांशतया कृषि समुदाय ही बना रहेगा क्योंकि हमारी मुख्य आवश्यकता अन्न है और हम कोई भी परिस्थिति स्वीकार नहीं कर सकते जिससे अन्न का अभाव हो।"

चौधरी चरणसिंह पहले ही कह चुके थे कि वे बड़े उद्योगों के विरोधी नहीं हैं, कृषि व श्रम के पक्षधर हैं उन्होंने स्वयं कहा था कि—

"यह सत्य है कि औद्योगीकरण की आवश्यकता है यदि हम अपनी जनता के जीवन स्तर को ऊँचा करना चाहे लेकिन यह औद्योगीकरण तभी हो सकेगा और इसके फलस्वरूप हमारे रहन सहन का स्तर उसी सीमा तक ऊँचा होगा जब हम कामगारों को कृषि से उठाकर कृषितर व्यवसायों में लगा देंगे।" उन्होंने इतना जरूर कहा था कि कृषि की उपेक्षा करके विकास सम्भव नहीं होगा वरन् कृषि के सहारे ही यह औद्योगीकरण अधिक होगा और इसका सुखद परिणाम यह होगा कि इसके सहारे हमारे कामगारों को अधिक काम मिलेगा।

कोई भी मानव अपने स्वभाव को भूलकर विकसित नहीं हो सकता, कोई भी देश अपनी संस्कृति को भूलकर विकसित नहीं हो सकता। कोई भी पेड़ अपनी जड़ों को भूलकर विकसित नहीं हो सकता है। कोई भी समाज अपनी परम्परा को भूलकर विकसित नहीं हो सकता। कोई भी शिष्य अपने गुरू के सिद्धान्तों को भूलकर विकसित नहीं हो सकता। अपने देश, काल व परिस्थिति को समझते हुये अपने ढंग से विकसित होने का संदेश देने वाले चौधरी बोल उठते हैं कि—

"जो देश निरन्तर खाद्यान्न की कमी से पीड़ित हो, जहाँ की जनंसख्या बराबर बढ़ रही हो, जहाँ पूंजीगत संसाधनों की कमी हो और जहाँ कम से कम लोगों का कल्याण हुआ तो वहाँ बिल्कुल ही अलग प्रकार के औद्योगीकरण के मॉडल की आवश्यकता है जो पश्चिमी देशों के कल्याण करने वाले मॉडल से नितान्त भिन्न हो या उस मॉडल से भिन्न हो जिसे सोवियत यूनियन ने स्वीकार किया।"

वास्तव में जो अपने मूल से जुड़ा है वही मौलिक है उसी का विकास होता है। कर्मबल विकास का नाम जीवन है ज्ञानबल विकास का नाम जीवन है। संकल्प बल विकास का नाम जीवन है। जन्म जीवन नही है जीवन वैसा ही होता है जैसा हम उसे बनाते है। जीवन अनगढ़ पत्थर, कच्ची ईट, बिखरे अक्षरों जैसा है उस पत्थर से आदमी किस प्रकार की मूरत बनायेगा यह उस पर निर्भर है। कच्ची ईट को पकाकर मजबूत बनायेगा या पैर रखकर उसे तोड़ देगा यह उस पर निर्भर है। अक्षरों से गीत बनायेगा या गाली, यह उस पर निर्भर है। जीवन वैसा ही है जैसा हम उसे बनाते है देश वैसा ही बन जाता है जैसा नेता उसे बनाते हैं। सितार पर वैसा ही स्वर उठता है जैसा बजाने वाला है। किसी के हाथ उस पर संगीत उठाते है किसी के शोरगुल। कलाकृति बनाने के रंग एक जैसे होते हैं परन्तु कोई उनसे

लाखों में बिकने वाली कलाकृति बना देता है कोई कागज को भी बिगाड़ देता है। सितारों को दोष मत देना अपनी सोच को दोष देना इस तरह की विचारधारा रखने वाले चौधरी चरणसिंह बोल उठते हैं कि—

"किसी भी देश की समृद्धि व गरीबी उस देश के निवासियों की मानसिकता से जानी जा सकती है।"

मैथलीशरण गुप्त ने एक बार काव्यरूप में एक सवाल उठाया था कि—

"हम कौन थे क्या हो
गये हैं और क्या
होगें अभी।
आओ विचारे आज मिलकर ये
समस्यायें सभी।।"

भारत ने एक स्वर्णकाल देखा था जब दूध की नदियां बहती थी। प्रचुर मात्रा में अन्न था और भारत ने जो जीवन रहस्यों की खोज की उसके सामने आज भी सारा संसार नतमस्तक है। जब भी विश्व के कोने में कोई भी धर्म योग ध्यान में गति करना चाहता है, जीवन का दुख, ताप व संताप मिटाना चाहता है उसके चरण भारत की ओर बढ़ने लगते हैं। जीवन व मृत्यु दोनों में मानव का परमहितैषी यह योग विद्या का प्रसाद सदियों से भारत बाँटता रहा है, आज भी बाँट रहा है। इस देश के सिद्धों के चरणों में बड़े से बड़े वैज्ञानिकों को बैठते देखा है। उन्होंने यह स्वीकार किया है कि भारत के पास सद्ज्ञान की अकूत सम्पदा है जिसके जानने के बाद जीवन धन्य हो जाता है। जीवन के सारे भ्रम भस्मीभूत हो जाते हैं। भारत के दुर्भाग्य की कहानी तभी से शुरु होती है जब यहाँ झूठे धर्म की प्रतिष्ठा होने लगती है। प्रतिभावान संसार छोड़कर शन्ति की खोज में वनों को प्रस्थान करने लगते है। जीवन के प्रति उदासी का भाव जड़ जमा लेता है। थोथे आदर्शों के पीछे चलकर ही देश के कर्णाधारों ने देश के हितों को अपार हानि पहुँचाई है। पश्चिमी सभ्यता ने पूरब पर हमला बोल दिया है। देश की प्रतिभा विदेशों को पलायन कर रही है। देश का बहुमत कुपोषण का शिकार है। प्रसवकाल में असंख्य महिलाओं को प्रोटीन से भरपूर भोजन नहीं मिलता। इन सभी समस्याओं का कारण बतातें हुए चौधरी बोल उठते हैं कि :-

"भारत की वर्तमान दुर्दशा का आविर्भाव व्यापक रूप से उसी समय हुआ था जब स्वतंन्त्रता के बाद शीघ्र ही औद्योगिकरण का दुःखद चयन हुआ।"

समझदार पत्थरों से सीढ़ियाँ बनाते हैं ना समझ पत्थरों से सर फोड़ते हैं। देश का अपार धन सार्वजनिक उद्यमों में लगा है और अपवाद छोड़कर सभी उद्यम हानि उठाते रहे है फिर भी सत्ता के शिखर पर बैठे लोगों की नींद नहीं टूटती है इस भयावह स्थिति की ओर इशारा करते हुए चौधरी बोल उठते है कि :-

"देश का दुर्भाग्य यह है कि कुप्रबन्ध के जरिये कुल मिलाकर सार्वजनिक उद्यमों को भारी हानियाँ उठानी पड़ रही हैं और इस तथ्य के बावजूद किसी को भी इसकी चिन्ता नहीं है अथवा यह देखने को कोई तैयार नहीं है कि ऐसा क्यों होता है ?"

चौधरी साहब देश की हर समस्या का समाधान देकर चले गये। उन्होंने अपने पुरूषार्थ के बल पर अपनी अलग पहचान बनाई। सर छोटूराम ने एक बार कहा था कि-

"जो अपने पुरुषार्थ की शक्ति से सबको हिला डालते हैं सब उन्हीं से प्रसन्न रहते हैं।"

चौधरी चरणसिंह भी ऐसे ही पुरुषार्थी थे उनका चमत्कारी प्रभाव मृत्यु के बाद घटा नहीं, बढ़ा है। उनकी सोच आज भी ग्रामीण भारत में असंख्य लोगों को आन्दोलित कर रही है। महात्मा गाँधी ने कहा था कि:-

"मैं एक ऐसा भारत बनाऊगाँ जिसमें गरीब से गरीब भी यह अनुभव करेंगे कि यह उनका देश है उसके निर्माण में उनकी आवाज का महत्व है।"

चौधरी साहब इस तरह के असली भारत के निर्माण की चमत्कारी सोच देकर चले गये। जिस दिन यह सोच व्यवहार में परिणित होगी भारत पुनः अपनी गरिमा के शिखर पर होगा। उन्होंने स्वयं घोषित किया था कि उनका दल गरीबों का दल है। इस विषय पर अपने विचार रखते हुए सन् 1984 में उन्होंनें स्वयं कहा था कि :-

"हमारा दल गरीबों का दल है चाहे वे गरीब गांव के हो चाहे शहर के, चाहे वे उच्च जाति के हों या अनुसूचित जाति के। हमारा दल किसानों व दस्तकारों का दल है चाहे वे किसी धर्म या साम्प्रदाय के हों चाहे वे खेत जोतने वाले स्वामी हों चाहे खेत जोतने वाले मजदूर हों।"

चौधरी चरणसिंह की गणना उन नेताओं में की जाती है जिनकी पीढ़ी आज लुप्तप्राय है वे उन राजनेताओं में अग्रिम पंक्ति में खड़ पाये जाते हैं। जिन्होंने कठिन

से कठिन परीक्षा की घड़ी में अपनी मान्यताओं से किनारा नही किया सिद्धान्तों से समझौता नहीं किया। वन्दनीय वायदों की बलि नहीं चढ़ाई। अपने उद्देश्यों को ठन्डे बस्ते में नहीं डाला। वे आजीवन वन्दन व विद्रोह का स्वर मुखरित करते रहे। वन्दन उसका जो समय की कसौटी पर खरा उतरा है विद्रोह उससे जो जीवन के लिये आत्मघाती है।

"प्रजातन्त्र में वो आलोचना का
अधिकार देते थे।
पुरुषार्थी के हाथ वो
पतवार देते थे।
वे थे अन्धश्रद्धा अन्धविरोध
दोनों के प्रतिकूल
वे विद्रोह से वन्दन को
धार देते थे।"

यह उनके विराट व्यक्तित्व, सजीव सोच, प्रखर पुरुषार्थ के कारण ही है कि उनके पीछे चलने वाला आज चाहे जिस दल में हो उनका नाम लेकर उनके दर्शन की दुहाई देकर उनका सच्चा उत्तराधिकारी कहकर चुनाव की वैतरणी पार करना चाहता है। स्वामी रामतीर्थ ने कहा था कि अवसर को पहचानना ही जीवन है अवसर पहचानते रहो। राष्ट्रहित के लिये प्रयत्न करना ही देवों की आराधना है। चौधरी साहब ने आजीवन किसान हित व राष्ट्रहित में आराधना की।

जीवन की हर समस्या काले धन व काले मन से जुड़ी है। उनके अनुसार काला धन काला मन हर चीज को कलुषित बना देता है। उनकी पारखी आखें देख रही थी कि भारत पतन की ओर खिसक रहा है और उसका कारण बताते हुए उन्होंने कहा था कि:-

"पतन की ओर बढ़ते हुए भारत में राष्ट्रीय तथा व्यक्तिगत चरित्र के साथ सभी क्षेत्रों में गिरावट आई है।"

परन्तु इस घातक दृष्टि को बदला जा सकता है। जब बड़े बदलने को तैयार हो जाते हैं तो छोटों को बदलते देर नहीं लगती जब अन्तःकरण बदल जाता है तो आचरण को बदलते देर नहीं लगती। जब चरित्र बदल जाता है तो चेहरे को बदलते देर नहीं लगती। प्रत्येक विचार, प्रत्येक भाव व प्रत्येक कर्म देश व व्यक्ति

के भाग्य का निर्माण करता है। चौधरी साहब की सोच को जीवन गीता बनाकर ही व्यक्ति व देश का कल्याण है। उनका दर्शन मार्ग व मंजिल दोनों पर कल्याणकारी है। उसका प्रथम पग व परिणाम दोनों हितकर हैं। चौधरी चरणसिंह की स्मृति को शत-शत प्रणाम। उनकी उपस्थिति ही उपदेश थी, उनका आचरण ही आन्दोलन का अग्रदूत था। उनका इशारा ही सन्देश था। उन्होंने जो उपकार उपेक्षित खेत व खलिहानों पर किये है उनकी चर्चा अनन्त काल तक चलती रहेगी। उनका नश्वर शरीर जरुर समाप्त हो गया परन्तु उनके सिद्धान्त हर दिन सबल होते जायेंगे। उनके जैसे उपकारी, ओजस्वी, ऊर्जावान नेता के दर्शन के लिये पृथ्वी को लम्बे समय तक प्रतीक्षा करनी पड़ेगी। यह उन्हीं के सबल नेतृत्व का परिणाम है कि आज कोई भी नेता कोई भी दल किसानों और पिछड़ों का अनदेखी नहीं कर सकता। यदि भगवान राम को सीता वापिस मिल जाती तो राम व रावण का युद्ध टल सकता था यदि पाण्डवों को पाँच गाँव मिल जाते तो महाभारत का युद्ध भी टल सकता था परन्तु चौधरी साहब ने असली भारत के निर्माण के लिये जिस धर्मयुद्ध का श्रीगणेश किया था वह लम्बे समय तक चलेगा और जीत अन्त में गाँव व गरीब की ही होगी। जीत अन्त में हलधर की होगी। यह जीत उसी समय होगी जब हलधर एक मंच पर इकट्ठा होगा और उसकी एक आँख खेत की मेड़ पर और दूसरी दिल्ली की राजगद्दी पर होगी।

■□■

अध्याय 18

श्रद्धा शिखर चौधरी चरणसिंह

गरीबों किसानों ने अब तक जितने भी नेता पैदा किये उनमें सबसे ज्यादा संघर्षशील, सबसे ज्यादा स्पष्टवादी, सबसे ज्यादा निष्ठावान व सत्यनिष्ठ नेता चौधरी चरणसिंह थे। एक विचारक ने एक बार कहा था कि इस पृथ्वी पर चाहे करोड़ों महापुरुष पैदा हो जाये परन्तु जब तक मानव स्वंय ही अपना सुधार करने को तैयार नहीं होता तब तक उसका कोई भला नहीं हो सकता। आज देश को समाज सुधारकों की नहीं स्वयं के सुधारकों की आवश्यकता है। चौधरी साहब अपने लिये नही दूसरो के कल्याण के लिये जीकर चले गये। उनकी आत्मा तभी प्रसन्न होगी जब उनका अधूरा सपना साकार होगा। इन्हीं चरणसिंह के बारे में उच्च पदस्थ लोगों ने जो भाव व्यक्त किये हैं उनका संक्षिप्त विवरण इस अध्याय में दिया जा रहा है।

देश के उच्चपदस्थ व जनमत की राय में
चौ० चरणसिंह का चमत्कारी व्यक्तित्व

"चौधरी चरणसिंह भारतीय किसानों के मसीहा थे।"

आर० वेंकटरमण भूतपूर्व राष्ट्रपति

"चौधरी चरणसिंह महान देशभक्त व ग्रामीण विकास के प्रबल समर्थक थे।"

राजीव गाँधी भूतपूर्व प्रधानमंत्री

"एक सच्चे धरती पुत्र चौधरी साहब को मेहनतकश किसान की सेवाओं के लिये सदैव याद किया जायेगा। उन्होंने अपनी सादगी स्पष्टवादिता एवम् कुशल प्रशासन से सबको प्रभावित किया।"

बलराम जाखड़

"वे किसानों के मसीहा थे।"

आचार्य तुलसी

"चौ०चरणसिंह भारतीयता के जीते जागतें प्रतीक थे।"

चित बसु

"चौधरी चरणसिंह गाँव की जीती जागती तस्वीर थे। वह किसानों के कट्टर

हिमायती थे। वे आजादी की उस पीढ़ी के सदस्य थे जो अब धीरे-धीरे लुप्त होती जा रही है। उन जैसा देशभक्त मैंने दूसरा नहीं देखा।"

अटल बिहारी वाजपेयी

"चौ० चरणसिंह व्यक्ति नहीं वरन् गुणों की खान थे। उनमें एक विलक्षण दूरदृष्टि, सहयोगियों के लिये दर्द, किसान के लिये स्वप्न, देश की एकता और अखंण्डता के लिये कुछ भी करने की लालसा, समाज की कुरीतियों के प्रति रोष तथा समाज सेवा के लिये संकल्प के साथ-साथ सीधी-सादी मनोवृत्ति के दर्शन होते थे।"

बलवंतसिंह रामूवालिया

"चौ० चरणसिंह उन महान विभूतियों में से थे जिन्होंने अपनी कर्मठता, लगन और आम लोगों के विकास के प्रति समर्पण भावना के कारण समाज में अपना अलग स्थान बनाया। आरम्भ से ही उनकी छवि एक कर्मठ कुशल और सत्यवादी नेता की बन गई थी।"

डा० शंकरदयाल शर्मा, राष्ट्रपति भारत सरकार

"चौ० चरणसिंह एक स्वतन्त्रता सेनानी, और महान देशभक्त थे। वे इतिहास पुरुष थे।"

ज्ञानी जैलसिंह भूतपूर्व राष्ट्रपति

"चौ० चरणसिंह एक आदर्श पुरुष थे। उन्होंने सिद्धान्तों के लिये किसी से समझौता नही किया।"

पी० वी० नरसिम्हा राव पूर्व प्रधानमंत्री

"जन जीवन में चौधरी चरणसिंह ने जिन मूल्यों की मर्यादा रक्खी वह हमारे लिये महत्वपूर्ण ही नहीं अमूल्य भी हैं। जीवन के मूल्यों का ह्रास रोकने के लिये हमें चौधरी साहब के जीवन से प्रेरणा मिल सकती है ज्योति मिल सकती है और रास्ता मिल सकता है।"

विश्वनाथ प्रताप सिंह भूतपूर्व प्रधानमंत्री

"चौधरी चरणसिंह की जब हम बात करते हैं तो हम उस मंत्र को याद करते हैं जो गाँधी जी ने दिया था और जिसे चौधरी चरणसिंह ने अपने जीवन में उतारा

था। भारत के विकास का पथ भारत के गाँवों, खेत और खलिहान से होकर गुजरता है। अगर देश को विकसित करना है तो खेत खलिहानों को सरसब्ज बनाना होगा। किसानों के दिलों में एक नया आत्मविश्वास पैदा करना होगा।"

चन्द्रशेखर भूतपूर्व प्रधानमंत्री

"चौधरी चरणसिंह किसानों की समस्याओं को उजागर करने के लिये किसी भी लड़ाई एवं त्याग से नहीं झिझके आवश्यकतानुसार सरकार में बैठकर आवाज बुलन्द की। यदि समय की पुकार हुई तो राजगद्दी का त्याग भी कर दिया।"

चौधरी देवीलाल भूतपूर्व उपप्रधानमंत्री

"चौधरी चरणसिंह जी का जीवन बहुत ही सादा था उनके जीवन में देहात के जीवन की प्रतिमा, आदर्श और गरिमा का दर्शन होता था। वे स्वयं को कृषकों का साथी और मित्र मानते थे।"

शिवराज एन० पाटिल लोकसभा अध्यक्ष

"चौधरी चरणसिंह एक हिम्मती इंसान थे उन्होंने खेतों और खलिहानों से अपनी जिन्दगी शुरु की और उसे तमाम हिन्दुस्तान की जिन्दगी बना दिया उन्होंने जो हरे भरे खेतों के ख्वाब देखे थे उन्हें साकार करने के लिये जबरदस्त मेहनत की। तपती हुई धूप में काम करने वाले किसान भाई उन्हें उतने ही प्यारे थे जितने कि सरहदों के फौजी पहरेदार जिनके बाजुओं पर कोई भी नाज कर सकता है।"

डा० नजमा हेपतुल्ला उपसभापति राज्य सभा

"चौधरी चरणसिंह एक विलक्षण क्षमता वाले व्यक्ति थे। यद्यपि उन्होंने भारत को सर्वोच्च पदों यथा उत्तरप्रदेश के मुख्यमंत्री, केन्द्र के ग्रहमंत्री व वित्तमंत्री तथा भारत के प्रधानमंत्री के रूप में देश की सेवा की फिर भी कभी पथभ्रष्ट नहीं हुए। वे भ्रष्टाचार खासकर राजनैतिक भ्रष्टाचार के प्रबल दुश्मन थे और इस रूप में उन्होंने अपनी कोशिशों को जीते जी जारी रखा।"

जस्टिस एच० आर० खन्ना

उच्चतम न्यायालय के भूतपूर्व न्यायाधीश।

"नई पीढ़ी में चौधरी चरणसिंह सिर्फ सबसे महत्वपूर्ण ही नहीं बल्कि कई मायनों में सबसे ज्यादा असामान्य नेता भी थे। चौधरीचरणसिंह जानते थे कि अपने खेत से किसानों का कितना गहरा जुड़ाव है। वे जानते थे कि सामूहिक खेती मानव

स्वभाव के विरुद्ध है। उन्हें विश्वास था कि सामूहिक या सहकारी खेती से उत्पादन पर बुरा असर पड़ेगा और देश विनाश की ओर अग्रसर होगा।"

मधु लिमये भूतपूर्व संसद सदस्य

चौधरी चरणसिंह ने कहा था कि "केवल हिन्दुस्तान में ही नहीं समूची दुनिया में मजदूरों का दिन एक मई "मजदूर दिवस" के रूप में मनाया जाता है लेकिन कृषि प्रधान होते हुए भी हमारे देश में किसान दिवस नही मनाया जाता यह कितने दुख की बात है। किसान दिवस की सार्थकता तभी पूरी होगी जब किसान को न्याय दिलाने के लिये संघर्ष किया जये और उस संघर्ष के लिये किसान दिवस के दिन संकल्प लिया जाये। "किसान दिवस" की मेरे मन में यही कल्पना है।" चौधरी चरणसिंह भौतिक सुख सुविधाओं से आजीवन परे रहे। वह मंत्री रहे हो, मुख्यमंत्री रहे हो, केन्द्रीय मंत्री, उपप्रधानमंत्री या प्रधानमंत्री के पद पर रहे हो उन्होंने पूरा जीवन एक साधारण किसान की तरह जिया। सच तो यह है भारत की जनता धरापुत्र चरणसिंह को नहीं भूलेगी। **मधु दण्डवते भूतपूर्व केन्द्रीय मंत्री**

"चौधरी चरणसिंह और सरदार बल्लभ भाई पटेल में बहुत सी बातें समान थी। वे सरदार बल्लभ भाई पटेल की तरह देश को कुशल और सशक्त नेतृत्व देने की क्षमता रखते थे।"

प्रो० ह० बलराज मधोक

"चौधरी चरणसिंह ऐसे नेता थे जिन पर जनता का भरोसा था। वे सब के जिनके अधिकारों के लिये लड़ाई करते रहे जनता उन्हें अपना मसीहा मानती थी। वह एक बुद्धिजीवी ही नहीं लेखक और चिंतक भी थे।"

प्रो० जे० डी० सेठी प्रख्यात अर्थशास्त्री

चौधरी चरणसिंह एक व्यक्ति नहीं विचार थे उन्होंने इस देश को गरीबी से छुटकारा दिलाने के लिये एक वैचारिक दर्शन दिया। उनकी ईमानदारी की तो उनके विरोधी भी प्रशंसा करते हैं जो उनके जीवन की अमूल्य निधि थी। "मेरी दृष्टि में चौधरी साहब केवल राजनीतिज्ञ ही नहीं थे बल्कि एक श्रेष्ठ इन्सान थे। उनकी सादगी, ईमानदारी, बड़प्पन और सिद्धान्तवादिता के बहुतेरे दृष्टान्त हैं, उनकी स्मृति मात्र से मेरा मन भर जाता है।"

डा० स्वरूप सिंह भूतपूर्व गर्वनर

"चौधरी चरणसिंह किसी पर भी अपनी बात थोपते नहीं थे। उन्होंने नियम कानून के अतिरिक्त सदव्यवहार की अनेक बाते हमें समझाइ थी। वे भ्रष्टाचार, बेईमानी और गरीबों, विशेषकर ग्रामवासियों पर होने वाले अत्याचार पर क्षुब्ध होते थे। और कई उपायों पर विचार करते थे। साथ ही वे दयालु भी थे। उनके इसी स्वभाव का फायदा चतुर चालाक लोग बहुत उठाते थे। उनके विरुद्ध आरोप लगाने वाले भी उनसे कई बार लाभ उठा ले गये। वे इस युग के भीष्म पितामह थे।"

मधुकर दिघे भूतपूर्व राज्यपाल

"चौधरी साहब का जीवन खुली किताब है जिसे सब पढ़ सकते हैं। हो सकता है आप कई मुद्दो पर उनसे सहमत न हो पर इसका कोई महत्व नहीं, महत्व तो इस बात का है कि हम उनमें एक ऐसे व्यक्ति का दर्शन पाते थे जो निष्कलंक, निस्वार्थ व निर्भय रहा जब अन्य नेतागण नयी योजनाओं, औद्योगिकरण, जीवनस्तर, विदेशी सम्बन्ध आदि की बाते कर रहे थे, चौधरी साहब अनुशासन, शक्ति, निर्भयता, चरित्र निर्माण, निस्वार्थ सेवा, ग्रामोत्थान तथा गतिशील देशभक्ति की शिक्षा दे रहे थे जिनके बिना उपरोक्त लक्ष्य भारत का भविष्य उज्जवल बनाना कदापि सम्भव नहीं है। चौधरी साहब का जीवन चरित्र भविष्य में शोध का विषय होगा। आगामी युग उनके द्वारा किये गये सदकार्यों का सदा सर्वदा ऋणी रहेगा।"

देवीदास आर्य समाजसेवी पत्रकार केन्द्रीय आर्य सभा के प्रधान

"मैंने चौधरी चरणसिंह साहब से ज्यादा सच्चा, देश से मुहब्बत करने वाला, ईमानदार, सीधा-सादा, गाँधी जी के उसूलों पर दिल से अमल करने वाला एक शख्स भी उनसे बेहतर नही पाया। जब मैं उनके मिलता था तो मेरे दिल पर उनकी मुलाकात का बहुत असर होता था। जुबान से जो कहे उस पर अमल करे इस तरह के इंसान दुनिया में बहुत कम मिलते हैं। वह इसी तरह के एक अनोखे इंसान थे।"

मौहम्मद यूनुस सलीम संसद सदस्य

चौधरी चरणसिंह ईमानदारी, सादगी और संयम के प्रतीक थे। वे जिस सादगी से रहते थे वह सारे भारत के लिये आदर्श है। न वे बैंक बैलेन्स छोड़ गये, न चल अथवा अचल सम्पत्ति। प्रमुख उद्योगपति तथा राज्य सभा सदस्य श्री कृष्णकुमार बिड़ला ने कुछ वर्ष पूर्व प्रकाशित एक पुस्तक में लिखा है "धन सम्बन्धी मामलों में चौधरी साहब पूर्ण रूप से बेदाग हैं। उनका व्यक्तिगत जीवन निष्कंलक

है। उनकी आवश्यकताऐं बहुत कम थी। वह गरीबों और किसानों के लिये हमेशा चिन्तित रहते थे।"

सत्यप्रकाश मालवीय भूतपूर्व केन्द्रीय मंत्री

चौधरी साहब किसानों की समस्याओं को समझते थे। उनके लिये दुख दर्द अनुभव करते थे इसलिये हिन्दुस्तान के इतिहास में उनका नाम है। चौधरी साहब की स्पष्टवादिता, ईमानदारी, सादगी, प्रतिबद्धता और प्रमाणिकता की जो छाप है वह राजनीति के क्षेत्र में कार्य करने वाले हर कार्यकर्ता के लिये दीपस्तम्भ है। उनका जितना हम अनुसरण कर सके वह कम है। यदि सही मायने में देश का विकास करना है तो हमें चौधरी साहब के बताये रास्ते पर चलना होगा। तभी हम एक नया हिन्दुस्तान बनाने में कामयाब होंगे।"

लालकृष्ण आडवाणी उपप्रधानमंत्री भारत सरकार

"चौधरी चरणसिंह ने भारत के कौमी मुक्ति संघर्ष और किसानों को जागरूक करने की दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की। उत्तरी भारत में पिछली सदी के अन्त और इस सदी की शुरूआत में दो महान व्यक्तियों का जन्म हुआ। एक थे सर छोटूराम और दूसरे थे चौधरी चरणसिंह। इन दोनों ही महान विभूतियों ने यह अनुभव किया कि जब तक किसानों में चेतना पैदा नहीं होती तब तक हमें आर्थिक, सामाजिक उन्नति की दिशा में आगे नहीं बढ़ सकते।"

हरिकिशन सिंह सुरजीत महासचिव मार्क्सस्ट साम्यवादी दल

"चौधरी चरणसिंह एक महान स्वतन्त्रता सेनानी थे। वह गाँधी के अनुयायी थे। इसमें दो राय नहीं कि आजादी के बाद कैसा भारत बने इसके बारे में उन्होंने देश को एक नई सोच दी। देश के किसान मजदूरों गरीब पिछड़ो को एक नई दिशा दी। उन्हें अपने हक का एहसास दिलाया और उनमें राजनीति में भागीदारी का एहसास जगाया जिसके लिये किसान मजदूर और पिछड़े तबके सदा उनके ऋणी रहेंगे।"

एम० फारुखी सचिव साम्यवादी दल

"चौधरी चरणसिंह यथार्थ में युगपुरुष थे। भागीरथ गंगा को लाकर युगपुरूष कहलाये चौधरी चरणसिंह राजसत्ता की गंगा को गाँव-गाँव तक ले जाने वाले राजनेता होने के कारण युगपुरुष कहलाये। स्वाधीनता के बाद राजनैतिक सत्ता नागरीय क्षेत्र की शोभा बन गई थी। ग्रामीण क्षेत्र में होली के त्यौहार की भाँति पाँच

वर्ष में एक बार आती थी। देश की राजनीति को जन साधारण की राजनीति बनाने का श्रेय चौधरी चरणसिंह को ही जाता है। इसलिए चौधरी चरणसिंह जनसाधारण के राजनैतिक मसीहा होने के नाते 'युगपुरुष' कहलाये।"

चौ० कुम्भाराम आर्य एम० पी०

"अभावग्रस्त एवं दलितों शोषितों के लिये हमदर्दी और संवेदनशीलता उनके चरित्र की प्रमुख विशेषता थी अतः उन्होंने सदैव विपन्न ग्रामीणों के कल्याण-उत्थान की बात सोची और जो कुछ उनसे बन पड़ा उनके लिये किया भी। यही कारण है कि वह महान किसान नेता के रूप में प्रतिष्ठित हुए।"

धनिक लाल मण्डल भूतपूर्व राज्यपाल

"चौधरी चरणसिंह स्वाभिमान के साथ किसान के मेहनत करने के पक्ष में थे। वे देश की आर्थिक स्थिति के बारे में हमेशा चिन्तित रहते थे। यही वजह रही कि उन्होंने गाँधी के दर्शन का अध्ययन किया। उनका मानना था कि खेत में अपना पसीना बहाने वाला किसान जिस दिन संगठित हो गया दुनिया की हर बड़ी से बड़ी ताकत उसके सामने झुकेगी।"

रामचन्द्र विकल भूतपूर्व संसद सदस्य

"मैंने उन्हें (चौधरी चरणसिंह) भारत का महान नेता कहा है। किसी व्यक्ति को महान कहने का माप दण्ड क्या है ? मेरे विचार से इसमें यह पूछना निहित है कि किसी खास व्यक्ति के जीवन और कार्य से मानव जाति के किसी बड़े अंश के जीवन में परिवर्तन या सुधार हो पाया या नही। चौधरी चरणसिंह ने उत्तर प्रदेश के मंत्री और मुख्यमंत्री तथा देश के प्रधानमंत्री के रूप में भारतीय किसानों की चेतना का स्तर उठाने और उनके जीवन स्तर को सुधारने के लिये जो कुछ किया उसके बारे में सन्देह की गुंजाइश नहीं है। यही विशेषता उन्हें महान नेताओं की श्रेणी में लाकर खड़ा कर देती है। अगर वह न होते तो हमारा कृषक समाज आज की अपेक्षा कही बदतर हालत में होता।"

कु० नटवर सिंह प्रसिद्ध लेखक, विचारक एवं राजनेता

भारत की अर्थव्यवस्था और जाति व्यवस्था में जो दो नये वर्ग गत पच्चीस वर्षों में सामने आये हैं और संख्या बल में भी जिनका दबदबा है चौधरी चरणसिंह उनके सर्वमान्य नेता के तौर पर उभरें।

सुरेन्द्र मोहन भूतपूर्व एम० पी०

चौधरी चरणसिंह एक महान स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी और एक कुशल प्रशासक थे। वे लोकदल के संस्थापक अध्यक्ष थे। भारत की रीड़ गांव की आवा थे। गाँव के उस दुख दर्द और गाँव की उस आवाज को आन्दोलन बनाने का काम स्वराज संग्राम से पहले और बाद में वह लगातार करते आये थे। हमारे प्रशासकों ने भारत को किताबों में पढ़ा है लेकिन चौधरी चरणसिंह ने भारत को जन्म से रहकर जुड़कर पढ़ा। गाँव की धूल, कीचड़, माटी, लहलहाते खेतों तो कभी अवर्षा के कारण सूखी जमीन ने उनको ऐसी अमूल्य दृष्टि दे दी जिसके चलते चरणसिंह आखिर चौधरी चरणसिंह बन गये। चौधरी चरणसिंह व्यक्ति नही विचार थे। एक आन्दोलन थे बल्कि एक समर्पित जीवन थे। जिसके अन्दर भारत और गाँव का दर्द छिपा हुआ था। चौधरी साहब का व्यक्तित्व ऐसा रहा कि उनके मानने वाले लोगों के मन में उनके लिये सदैव सम्मान रहा। इसमें कोई दो राय नही कि उन्हें जनता का भरपूर प्यार मिला और वह हमारे सदैव प्रेरणास्रोत और पथप्रदर्शक रहेंगे।

हेमवती नन्दन बहुगुणा भूतपूर्व मुख्यमंत्री उत्तरप्रदेश

चौधरी चरणसिंह नेहरू के भोगवादी युग को कर्मवादी युग में परिवर्तित कर गरीबों के हाथ में सत्ता देना चाहते थे। सरदार पटेल का सा ह्रदय गाँधी जी की नीति और डाक्टर राममनोहर लोहिया की तार्किक शक्ति वाले तथा सादा जीवन उच्च विचार के पोषक रहे चरणसिंह जी ने सिद्धान्तों से कभी समझौता नही किया चौधरी चरणसिंह कुशल प्रशासक भी थे। चौधरी चरणसिंह दार्शनिक मानवतावादी है सही अर्थो में वे मानव के पुजारी हैं।

राजनरायण भूतपूर्व केन्द्रीय मंत्री

चौधरी साहब को सारा देश किसानों ओर समाज के दुर्बलों के रहनुमा के रूप में जानता है वह जीवनभर अपने कार्यो, लेखन, चिन्तन सब में समाज के उपेक्षित ग्रामीण वर्ग की चिन्ता में ही लगे रहे। शर्त यही थी कि भारतीय शैली में उसका विकास हो भारतीय मूल्यों पर आधारित हो। चौधरी साहब के कार्य करने का ढंग एवं बातचीत की शैली इतनी सरल थी जो सबको प्रभावित करती थी।

बी० सत्यनारायण रेड्डी भूतपूर्व राज्यपाल

जयप्रकाश जी का लोकशक्ति में बहुत बड़ा विश्वास था। चौधरी चरणसिंह भी लोकतंत्र के लिये लोकशक्ति या जनशक्ति कहें, उसे आवश्यक मानते थे।

उनका मानना था "एक ऐसी ताकत जो जनता की ताकत हो—यदि सरकार कुछ गलत करे, तो रोक सके, उसे सही काम करने के लिये मजबूर कर सके, का होना बहुत जरुरी है। सही साधनों ओर तरीको के बिना मंजिल हासिल नहीं की जा सकती। दुख इस बात का है कि वे (चौधरी चरणसिंह) आज हमारे बीच नहीं हैं लेकिन उनके विचार ही हमारे लिये सन्देश है, जो भविष्य में भी कदम-कदम पर हमारा मार्ग प्रशस्त करते रहेंगे।"

कुलदीप नैयर वरिष्ठ पत्रकार

राजनीति में वह (चौधरी चरणसिंह) आर्थिक मामलो में बेईमानी कभी भी बर्दाश्त नहीं कर सकें गजब की प्राणशक्ति मिली है उस आदमी को- जैसे अपने अहम पर तथा अपनी योग्यता पर उसे असीम और अटूट विश्वास हो।

भगवती चरण वर्मा भूतपूर्व एम० पी० तथा महान साहित्यकार

चौधरी चरणसिंह प्रदेश व देश की ग्रामीण जनता के हितों की रक्षा के प्रति सदैव जागरुक प्रहरी की भूमिका निभाते रहे। इसके लिये उन्होंने राजनैतिक खतरों को उठाते हुए, कांग्रेस से विमुख होकर जन कांग्रेस भारतीय क्रान्तिदल, भारतीय लोकदल, जनता पार्टी जैसे संगठन खड़े करने का प्रयास किया। यह उनके अदम्य साहस, आत्मविश्वास एंव संघर्ष शक्ति का द्योतक है।

वीरेन्द्र वर्मा भूतपूर्व संसद सदस्य

चौधरी चरणसिंह साहब साहसी, नीतिकुशल, त्वरित निर्णय लेने की शक्ति, अपने जीवन तथा विचारों में पवित्र और देश के बहुसंख्यक वर्ग के प्रबल हितैषी थे।

नाथूराम मिर्धा जुझारु किसान नेता तथा भूतपूर्व एम० पी०

जिन्दगी की पगड़ियों पर चलते-चलते कई लोग थक जाते हैं। उनका चलना धीमा हो सकता है परन्तु "किसानों का भगीरथ" चौधरी चरणसिंह आखरी दम तक न थके थे, न उनके कार्य में कोई रुकावट आई थी। इसमें दो राय नही कि किसानों के मसीहा चौधरी चरणसिंह का नाम सच्चे देशभक्त के नाते देश के आर्थिक आन्दोलन के अग्रदूत के रूप में याद किया जाता रहेगा। देश का किसान मजदूर उनके महान योगदान के लिये उन्हें कभी नहीं भूलेगा। सच्चाई यह है कि किसानों मजदूरों के लिये चौधरी चरणसिंह का नाम प्रातः स्मरणीय है।

युधिष्ठिर दास अध्यक्ष उड़ीसा विधानसभा

चौधरी चरणसिंह एक स्वाभिमानी देशभक्त थे। वह भारत की पुरातन संस्कृति में आस्था रखने वाले व्यक्ति थे। उनकी वेशभूषा, उनका खानपान, उनकी भाषा और शिष्टाचार में भी भारतीयता की छाप थी। गरीबों के लिये चौधरी साहब की चिंता गहरी व स्थायी थी।

डा० जे० पी० सिंह प्रसिद्ध शल्य चिकित्सक

चौधरी चरणसिंह आजादी की लड़ाई के प्रमुख सेनानी थे। वह एक महान देशभक्त, राजनीतिज्ञ, चिंतक और विचारक थे। वह किसान परिवार में पैदा हुए थे। इसलिए किसान, उनकी समस्याओं और उनके जीवन में आने वाली परेशानियों को वह बखूबी जानते थे। किसानों की भलाई के लिये उन्होंने जितना कुछ किया वह एक मिसाल है। उसे भुलाया नहीं जा सकता।

सी० राजेश्वर राव दिवंगत महासचिव भारतीय कम्यूनिष्ट पार्टी

चौधरी साहब एक महान समाज सुधारक और राजनेता थे। चौधरी साहब एक प्रखर बुद्धि वाले समाज सुधारक थे। स्वामी दयानन्द सरस्वती के दर्शन और सिद्धान्तों में उनकी दृढ़ आस्था और विश्वास था वह पक्के आर्यसमाजी थे। चौधरी साहब ग्रामीण समस्याओं से बहुत गहरे जुड़े थे। चौधरी साहब वस्तुतः जन-जन के हितैषी और हित साधक थे।

डा० रामदास भूतपूर्व सचिव केन्द्र सरकार

वे प्रमुख राजनेता आर्थिक विचारक और अपने विचारों को मूर्तरूप देने वाले कर्मठ व्यक्ति थे। भारत के पूर्व प्रधानमंत्री स्व० चौधरी चरणसिंह एक कुशल राजनीतिक नेता की अपेक्षा अधिक अच्छे प्रशासक, लोकहित के साथ प्रतिबद्ध विचारक और श्रेष्ठ इंसान थे। यथार्थ में अनुशासन और व्यवस्था का नाम था चौधरी चरणसिंह गाँधीवाद में चौधरी साहब का अगाध विश्वास था। यथार्थ में चौधरी साहब बहुत सहज और प्रतिबद्ध इंसान थे। वह मूल्यों के प्रति प्रतिबद्ध इंसान थे। अवसर से अनावश्यक, अमर्यादित और अनैतिक लाभ उठाना उनके जीवन मूल्यों के विपरित था। जब वह गृहमंत्री थे बुलन्दशहर के एक पुराने साथी उनसे मिलने आये। आपने उनसे कुशल क्षेम पूछी। वह बोले सब ठीक है थोड़ी सी रही है वह भी कट जायेगी। चौधरी साहब बोले - निराशा को सवार मत होने दो। मुझे देखों तुमसे उम्र में बड़ा हूँ। संघर्षो में जीवन की शक्ति पाता हूँ यह था चौधरी साहब का दर्शन और व्यक्तित्व।

डा० नत्थन सिंह बडौत लेखक एंव

से पहले व्यक्ति थे जिन्होंने सत्ता पर सवर्णो के एकाधिकार को चुनौती देने की शुरूआत की थी। भारत के गरीब और गरीबी के बारे में उनकी जानकारी मात्र किताबी नही थी। उन्होंने गरीबी को न सिर्फ देखा, जिया भी था। चौधरी चरणसिंह द्वारा उठाये मुद्दो में 'गाँव बनाम शहर' के विकास का मुद्दा बहुत ही महत्वपूर्ण है।

परिमल दास शिक्षाविद

उत्तर प्रदेश में मेरठ जिले के अन्तर्गत नूरपुर गाँव के एक साधारण किसान के परिवार में जन्में चौधरी चरणसिंह एक ऐसे राजनीतिज्ञ थे, जिन्होंने सदैव परिणाम की परवाह किये बिना निःसकोंच और निडर रहकर अपनी बात कही। मेरे विचार से वह स्वार्थ से परे रहकर उस बात को कहते थे जिसे उन्होंने ठीक समझा। चौधरी साहब न तो शहरों के खिलाफ थे और न बड़ी मशीनों के। उनका मानना था कि जब तक गाँव खुशहाल नही होगा देश खुशहाल नहीं होगा। चौधरी साहब की ईमानदारी किसी भी शंका से परे थी उनका निजी जीवन निष्कलंक तथा एक खुली किताब है। चौधरी साहब स्पष्टवादी थे।

रशीद मसूद भूतपूर्व केन्द्रीय मंत्री

मेरा यह स्पष्ट मानना है कि वे तब के जिनका समाज में कोई स्थान नहीं था। जिनकी आवाज नही थी, राजनीति में हिस्सेदारी न के बराबर थी, उन तबकों के लोगों को चौधरी साहब ने समाज में जगह दिलाई। उन्हें जुबान दी और देश की राजनीति में हिस्सेदारी का अहसास दिला:कर उन्हें एम० एल० ए०, एम० पी० बनाया। मैं समझता हूँ देश के जो महान समाजवादी चिंतक रहे हैं, उनके आदर्शों को भी यदि किसी ने कर्म में उतारने का काम किया था तो देश के उस महान सपूत का नाम ही आता है चौधरी चरणसिंह। चौधरी साहब शुरू से ही दिल से जात-पात के घोर विरोधी थे।

रामविलास पासवान भूतपूर्व केन्द्रीय मंत्री

इस देश में गरीब आदमी की लड़ाई लड़ने वाले जो महान योद्धा हुए हैं उन इने- गिने लोगों में महात्मा गाँधी के बाद यदि किसी ने हिन्दुस्तान के गरीबों, किसानों गाँव वालो और सदियों से शोषित पीड़ित लोगों के हकों के लिये दिल्ली के सिंहासन तक दस्तक देने और उनकी कराह के खिलाफ आवाज बुलन्द करने का काम किया है उस व्यक्ति का नाम था चौधरी चरणसिंह। उन्होंने सैकड़ों सालों से सोई गाँव की आत्मा को जगाने का काम किया।

शरद यादव भूतपूर्व केन्द्रीय मंत्री

आज देश में कोई भी राजनीतिक दल किसानों और पिछड़ो की अनदेखी नहीं कर सकता। इन हालात को पैदा करने तथा सत्ता के समीकरण में इन वर्गों को एक महत्वपूर्ण कारक की हैसियत प्रदान करने में चौधरी साहब की महत्वपूर्ण भूमिका थी।

अजय सिंह भू० केन्द्रीय मंत्री

चौ०चरणसिंह एक राजनीतज्ञ, एक पार्टी के अध्यक्ष एक भूतपूर्व प्रधानमंत्री का नाम ही नहीं था, चरणसिंह एक विचार धारा का नाम भी था। उनको इसलिये याद किया जायेगा कि एक किसांन के बेटे ने उस वर्ग को आवाज दी जो शोषित था जिसकी कोई लॉबी नही थी। चौधरी चरणसिंह साहब के कारण ही हर पार्टी मे आज किसानों की, पिछड़ों की, कारीगरों की और गाँव वालो की आवाज है। चौधरी साहब के कारण ही आज शामली मे महेन्द्र सिंह टिकैत पैदा हो सकते हैं।

उदयन शर्मा प्रसिद्ध पत्रकार

चौधरी चरणसिंह किसान समस्याओं के विशेषज्ञ थे और उन्होने अपने देश के ही नही अनेक देशों के कृषि विकास का गहन अध्ययन किया था ।

प्रताप कुमार टण्डन

चौधरी साहब का सपना था गाँव, किसान खुशहाली हों । वह चाहते थे कि बजट का चालीस प्रतिशत हिस्सा गाँव, कृषि, किसान के विकास मे खर्च हो। उनका मानना था कि देश की खुशहाली का रास्ता गाँवो और खेतों से होकर गुजरता है। इसमे दो राय नही कि उन्होंने जीवन भर गाँवो, किसान की बहबूदी के लिये भरसक प्रयास किये। इसमे दो राय नही कि यदि उन्हें समय मिलता तो ग्रामीण भारत के विकास का नक्शा ही कुछ और होता और देश का नक्शा ही बदल गया होता।

रामकृष्ण हेगड़े भूतपूर्व मुख्यमंत्री कर्नाटक सरकार

चौधरी साहब की यह विशेषता कही जायेगी कि पद पर वे कितने भी ऊँचे पहुँचे हो धरती से उनका नाता नही टूटा और नकली शहरियत उन पर नही छा सकी है। उन्होंने कहा कि देश की आवश्यकता की चीजें लघु और कुटीर उद्योगों से पैदा की जायें और बड़ी मशीनों से पैदा हुआ माल सिर्फ निर्यात के लिये हो। सादगी चरणसिंह जी की प्रकृति में ही सिक्त है।

जैनेन्द्र कुमार प्रसिद्ध लेखक

जिस गरीबी में चौधरी साहब पैदा हुए थे और किसान का दर्द उनके बचपन का संगी था उसे उन्होंने सारा जीवन अपने दिल में संजोकर के रखा और इसीलिये गरीबों के उत्थान के रास्ते से चौधरी साहब कभी भी विचलित नही हुए। चौधरी साहब जैसे विशाल ह्दय वाले लोग आज के युग में बिरले ही होते हैं।

रघु ठाकुर पूर्व महासचिव समाजवादी पार्टी

चौधरी चरणसिंह जैसा सादा, चरित्रवान, ईमानदार, निश्छल आदमी मैंने आज तक नहीं देखा। यह जो कहते हैं वही करते भी हैं यानी उनकी कथनी करनी में कोई अन्तर नहीं है। चौधरी साहब ने समाज में व्याप्त कुरीतियों का जोरदार ढ़ंग से विरोध किया। चौधरी साहब सदैव पददलितों में आत्मसम्मान जगाने, उनको समाज में बराबरी का दर्जा दिलाने के लिये लड़ते रहे।

ठाकुर अम्बिका प्रसाद सिंह प्रसिद्ध समाजवादी नेता

चौधरी चरणसिंह वतन के वास्ते जिये और वतन की वेदी पर ही कुर्बान हो गये। एक साधारण किसान के घर में जन्म लेकर वह अपनी प्रतिभा और परिश्रम से आगे बढ़े। देश के उज्जवल सितारों में वह प्रकाशवान होकर चमके। सबसे बड़े राज्य के मुख्यमंत्री और प्रधानमंत्री के पद पर विराजमान हुए।

रमेश वर्मा प्रसिद्ध पत्रकार

चौधरी चरणसिंह को मैंने सत्ता में देखा है। वे हमेशा ग्रामीण आंचल से अपने को जोड़ते रहे और गाँव वाले उन्हें हमेशा अपना संरक्षक मानते रहे। गाँवो के भाषणों में उनकी भाषा ग्रामीण और गाँव वालो की समस्याएँ उनके भाषण के विषय होते थे। और शैली बातचीत की, जो गाँव वाले तक सीधी पहुँचती थी।

सुरेन्द्र तिवारी उच्च अधिकारी

चौधरी चरणसिंह का यह लम्बा सक्रिय राजनैतिक जीवन सहज सत्ता की भूख से परिचालित नही था। सत्ता वे चाहते थे लेकिन भोग के लिये नहीं बल्कि गलत लीक पर जा पड़ी भारत की राजनैतिक अर्थव्यवस्था को सही रास्ते पर लाने के लिये। वे एक दृष्टि सम्पन्न राजनीतिज्ञ थे। वह हर हालत में व हर हैसियत में कृषि उन्मुख अर्थव्यवस्था लागू करने की कोशिश करते रहे।

डा० प्रेमसिंह एक विख्यात प्राध्यापक

चौधरी साहब में दल चलाने की क्षमता थी विश्वास था इसलिये अपने

आत्मविश्वास के बल पर किसानों, पिछड़ों तथा दलितों के प्रिय रहे एवं लगभग पचास वर्ष तक देश की राजनीति पर छाये रहें।

रामनरेश यादव भूतपूर्व मुख्य मंत्री, उत्तर प्रदेश

चौधरी चरणसिंह राष्ट्रीय एकता व अखण्डता में सबसे बडा अवरोध जातिवाद को मानते थे चौधरी चरणसिंह महिलाओं को समान अधिकार और भावनात्मक स्वाधीनता के पक्षधर थे। नारी की रक्षा को वे उतना ही महत्वपूर्ण समझते थे जितनी की देश के अन्य कमजोर वर्गों की। देश की गरीबी का उन्मूलन कृषि की समृद्धि के बिना नही हो सकता उन्नत कृषि ही देश की अर्थव्यवस्था का उत्कर्ष मार्ग है।

कैलाश नाथ सिंह, एम० पी०

उनके सिद्धान्त अपने और दूसरों के लिये समान थे। ईमानदारी, मेहनत, सादगी का जीवन जीने की प्रेरणा दूसरों को देते थे तो इन्हीं मूल्यों को अपने जीवन में अपनाया - वे हमारे पिता ही नही आदर्श पुरूष थे।

श्रीमति वेदमती, चौधरी साहब की पुत्री

चौधरी साहब ने उन करोड़ों मजदूर किसानों की आवाज को बुलन्द करने का काम किया जो सैकड़ों साल से हर तरफ से पिछड़े थे। वह उन लोगों की आवाज बने और उनके लिये ताजिन्दगी संघर्ष करते रहे। यही नहीं उन्होंने उन तबको के लोगों को निजाम में शिरकत करने का एहसास कराया। यही वजह है कि वे तबके उन्हें आज अपना रहनुमा मानते हैं।

मुफ्ती मौहम्मद सईद

भूतपूर्व केन्द्रीय मंत्री, मुख्य मंत्री, जम्मू कश्मीर

एक सामान्य परिवार में जन्में चौधरी चरणसिंह एक व्यक्ति नही विचार थे। वह एक जाने माने चिंतक और अर्थशास्त्री भी थे। सच तो यह है कि वह अदम्य साहसी, निर्भीक, कठिन परिश्रमी, दृढ़ निश्चयी, विलक्षण प्रतिभा के धनी और सिद्धान्तों के प्रति अटूट आस्था रखने वाले राजनीतिज्ञ थे। प्रधानमंत्री की गौरवमयी कुर्सी पर बैठकर भी वह अपने आपको किसान ही मानते रहे।

रघुवर दयाल वर्मा भूतपूर्व विधायक

हमारा देश भी विकसित देशों की सूची में होता, यदि हमने नेहरू के बजाय

चौधरी साहब की नीतियों को अपनाया होता। आज इस बात पर हर भारतीय देशभक्त को मनन करना होगा।

डा० सुब्रह्मामण्यम स्वामी, भूतपूर्व केन्द्रीय मंत्री,

चौधरी चरणसिंह अपने सार्वजनिक जीवन में प्रारम्भ से ही निर्भीक व स्पष्टवादी रहे थे। नेहरू जी अत्यन्त दबंग प्रधानमंत्री थे। उनके समक्ष किसी नेता ने उनके विचारों को चुनौती देने का कभी साहस नही किया। किन्तु चौधरी साहब पहले व्यक्ति थे जिन्होंने नागपुर में हुए कांग्रेस अधिवेशन में नेहरू जी के सहकारी खेती सम्बन्धी विचारो को अव्यवहारिक बताकर चुनौती दी। उन्होंने तर्कपूर्ण ढ़ंग से यह सिद्ध किया कि सहकारी खेती में व्यक्तिगत रुचि के अभाव के कारण उत्पादन गिरेगा। चौधरी साहब ने जीवन में कभी पाखंण्ड, छल, छिद्र तथा फरेब को सहन नही किया तथा उसके विरूद्ध व सदैव संघर्षरत रहे।

शिवकुमार गोयल, प्रसिद्ध पत्रकार

चौधरी चरणसिंह एक आदर्श पुरूष थे। उनकी कथनी व करनी एक जैसी थी। वे भ्रष्टाचार के विरोधी थे, साथ ही साथ ईमानदारी के प्रतीक थे। उन पर उनके कड़े से कड़ें विरोधी भी किसी प्रकार का आक्षेप नही लगा सके। उनका जीवन खुली किताब की तरह था जिसे कोई भी पढ़ सकता था। कांग्रेस की उल्टी प्राथमिकताओं से वह दुखी थे। वह चाहते थे कि देश की अस्सी प्रतिशत जनता जो गाँवों में रहती है, की उपेक्षा न की जाए। इसके लिये वे आजीवन संघर्ष करते रहे कि गाँव खुशहाल बन सके।

देवेन्द्र प्रसाद यादव, संसद सदस्य

चौधरी चरणसिंह के निधन से भारतीय राजनीति में ग्रामीणवाद का युग समाप्त हो गया। वे सत्ता पर साधारण व्यक्ति का आधिपत्य चाहते थे। जब भी आरोप लगाये गये उन्होंने टका सा जवाब दिया। "हिन्दुस्तान का शासन किसी मजदूर-किसान के हाथ में होना चाहिये। भारत को वही आदमी चला सकता है जो गाँव की मिट्टी की सुगन्ध से वाकिफ हो। बड़े-बड़े शहरों का निर्माण करके हम अपनी कब्र खोद रहे हैं, जिन पर दिया जलाने के लिये भी किराए के आदमियों की जरुरत पड़ेगी।" चौधरी चरणसिंह सत्ता के शिखर पर पहुँचने वाले पहले भारतीय किसान थे। चौधरी चरणसिंह अक्खड़ थे। वे किसी की सिफारिश नहीं

मानते थे। आर्य समाजी थे, ईमानदार थे कर्मवीर थे, चरित्रवान थे। सिद्धान्तों को सर्वोपरि मानते थे इसीलिये गाँधीवादी थे।

राकेश कपूर, प्रसिद्ध पत्रकार

चौधरी चरणसिंह ने अपने जीवन के उतार-चढ़ाव के हर पहलू में ग्रामीण भारत एवं किसानों की स्पंदन धारा को अपना लिया था। अपने को ग्रामीण किसान का प्रतिनिधी कहने में स्वाभिमान का अनुभव करते थे। समय के चलते चौधरी चरणसिंह से सम्बन्धित अन्य बाते भले ही भुला दी जाये लेकिन ग्रामीण भारत एवं कृषि को आंधार बनाकर उन्होंने जो आर्थिक कार्यक्रम रखे, भारत के राजनैतिक एंवं आर्थिक क्षेत्रों में सदैव चिन्तनीय रहेंगे।

ए० नील लोहित दास नाडार, भू० मंत्री केरल सरकार

चौधरी चरणसिंह जी के मन में गाँवो और उनमें रहने वालो के लिये बेहद दर्द था, टीस थी। वह उनकी बहबूदी के लिये उनकी समस्याओं के निदान के बारे में हर पल सोचते रहते थे। असलियत में वह 'ग्राम देवता' थे।

हरिसिंह नलवा

चौधरी साहब का व्यक्तित्व राष्ट्र के नवनिर्माण के लिये ही बना था। उनके व्यक्तित्व का दायरा जितना बड़ा था उतना ही बड़ा उनका ह्रदय था। स्वामी दयानन्द सरस्वती का उनके जीवन पर अत्याधिक प्रभाव पड़ा। उनके व्यक्तित्व में गाँधीवाद की उच्च उपलब्धियों के दर्शन होते थे। सरदार पटेल उनके आदर्श थे। चौधरी साहब की संगठनात्मक क्षमता देखकर और प्रशासनिक कुशलता को देख सरदार पटेल का सहज स्मरण हो आता है। भ्रष्टाचार, झूठ और फरेब तथा मक्कारी से नफरत करने वाले चौधरी साहब के लिये सिद्धान्त सर्वोपरि थे।

मनोहर लाल, भू० मंत्री उत्तर प्रदेश

वास्तव में चौधरी चरणसिंह एक व्यक्ति नहीं बल्कि गुणों की खान थे। उनमें एक विलक्षण दूरदृष्टि, सहयोगियों के लिये दर्द, किसान के लिये स्वप्न, देश की एकता और अखण्डता के लिये कुछ भी कर सकने की लालसा, समाज की कुरीतियों के प्रति रोष तथा समाज सेवा के लिये संकल्प के साथ सीधी सादी मनोवृत्ति के दर्शन होते थे।

बलवन्तसिंह रामूवालिया, भू० एम० पी०

एक आर्यसमाजी होने के कारण चौधरी चरणसिंह ने आर्यसमाजी नेता के रूप में छूआछूत मिटाने के लिये अथक प्रयास किये। चौधरी चरणसिंह ने हमेशा जातिवाद के खिलाफ जेहाद छेड़ा।

डा० राजसिंह राणा, प्रसिद्ध चिकित्सक

पाल आर० व्रास जैसे मनीषी ने अपनी एक पुस्तक में चौधरी साहब के गुणों की चर्चा करते हुए कहा था कि—

"चौधरी साहब अपने कार्य और नीतियों की सच्चाई में अजेय तथा अधिक विश्वास रखते थे, सत्ता में बने रहने में नहीं। चौधरी साहब न तो मित्र बनाने का प्रयास करते हैं, न किसी का समर्थन पाने की कोशिश करते हैं, और वे अपने विरोधियों को भी विरोध का कोई मौका नहीं देते हैं। आज तक किसी ने उन पर अपने लिये भौतिक लाभ उठाने का दोषारोपण नहीं किया है।"

जो लोग चौधरी साहब से परिचित थे तथा उन्हें देखने व सुनने का अवसर मिला था वे सभी इस बात पर सहमत थे कि वे बुलन्द इरादों के धनी तथा गहरी निश्चित मान्यताओं पर अडिग थे। वे अपनी अभिलाषाओं को छिपाना जानते ही नहीं थे और अपनी उपलब्धियों का ढिढोरा नहीं पीटते थे। किसानों के लिये उनके मन में गहरा लगाव था स्वयं के लिये एक तरह का वैराग्य था। आजीवन उनके चेहरे पर तपस्वी की चमक थी योगी का नूर था। वे सच्चे अर्थों में असाधारण व दुर्लभ प्रकृति के राजनेता थे। वकील के रूप में तर्क वितर्क के बल पर तो वे अपनी गहरी पहचान नहीं बना पाये पर निष्ठा के अर्क के बल पर उन्होंने एक अमिट छाप छोड़ी। जिन्होंने अपना कोई भवन अपने उत्तराधिकारी के लिये नहीं छोड़ा। कोई बैंक में देखने दिखाने योग्य खाता नहीं छोड़ा। छोड़ी तो केवल एक पावन परम्परा छोड़ी एक जीवनदायी प्रेरणा छोड़ी। एक निष्कलंक चरित्र का प्रमाण छोड़ा। उनके उत्तराधिकारी गर्व से कह सकते हैं कि उनके पूर्वज के विरुद्ध भृण्ट आचरण का कोई आरोप नहीं है। जीवन में अर्थ डालना पड़ता है समाज में समृद्धि लानी पड़ती है। आचरण में सन्तुलन साधना पड़ता है। भारत का सबल व समृद्धिशाली चौधरी साहब के बताये मार्ग पर चलकर ही बनाया जा सकता है। चौधरी साहब ने स्पष्ट शब्दों में कहा था कि सारे संसार से लाकर भारत में उद्योगों का जाल बिछा दिया जाये और कृषि की उपेक्षा कर दी जाये तो वे सारे उद्योग छः माह में बन्द करने पडेंगे। वे एक ऐसा समाज की कल्पना करते थे जिसमे कोई भी व्यक्ति दूसरे

के आधीन रहकर काम न करे वरन् अपनी रोटी कमाने के लिये रोजगार करने के लिये स्वतन्त्र हो। व्यक्ति स्वयं मालिक भी हो और मजदूर भी हो। एक विचारक जयराम रमेश ने चौधरी साहब के गुणों को उजागर करते हुए लिखा है कि—

"पिछले अनेक वर्षों से मैं कहता और लिखता आया हूँ कि यदि कोई एक व्यक्ति है जिसने उत्तरप्रदेश में जमींदारी उन्मूलन के लिए, भूमि की चकबन्दी के लिए, कृषि के लिये सबसे अधिक प्रयास किया, यदि कोई एक व्यक्ति है जिसने सहकारी खेती की अनुचित, असंगत सोच के विरूद्ध संघर्ष किया और भारतीय कृषि को विनाशकारी रूसी मार्ग पर जाने से बचाया, यदि कोई एक व्यक्ति है जिसने इस देश में निश्चित और स्पष्ट सामाजिक-आर्थिक प्रयोजन से पिछड़े वर्ग की उद्देश्य पूर्ण राजनीति का उदघोष किया तो वह चरणसिंह के अलावा और कोई नहीं है।" जिस समय सन् 1959 में चौधरी साहब ने सम्पूर्णानन्द मंत्रीमण्डल से त्याग पत्र दिया था तब एक दैनिक समाचार पत्र ने चौधरी साहब की प्रशंसा करते हुवे लिखा था कि—

"चौधरी चरणसिंह का उत्तरप्रदेश की सरकार से बाहर जाना उत्तरप्रदेश के प्रशासन तथा मिस्टर सम्पूर्णानन्द की विशेष हानि है। वह एक योग्य, ईमानदार, विचारक, कठोर परिश्रमी और एक ऐसे व्यक्ति के सहयोग से वंचित हो गये हैं जो अपनी ईमानदारी तथा सत्यनिष्ठा के लिये विख्यात है, जबकि ऐसे लोग मुश्किल से मिलते हैं।"

वास्तव में चौधरी साहब में बड़े से बड़ी चुनौती को झेलने, व बड़े से बड़े प्रलोभन को नकारने का नैतिक व आत्मिक बल विद्यमान था यही कारण है कि माननीय महामहिम उपराष्ट्रपति भैरोसिंह सेखावत की अध्यक्षता में गठित चौधरी चरणसिंह जन्म शताब्दी कमैटी ने किसानों की समस्याओं को उजागर करने और उनके समाधान की दिशा में पहल करने के लिये एक फाउंडेशन बनाने का प्रस्ताव उद्देश्य जनवरी 2003 में किया है। यह फाउडेशन एक विचार समूह के रूप में कार्य करेगी जिसका छोटे-छोटे किसानों की वर्तमान व भावी समस्याओं का निराकरण होगा।

चौधरी चरणसिंह का अमूल्य योगदान लेखक की राय

चौधरी चरणसिंह ने अपने सिद्धान्तों से समझौता किये बिना दिल्ली में किसान का राज स्थापित किया।

सतपाल मलिक, भू० केन्द्रीय मंत्री

"चौधरी चरणसिंह के साथ ग्रामीण भारत के लिये एक नये युग की शुरूआत होती है। चौधरी चरणसिंह के नाम की दुहाई देकर आज अनेक नेता राजनीति में जिन्दा हैं।"

प्रद्युमन सिंह, लखवाया रोड़, मेरठ

मुझे सन् 1978 में किसान मसीहा चौधरी चरणसिंह जी को नजदीक से देखने और जानने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। आपातकाल के बाद कांग्रेस के तीस वर्ष के शासन के बाद केन्द्र में जनता पार्टी की सरकार बनी। जनता पार्टी के गठन में चौधरी साहब की मुख्य भूमिका रही। जनता पार्टी का चुनाव घोषणा पत्र चौधरी साहब द्वारा तैयार किया गया। सत्ता में आने के कुछ समय पश्चात तत्कालीन प्रधानमंत्री श्री मोरारजी देसाई व पूर्व जनसंख्या घटक के नेताओं के पूँजीवादी व्यवस्था के प्रेम के कारण जनता दल में मतभेद शुरू हो गये।

स्व० चौधरी साहब का अपने राजनैतिक जीवन की शुरूआत से ही स्पष्ट दृष्टिकोण था कि अगर देश और समाज की उन्नति करनी है तो ग्राम विकास पर ध्यान देना होगा। गाँव के विकास के बिना देश के विकास की कल्पना नही की जा सकती। चौधरी साहब का मानना था कि देश की अस्सी प्रतिशत जनता जो गाँव में रह रही है वह बगैर मूलभूत सुविधाओं के अपना जीवन यापन कर रही है। उपलब्ध संसाधनों से इतनी आमदनी नही हैं वह अपने जीवन स्तर को सुधार सके अपने बच्चों को अच्छी शिक्षा दिला सकें। मै श्री सी० पी० सिंह पूर्व जिला जज के **"चौधरी चरणसिंह : एक चिन्तन-एक चमत्कार" पुस्तक** लिखने के प्रयास की सराहना करता हूँ। पुस्तक किसी विचार को समाज तक पहुँचाने का सशक्त माध्यम है। आशा करता हूँ इस पुस्तक के माध्यम से आने वाली पीढ़ी चौधरी साहब के बारे में जानेगी और उनका अनुसरण करके समाज के उत्थान में अपना योगदान देगी।

युद्धवीर सिंह महामंत्री, अखिल भारतीय महासभा

"चौधरी चरण सिंह का नाम ही संघर्ष है, उनका कर्म ही सन्देश है और उनका जीवन ही उपदेश है।"

प्रो० बृजराज सिंह, साकेत मेरठ

"चौधरी चरण सिंह ने ग्रामीण जनता को खेत की मेड़ की छोटी हिस्सेदारी पर लड़ने को छोड़ दिल्ली में सत्ता की बड़ी हिस्सेदारी के लिए लड़ना सिखाया।"

तेजपाल सिंह, पिलोना मेरठ

श्रद्धेय चौधरी साहब का मैं मानस पुत्र हूँ।

यह संस्मरण उस समय का है, जब कांग्रेस अवसान की ओर थी और जनता पार्टी सत्तारूढ़ थी। मुझे मेरे अग्रज श्री राजपाल शास्त्री चौधरी साहब के पास लेकर गये। मैं चौधरी साहब का अनुरागी आंरभ से ही था। यह अलग बात है कि मैं कांग्रेस का सजग प्रहरी पहले से ही था और चौधरी साहब गैर-कांग्रेसवाद का झण्डा बुलन्द किये हुये था। श्रद्धावश में चौधरी साहब के चरण छुआ करता था। उस दिन शाम को भी मैंने उनके चरण छुये, तो वह बोले कि बन्धु मैं तुम्हें अपने दल में एक बहुत महत्त्वपूर्ण भूमिका प्रदान करना चाहता हूँ। तुम जैसे कर्मठ, मेहनती और सिद्धान्तवादी व्यक्ति की मेरे दल में बहुत आवश्यकता है और कांग्रेस तो एक रेगिस्तान की चढ़ाई है, जिसमें व्यक्ति 2 कदम आगे चलता है और 6 कदम पीछे हो जाता है और इस राष्ट्र में अनेक समस्याओं की जड़ कांग्रेस है। मैं दत्त-चित्त होकर चौधरी साहब की सभी बातों को सुनता रहा और तनिक भी बिना विचलित हुए मैंने विनम्रतापूर्वक अपना प्रति-उत्तर चौधरी साहब को दिया कि चौधरी साहब आपका और मेरा रक्त का संबंध है। आप मेरे अग्रज हैं। आपका जो उद्देश्य गांव, गरीब और खलिहान में निर्धन और किसान को समृद्धि प्रदान करना है, मैं उन्हीं उद्देश्यों की लड़ाई कांग्रेस में रह कर ही जीवन पर्यन्त करता रहूँगा। आपके सिद्धान्तों मं मेरी अति आस्था है, परन्तु कांग्रेस मेरी माँ है और मैं अपनी माँ के दामन को नहीं छोड़ सकता। इस पर चौधरी साहब अपने चिर-परिचित अन्दाज में आते हुए अपने बायें हाथ की उंगलियां अपने गालों पर और छोटी उंगली ऊपर वाले ओंठ पर रखते हुए बोले कि बन्धु मैं तुम्हारे इस उत्तर से अति प्रसन्न हुआ हूँ और मेरा प्रेम तुम में पहले से अधिक बढ़ गया है। सच्चे अर्थों में तुम मेरे मानस पुत्र हो। अच्छा व्यक्ति किसी भी दल में रह कर मानव के कल्याण का कार्य कर सकता है। उनके ये शब्द आज भी मेरे मानस पटल पर ज्यों के त्यों अंकित हैं। वह युग पुरुष आज भी मेरे मन मन्दिर में दिव्यता लिये बैठा है। उनकी जन्म शताब्दी के अवसर पर मेरा उनको कोटि-कोटि नमन।

दीप चन्द बन्धु, उद्योग मंत्री, दिल्ली सरकार

उस युग पुरुष से मेरी यह अन्तिम भेंट थी

हमारा सारा परिवार चौधरी चरण सिंह जी की विचार धारा से अभिभूत था। यदा-कदा मैं दौरों पर उनके साथ भी जाता था और उनकी विचार-धारा कूट-कूट कर मेरे अन्दर समाहित थी। बात 14 नवम्बर सन् 1985 की है, जब कि बाल दिवस के अवसर पर मेरे छोटे भाई ने परम्पूज्य नेंहरू जी के जन्म दिवस पर जो भाषण दिया वह नेहरूवाद की आलोचनाओं से ओतप्रोत था और वह अलोचना भी अति कटु थी। इससे सभा में कभी तालियां और कभी हूटिंग होने लगी। क्योंकि अभी परम्परा नेहरूवाद की चाटुकारिता ही रही थी और यह भाषण पूर्णतः परम्परागत लीक से हट कर था। अभी भाषण पूरा नहीं हुआ था कि प्रधानाचार्य महोदय ने माइक छीन कर उसे स्टेज से उतार दिया। वह क्रोधित होकर घर आया और सारा वृत्तान्त मुझे सुना दिया।

मैं तुरन्त अपने छोटे भाई को लेकर चौधरी साहब के कार्यालय 15 विंडसर प्लेस जा पहुंचा उन्होंने तुरन्त कमरे में बुला लिया।

कमरे में प्रवेश करते हुए चौधरी साहब ने तिरछी निगाहों से मेरी ओर देखा और हल्की सी व्यंगात्मक मुस्कराहट के साथ बोले, आओ क्रान्ति पुत्र बैठो। कमरे में पूर्ण निस्तब्धता थी।

कागजों को पिन लगाकर उन्होंने हमारी ओर नजरें गाढ़ी और बोले—बताइये क्या व्यथा है? मैंने सारा वृतांत अति विस्तारपूर्वक उनके समक्ष रख दिया। चौधरी साहब के चेहरे पर जो भाव थे, मैं उन्हें पढ़ने में पूरी तरह असमर्थ था। परन्तु मेरी असमर्थता क्षणिक थी। चौधरी साहब के मुखारविन्द से सर्वप्रथम जो शब्द निकले वह स्वयं में आश्चर्यजनक थे कि "आपने नेहरू जी के प्रति कोई अप-शब्द का प्रयोग तो नहीं किया।" मेरे भाई का उत्तर नकारात्मक था। तुरन्त चौधरी साहब ने कहा कि अपनी बात कहने के लिये या अपने विचार प्रकट करने के लिये एक उपयुक्त मंच की आवश्यकता होती है। आपने जो विचार रखे, इन विचारों के लिये यह मंच कतई उपयुक्त नहीं था। देश, काल और परिस्थितियों का भी अपना महत्त्व होता है। यह सभा नेहरू जी के जन्म दिन पर एक श्रद्धांजलि सभा थी न कि वाद-विवाद प्रतियोगिता का कोई मंच था और स्मृति दिवस व श्रद्धांजलि सभा में किसी भी व्यक्ति की आलोचना नहीं की जाती अपितु उसके गुणों का वर्णन किया जाता है। इसका दूसरा पक्ष यह है कि यह मंच विद्यालय का था। विद्यालय में

अबोध बालक/बालिकाएं विद्या अध्ययन करते हैं और इतनी गूढ़ बातें आपने बोली हैं, तो अबोध बालपन इन बातों को समझने में पूर्णतः असमर्थ था। तीसरा पक्ष जो उन्होंने रखा कि विद्यालय में अनुशासन बनाये रखना प्रधानाचार्य का परम कत्तव्य है और यह सभी बातें तुम्हारे विपरीत जाती हैं। इसलिये तुम्हारा अपराध अक्षम्य है। मैं नेहरूवाद का घोर आलोचक रहा हूँ और हूँ भी, परन्तु उसके लिये एक उपयुक्त मंच व उपयुक्त समय की आवश्यकता होती है। यही विचार यदि तुम वाद-विवाद प्रतियोगिता या किसी विश्वविद्यालय के प्रांगण में बुद्धिजीवियों या छात्रों के बीच में रखते तो वह तुम्हारी सराहना करते व शाबाशी देते। मैं नेहरूवाद के एक घोर आलोचक के मुख से ऐसे तर्क व शब्द सुनकर आवाक था और मुझे तुरन्त चौधरी साहब की लिखी हुई पुस्तक "शिष्टाचार" का स्मरण हो उठा तथा मेरी श्रद्धा चौधरी साहब के प्रति और भी प्रगाढ़ हो गयी। तत्पश्चात् उन्हें नमन कर हमने उनसे विदा ली। शिमला में आकाशवाणी के माध्यम से 29 नवम्बर को मुझे समाचार मिला कि चौधरी चरण सिंह कोमा में चले गये हैं। मैं अपने सभी कार्यक्रम छोड़ कर दिल्ली लौटा और उस युग पुरुष के चरणों में अपना नमन कर उनके स्वास्थ्य की कामना करता रहा। परन्तु वह युग पुरुष एक महा प्रयाण की ओर अग्रसर था और 29 मई, 1987 को वह समय भी आ गया, जो समय इस सृष्टि में सभी प्राणियों के लिये नियत होता है। परन्तु उनकी तेजोमयी छवि, प्रखर विचार, उनके साथ बिताये हुये क्षण, उनकी डांट-डपट व प्रेम मेरे जीवन की अमूल्य निधि हैं। मेरा उस युग पुरुश के चरणों में कोटि-कोटि नमन है।

डॉ० चन्द्रकेतु, ओ० एस० डी० दिल्ली सरकार

चौधरी चरणसिंह के चरण पढ़ते ही देश की राजनीति ने करवट बदलनी शुरु कर दी थी। वे चरित्र व चिंतन दोनों के धनी थे। वे कलियुग की कीर्ति व गुणों की खान थे। ने जो कहते थे वही करते थे। उनका आचरण उनको शब्दों की गवाही देता था। वे उन बिरले लोगों में से थे जिनका प्रभाव देह त्याग के बाद बढ़ता ही चला जा रहा है। गाँव व गरीब आज भी उनके विचारों से उनके नाम से आन्दोलित होते हैं। उनके जीवन में सादगी उनकी सबसे बड़ी निधि थी। आज किसान जागरुक है, सत्ता में भागीदारी के लिए संघर्षशील है, अपने अधिकारों के लिए सचेत है उसके पीछे चौधरी की प्रेरणा ही काम कर रही है। उनका आचरण

नेताओं के लिए उदाहरण है। यदि देश को बचाना है, उसे दिशा देनी है तो उनके बताए मार्ग पर चलना होगा। गाँव व गरीब पर उन्होंने जो उपकार किये उन्हें कभी भी नहीं भुलाया जा सकेगा।

चौ० महेन्द्रसिंह 2/230 राजनगर, गाजियाबाद।

चौधरी चरणसिंह ने किसानों व ग्रामीण जन पर अनन्त उपकार किये हैं। उनका पूरा जीवन परहित के लिए समर्पित था। उनकी कीर्ति हिमालय से भी उच्च थी। सेठ की दौलत उनके स्वाभिमान को नहीं खरीद सकती थी।

चौ० यशपाल सिंह, छीपी टैंक, मेरठ।

देश की राजनीति को जनसाधारण की राजनीति बनाने का श्रेय चौधरी चरणसिंह को ही जाता है।

कुम्भाराव आर्य

चौधरी चरणसिंह का जीवनमंत्र संघर्ष था उनका हर कर्म उपदेश था, उनका पूरा जीवन सन्देश था।

रामवीर सिंह अध्यक्ष जाट सभा, ग्वालियर

चौधरी चरणसिंह कलियुग की कीर्ति थे। वे गुणों की खान थे। वे बाहरी सजधज के विरोधी तथा भीतरी सदगुणों के प्रबल समर्थक थे।

एस०पी० सिंह सचिव
महाराजा सूरजमल शिक्षा संस्थान नई दिल्ली

चौधरी चरणसिंह जन्म से साधारण कर्म से असाधारण थे। उनमें वन्दन व विद्रोह दोनों प्रबल थे। उनका हर शब्द आचरण बनकर उनके साथ रहा।

डा० रामपालसिंह ढाका, पूर्व प्रधानाचार्य।

चौधरी चरणसिंह जनवादी सोच के धनी थे। उनका ह्रदय ग्रामीण भारत के साथ धड़कता था। वे कलियुग में सतयुग के प्रतिनिधि थे।

बलवन्तसिंह मलिक, एडवोकेट सर्वोच्च न्यायालय

चौधरी चरणसिंह का जीवन एक खुली किताब जैसा है। उनका चिंतन एक सीधा साफ राजपथ था। उनका जीवन एक महान् उद्धेश्य से भरा था और यह उद्धेश्य था असली भारत का विकास। उन्होंने इस बिन्दु पर किसी से समझौता नहीं किया।

रणधीरसिंह, प्रधानाचार्य, मेरठ।

मुझे तो इस बात की अपार खुशी है कि इतना महान् पुरुष जो विश्व में चर्चित

हुआ, वह मेरे ही गाँव का बालक था। **चौ० शौपालसिंह नूरपुर**

अपने समस्त राजनीतिक जीवन में चौधरी चरणसिंह ना तो कभी अपने दर्शन से विचलित हुए और न ही अपने विचारों और सिद्धान्तों को आज के राजनीतिज्ञों की भाँति तोड़ कर पेश किया।

अजयवीरसिंह एडवोकेट, गाजियाबाद।

चौधरी चरणसिंह एक फौलादी इक्षाशक्ति व सबल पसन्दगी व नापसन्दगी वाले राजनेता थे। उन्होंने चुटकी लेते हुए एक बार कहा था कि मेरा सपना न साम्यवादी है ना माओवादी यह तो शुद्ध भारतीय है इसी कारण गाँधीवादी है।

राधाकृषण हुण्डा प्रसिद्ध लेखक

चौधरी चरणसिंह का पूरा जीवन प्रेरणादायी है उनका पूरा चिंतन परम हितकारी है।

देवेन्द्रसिंह वर्मा, डिफेन्स कालोनी, मेरठ।

"23 दिसम्बर ऐसे महाननायक का जन्म दिवस है जिसने गाँधी के टूटे सपनों को जोड़ने का प्रयास किया, जिसने गाँव गरीब और किसान की पीड़ा को हरने का संकल्प किया और अपने जीवन के अन्तिम क्षण तक देश के सुनहरे भविष्य की कामना करते हुए भारत माँ की गोद में सो गया।"

नरेश सिरोही गाजियाबाद।

प्रधानमंत्री कार्यकाल के अल्प समय में चौधरी साहब ने वह कार्य किये जिनसे साबित हो गया कि यदि अधिक समय मिलता तो भारत के अन्नदाता किसान, गरीब और शोषित वर्ग की तकदीर बदल जाती।

जगबीर सिंह सांगवान

"आजादी के बाद और आज तक किसी एक नेता का नाम लो कि जिसने गाँव व गरीबों और किसानों की लड़ाई लड़ी है और जो उनके मन में था, उनके पेट में था वही जबान पर, उसका नाम चरणसिंह है।"

त्रिलोक त्यागी गाजियाबाद।

चौधरी चरणसिंह जैसा महान् व्यक्तित्व के दर्शन के लिए पृथ्वी को लम्बे समय तक प्रतीक्षा करनी पड़ेगी ग्रामीण भारत के उत्थान के लिए उन्होंने भागीरथ ज्ञम किया। उनकी आत्मा गाँवों में निवास करती थी। ग्रामीण भारत पर उन्होंने अनेक उपकार किए जिन्हें कभी भी नहीं भुलाया जा सकेगा।

चौ० किरणपाल सिंह धमैड़ा, मंत्री उत्तरप्रदेश सरकार

जब तक चौधरी चरणसिंह की नीतियों को लागू नहीं किया जायेगा तब तक बेरोजगारी लूट, खसोट व अपराध से छुटकारा नहीं पाया जा सकेगा।

डा० मंगलसैन कोरी

चौधरी चरणसिंह जैसे नेता रोज-रोज पैदा नहीं होते। उनकी कथनी करनी समान थी। उनका जीवन एक उदाहरण था। उनके बाद की पीढ़ी में उन जैसा नेता खोजने पर भी नहीं मिलता।

चौ० तेजवीरसिंह किसान नेता, मवाना।

चौधरी चरणसिंह का नाम ही संघर्ष है। उनकी चाह अथाह निष्ठा उजागर करती है। उनका हर चिंतन चमत्कार है। उनका पूरा जीवन चमत्कार है। कलियुग के काले बादलों में वे सूर्य की तरह चमकते रहे। उनकी उपस्थिति विश्वास पैदा करती थी।

प्रो० रमेशचन्द्रा, पूर्व उपकुल पति मेरठ विश्वविद्यालय

चौधरी चरणसिंह में आत्मबल ही नहीं चिंतन की अपार क्षमता थी। उन्होंने अपने जीवन को अपने कर्मों से निखारा था। उनमें बड़ी से बड़ी चुनौती को झेलने की हिम्मत थी। महत्वपूर्ण बिन्दुओं पर उनकी सिंहगर्जना इतिहास के पन्नों पर सुरक्षित है। वास्तव में वे कर्मयोगी थे जो धर्म में भी गहन रुचि रखते थे।

श्रीपालसिंह एडवोकेट, सर्वोच्च न्यायालय

चौधरी चरणसिंह ने घिसटती राजनीति में एक नई जान डाली थी। उन्होंने किसानों में एक नया विश्वास जिन्दा किया था।

के०पी० सिंह, सूरजकुण्ड मेरठ

चौधरी चरणसिंह अनमोल रत्न थे। वे विद्वान भारतरत्न अलंकरण के सच्चे अधिकारी हैं। किसानों में जागृति लाने के लिए उन्होंने जो भी किया वह अतुलनीय है। किसान आन्दोलन की हर लहर के पीछे उन्हीं का बल है। वे सच्चे आर्यसमाजी थे।

स्वामी ओमवेश, राज्यमंत्री उत्तरप्रदेश सरकार

चौधरी चरणसिंह का पूरा जीवन एक अनूठी गाथा है। उन्होंने जैसा कहा वैसा कर दिखाया। कथनी व करनी में इतनी एकरुपता ढूढंने पर भी नहीं मिलती।

किशनसिंह फौजदार, आगरा

चौधरी चरणसिंह ने आजीवन संघर्ष किया। उन्होंने कभी भी अपने सिद्धान्तों से समझौता नहीं किया। वे सादाजीवन व उच्च विचार की नीति पर चलते रहे। उन्होंने आजीवन आगे ही बढ़ना सीखा था।

जगदीश पाल सिंह, ग्राम दांतल मेरठ।

जब मैं पहली बार चौधरी साहब से मिला तो कुछ देर बातचीत के बाद मैंने उनसे एक सवाल किया कि चौधरी साहब गोरे अंग्रेजों को तो आपने देश से भगा दिया लेकिन इन काले अंग्रेजों को अब देश से कैसे भगाये? चौधरी साहब बोले कि बेटा बहुत मुश्किल काम है क्योंकि जब हम गौरों के साथ लड़ाई लड़ रहे थे तो शरण मिल जाया करती थी, इन काले अंग्रेजों के खिलाफ लड़ाई में शरण भी नहीं मिलेगी। थोड़ी देर इसी तरह की बातचीत के बाद चौधरी साहब ने पूछा बेटा तुम्हारा नाम क्या है? मैंने कहा चौधरी साहब मेरे पिता आर्य समाजी थे। ओइम का जाप किया करते थे। ओइम के सामने सिंह लगाकर पूरा किया और रुड़की विश्वविद्यालय से भौतिकी विज्ञान में सन् 1972 में पी०एच०डी० करके नाम के पहले डाक्टर मैंने लगवा लिया। इस तरह मेरा नाम हुआ डाक्टर ओइमसिंह। यह सुनकर चौधरी साहब बहुत खुश हुए। खड़े हो गये और फिर मुस्करा कर मेरे कन्धे पर हाथ रखकर बोले-बेटा मैं भी उसी चक्की का पिसा हुआ हूँ। यानि कहने का मतलब यह कि चौधरी साहब एक पक्के आर्य समाजी थे। **उन्होंने स्वयं कहा था कि आर्य समाज मेरी माँ और महर्षि दयानन्द मेरे गुरु हैं।**

दूसरी घटना उस वक्त की है जब चौधरी साहब का नाम दुर्भाग्यपूर्ण स्थिति में भिण्डरवाले की हिट लिस्ट पर आ गया था और हम लोग चौधरी नरेन्द्रसिंह (पूर्व विधायक) ब्रजपाल सिंह तोमर एडवोकेट, जगतसिंह आदि अन्य विश्वास पात्र 12 तुगलक रोड़ पर पहरा दिया करते थे। हमने उस दौरान यह देखा कि चौधरी साहब सुबह तीन बजे नियमित रूप से उठ जाया करते थे और अपने अध्ययनकक्ष

में फर्श के ऊपर पढ़ने बैठ जाते थे और सामने होता था उनके एक छोटा स्टूल और उसके बराबर में एक लैम्प। यह इस बात का प्रमाण है कि वे नियमित रूप से अध्ययन व राष्ट्रीय चिन्तन किया करते थे।

सक्षेप में चौधरी साहब की सोच ग्रामीण थी, उनका खान पान ग्रामीण था, उनका रहन सहन ग्रामीण था, उनकी हर बात ग्रामीण थी। उनके सपनों का ग्रामीण भारत ही असली भारत था। उन्होंने अपना समस्त जीवन ग्रामीण भारत की भलाई में लगा दिया। 25 दिसम्बर 1977 को महाराजा सूरजमल के शहीदी दिवस पर एक भाषण में उन्होंने कहा था—**"मेरे संस्कार उस गरीब किसान परिवार के संस्कार हैं जो धूल व कीचड़ के बीच एक छप्परनुमा झोंपडी में रहता है। मैनें अपना बचपन उन किसानों के बीच बिताया है जो खेतों में नंगे बदन अपना पसीना बहाते हैं।"**

लेकिन मुझे यह लिखते हुए एक पीड़ा होती है कि जिस धरातल पर उन्होंने पार्टी को छोड़ा था वहां से उसे ऊपर उठना चाहिए था परन्तु दुर्भाग्य यह रहा कि ऐसा हो न सका और जो लड़ाई वे किसानों व अन्य ग्रामीणों के हितों के लिए आजीवन लड़ते रहे वह अधूरी रह गई और आज किसान व अन्य ग्रामीण जनता अपने को ठगा सा महसूस कर रही है। कृषि प्रधान यह देश, नारों और कागजों पर कृषि प्रधान होकर रह गया है। असली भारत का सर्वोपरि बासिन्दा न अपने बच्चों को शिक्षा देने में सक्षम है न उसकी कोई सुरक्षा है। बीमारी के इलाज की बात तो छोडिये वह बीमार को साथ लिए खेतों में दिन-रात काम करता रहता है। जब शहर में किसान मजदूर या उसकी संतान सामान लेने जाता है तो गांव व शहर का अन्तर साफ नजर आता है। खेतों में काम करने के लिए आज उसे मजदूर भी नहीं मिलते। इस तरह ग्रामीण भारत दम तोड़ रहा है।

मैं गांव के खास कर पढ़े लिखे लोगों से आह्वन करना चाहता हूँ कि वे भ्रष्टाचार में लिप्त उन पन्द्रह प्रतिशत की भीड़ न बढ़ाकर, गांव के ईमानदार

मेहनतकस पिचासी प्रतिशत लोगों के संगठन को मजबूत करने में अपना योगदान करें।

प्रो० ओइम सिंह

हर प्रस्ताव हर हिसाब पूरा होगा।
हर सवाल हर जवाब पूरा होगा।
चौ० चरण सिंह होंगे घोषित भारत रत्न
कृषक क्रान्ति का हर इन्कलाब पूरा होगा।

चमत्कारी चौधरी चरण सिंह मेरी दृष्टि में

मै बाल्य अवस्था से ही चौ० साहब के व्यक्तित्व से प्रभावित रहा हूँ चौ० साहब एक निर्भिक ईमानदार, कर्तव्यनिष्ठ, देशभक्त कर्मठ तथा त्यागशील नेता थे। उन्होने अपने पूरे जीवनकाल में ज़ो कुछ भी किया, जो कुछ भी सोचा वह देश के लिये किया। मैने आम जनता में यह जानने का प्रयत्न किया। कि स्व: प्रधानमंत्री चौ० चरण सिंह जी अपने पूरे जीवनकाल में क्या सम्पत्ति अर्जित की। तो मुझे ज्ञात हुआ उन्होने एक मकान मेरठ जिले की साकेत कालोनी में लिया था परन्तु वह मकान उन्हाने सन् १९८५ के पश्चात ब्रेच दिया था।

हम आज के राजनितिज्ञो से यह पूछ्ना चाहते है कि वे चौधरी चरण सिंह जी के समान ईमानदारी का आचरण क्यों नहीं कर रहे है। आज के समाज में अधिकांश नेतागण भ्रष्टाचार में लिप्त है। चौधरी साहब ने अपने व अपने परिवार के लिये कोई सम्पत्ति अर्जित नहीं की यही उनकी ईमानदारी, सच्चे इन्सान व सच्चे देशप्रेमी होने का स्पष्ट प्रमाण है।

आज आम जनता में बड़े से बड़े नेतागणों पर जनता के लोग आरोप लगाते देखे गये है परन्तु चौधरी साहब के चरित्र, ईमानदारी, नेकनियती सच्चाई व देशभक्ति पर आम जनता के लोग व विपक्षी भी आरोप लगाने का साहस नहीं करते है। उन पर आम जनता के कुछ गिने चुने लोग जो उनकी विचारधारा के ...

विरोधी हैं सिर्फ यह आरोप लगाते सुने गये हैं कि चौधरी चरण सिंह जातिवाद को बढ़ावा देते थे, उन्होंने जाट जाति को बढ़ावा दिया क्या यह सत्य है ? मेरे विचार से यह आरोप द्वेषपूर्ण है क्योंकि चौ० साहब ही एक मात्र ऐसे नेता थे जो इस बात के पक्षधर थे कि सरकारी नौकरियों में आरक्षण उन लोगों को दिया जाये जो अर्न्तःजातीय विवाह करें तथा भारतवर्ष का कोई भी नागरिक अपने नामों के साथ जाति सूचक शब्दों का प्रयोग न करें। वे दूरदृष्टि के धनी थे वे समझ गये थे कि जब तक अर्न्तःजातीय विवाह नहीं होंगे तब तक हमारे देश से जातिवाद का विनाश होना सम्भव नहीं है। उनके जातिवादी विरोधी होने का स्पष्ट प्रमाण यह है कि उन्होंने अपनी पुत्री का विवाह अर्न्तः जातीय विवाह/कायस्थ जाति में किया था उन्होंने स्पष्ट कहा था **कि "जातिवाद समाज का कलंक है"**। सन् 1948 में जब वे विधि न्याय मंत्री थे तब उनके प्रयास से यह आदेश पारित किया गया कि राजस्व विभाग के किसी भी अभिलेख में जाति का नाम दर्ज न किया जाये। 16 फरवरी, 1951 को उन्होंने यह प्रस्ताव पास कराया था कि कांग्रेस पार्टी का कोई सदस्य जाति के आधार पर बने संगठन से नहीं जुड़ेगा। चौ० साहब आजीवन किसी जातिय सम्मेलन में नहीं गये। एक सच्चे नेता की यही पहचान है कि वह जो कहता है उसे पहले करके दिखाता है। इसी कारण उन्होंने अपनी पुत्री का विवाह अर्न्तःजातीय किया था। चौ० साहब ही इस पीढ़ी के एक मात्र ऐसे नेता हैं जिनके आर्थिक सिद्धान्त विदेशों के विश्व विद्यालयों में पढ़ाये जाते हैं।

यह उनके अर्थशास्त्र के गहन ज्ञान को उजागर करता है। वे बहुत बड़े अर्थ-शास्त्री भी थे। चौ० साहब ने सदैव ग्रामीण गरीब जनता के लिए कार्य किया ब्रिटिश साम्राज्य के समय जब हम गुलाम थे उस समय देश में जमींदारी प्रथा लागू थी। अंग्रेजों ने किसानों का शोषण करने के लिए उनके सिर पर जमींदार बैठा रक्खे थे। जो गरीब किसानों पर तरह-तरह के अत्याचार करके उनसे जोर जबरदस्ती करके अधिक से अधिक लगान वसूल करके अंग्रेजों को देते थे। जमींदार किसानों के शोषण में अंग्रेजों के दलाल के रूप में कार्य कर रहे थे। इसका विस्तृत विवरण लेखक द्वारा पुस्तक के दसवें अध्यात्म खण्ड में किया गया है। चौ० साहब ने इस

व्यवस्था से दुःखी होकर सन् 1937 में उत्तर-प्रदेश मण्डी अधिनियम 1937 पेश किया ताकि व्यापारियों तथा दलालों द्वारा किसानों का शोषण बन्द हो सके।

ग्रामोत्थान के समर्थक चौ० साहब ग्रामीण जनता के शहरों की ओर पलायन से दुःखी थे। उन्होंने ग्रामीण जनता के दुःख दर्दों व निर्धनता को निकट से देखा था उन्हें इस बात का पूर्ण ज्ञान था कि ग्रामीण जनता को शिक्षा के लिये शिक्षा संस्थान, चिकित्सा के लिये चिकित्सालय आदि जरूरी सुविधायें ग्रामीण क्षेत्रों में उपलब्ध नहीं है। इसके लिये उन्हें शहरों को भागना पड़ता है तथा शहरों तक पहुंचकर भी वे सुविधायें प्राप्त करना उनके लिये निर्धनता के कारण सम्भव नहीं है। ग्रामीण जनता की इस पीड़ा से क्षुब्ध होकर उन्होंने ग्रामीण किसानों की एक सभा में कहा था "किसानों यदि तुम्हें कुछ प्राप्त करना है तो एक निगाह अपने खेतों की मेढ़ पर रक्खो दूसरी निगाह दिल्ली की गद्दी पर रक्खो।" उनके कहने का तात्पर्य यही था कि जिस प्रकार तुम एक निगाह अपने खेतों की मेढ़ पर रखते हों कि कहीं कोई तुम्हारे खेत की जमीन पर अवैध रूप से अपना अधिकार न कर ले उसी प्रकार दिल्ली की गद्दी पर भी अपनी नजर रक्खो अर्थात् अपने कृषक समाज से अधिक लोक सभा सदस्य दिल्ली चुनकर भेजो तभी देश के राजकोष की थैली का मुंह तुम्हारे ग्रामीण क्षेत्रों के विकास एवम् ग्रामोत्थान के लिये खुलेगा तथा भारत सरकार ग्रामीण क्षेत्रों के विकास के लिये योजनायें बनाने को बाध्य होगी। उनका यह विचार कृषक समाज एवम् ग्रामीण जनता से उनके प्रेम का स्पष्ट प्रमाण है।

"दूसरी निगाह दिल्ली की गद्दी पर रखो"

परन्तु हमने चौ० साहब कि इस शिक्षा भूला दिया है। आजकल के समय में कुछ नेतागण व अधिकारीगण धनलोलुप व पदलोलुप हो गये हैं। इस कारण हमें चौ० साहब की उपरोक्त सीख पर अत्यधिक ध्यान देना आवश्यक हो गया है। कारण कुछ देश के रक्षक देश के भक्षक बन गये हैं। यदि आजकल के काल में हम सब आम जनता के लोग चाहे वह किसी भी धर्म, जाति, वर्ग एवं सम्प्रदाय

के हों एक जुट होकर ऐसे भ्रष्टाचारी, पदलोलुप एवं धनलोलुप नेतागणों व अधिकारीगणों के विरूद्ध साहस करके खड़े नहीं होंगे तो हमारे देश में ऐसे नेतागणों एवं अधिकारीगणों की संख्या बढ़ती ही चली जायेगी। जो हमें आम जनता को फिर से अपने देश में ही गुलाम बना लेगी। खेद का विषय है कि हम आम जनता के लोग अपने हितो, मौलिक अधिकारों एवं कर्त्तव्यों के प्रति बिल्कुल भी जागरूक नहीं हैं। आजकल के अधिकाँश नेतागणों एवम् अधिकांश अधिकारीगणों ने धर्म व जाति व नाम की अफीम खिलाकर हमें अपने अधिकारों व कर्त्तव्यों के प्रति पूर्ण रूप से उदासीन बना दिया है। क्योंकि आजकल के कुछ नेतागणों (प्रतिनिधिगणों) एवं अधिकांश अधिकारीगणों ने अपना उल्लू सीधा करने के लिये (अर्थात्) **अथाह धन-सम्पत्ति एकत्र करने के लिये** ब्रिटिश साम्राज्य की फूट डालो और राज करो की नीति जारी रखते हुये हमें धर्म, जाति, वर्ग एवं सम्प्रदायों के नाम पर आपस में बांट रक्खा है। यही कारण है कि हम आम जनता के लोग आपस में बंटकर एक दूसरे से विमुख हो रहे हैं तथा ऐसे भ्रष्ट अधिकारीगणों व नेतागणों के लिये अथाह धन-सम्पदा एकत्र करने का मार्ग प्रशस्त कर रहे हैं। तथा अपने-अपने हितों एवं अधिकारों को उपरोक्तों के हाथों में गिरवी रख रहे हैं। आगामी पृष्ठों पर नेतागणों, प्रतिनिधिगणों तथा अधिकारीगणों का सिर्फ उपरोक्त के नाम से स्मबोधित किया जायेगा।

अब समय आ गया है कि हम सब आम जनता के लोग आपस में न बंटकर अपने हितों, मौलिक अधिकारों एवं कर्त्तव्यों के प्रति सजग हो जायें। अन्यथा ऐसे लोग हमें फिर से गुलाम बनाने में सफल हो जायेंगे। केन्द्र एवं प्रदेश सरकारों द्वारा जारी की गई ग्रामीण क्षेत्रों एवं अन्य क्षेत्रों के विकास एवं ग्रामोत्थान की योजनाओं **(यहां यह कहना अनिवार्य है कि आजकल ग्रामीण क्षेत्रों के विकास एवं ग्रामोत्थान के लिए जो योजनायें लागू की जा रही है उनके पीछे चौ० साहब की सच्चाई, इन्सानियत के प्रति उनका प्रेम एवं उनकी सच्ची आत्मा ही कार्य कर रही है।)** चौ० साहब द्वारा दिये गये आह्वान एवं जन

जागरण के कारण ही आजकल के नेतागण (प्रतिनिधिगण) ये योजनायें बनाने का बाध्य हुये हैं। परन्तु हम आम जनता के लोग उनके आह्वान **"एक निगाह दिल्ली की गद्दी पर रक्खो को भूल गये हैं"** दिल्ली की गद्दी तो क्या आजकल के समय में हम आम जनता अपने ग्रामों के ग्राम प्रधानों, ब्लॉक प्रमुखों, जिला पंचायत अध्यक्षों, ज़िला प्रमुखों, विधायकगणों, लोकसभा सदस्यों आदि तक पर भी अपनी निगाह नहीं रख रहे हैं। जब तक चौ० साहब रहे उन्होंने उपरोक्तों पर पूरी निगाह रक्खी परन्तु उनकी मृत्यु के पश्चात् हम आम जनता के लोग उपरोक्त नेतागणों, प्रतिनिधिगणों एवं अधिकारीगणों, आदि पर अपने निगाह नहीं रख रहे हैं। मेरा आम जनता के लोगों से आह्वान है कि अब उपरोक्तों पर निगाह रखने वाले चौ० साहब नहीं रहे हैं। अब हम आम जनता के लोग ओर आगे अन्धे और गूंगे न बने। और उपरोक्तों पर अपनी निगरानी कड़ी कर दें। जो आज के समय तक लगभग शून्य है।

यह हम आम जनता के लोगों के लिये शर्मनाक है। यदि हम आम जनता के लोग इस पुस्तक को पढ़कर अपने हितों, कर्त्तव्यों एवं अधिकारों के प्रति थोड़ा भी सजग हो जायें तो इस पुस्तक के लेखक का स्वपन पूर्ण हो जायेगा। पूर्व प्रधानमंत्री स्व: राजीव गांधी द्वारा एक योजना देश के लिए जारी की गई थी। जिसके अन्तर्गत पूरे देश के ग्रामप्रधानों, विधायकगणों एवं लोकसभा सदस्यगणों को देश के प्रति ग्राम, प्रति विधान सभा क्षेत्र, प्रति लोकसभा क्षेत्र के विकास के लिये देश के राजकोष से धन दिया जाता है। जो कि हमारे ग्रामीण क्षेत्रों तथा अन्य क्षेत्रों के विकास के लिये प्रदत्त किया जाता है।

"जो धन आम जनता का है" यहां हम यह कहने का साहस कर रहे हैं कि इस उपरोक्त धन का लगभग 90 प्रतिशत धन का अपहरण अधिकांश तथाकथित देश के नेताओं, ग्राम प्रधानों, कुछ जन प्रतिनिधिगणों, कुछ ब्लॉक प्रमुखों, कुछ जिला पंचायत अध्यक्षों, कुछ जिला प्रमुखों एवं अधिकांश अधिकारियों आदि द्वारा आपस में मिल जुलकर कर आपस में बाँट लिया जाता है। सिर्फ दस प्रतिशत

शेषधन ग्रामोत्थान एवं ग्रामीण क्षेत्रों के विकास तथा अन्य विकास कार्यों के लिये खर्च हो पाता है। हमारा देश की आम जनता से आह्वान है जरा अपने हितों के बारे में सोचो ! जरा मनन करो ! जरा समझो ! जरा अपने अधिकारों को पहचानो ! सजग हो जाओ ! यह सारा धन भारत सरकार तथा प्रदेश सरकारों द्वारा हम आम जनता की बेहतरी के लिये था (आगे राजकोष द्वारा प्रदत्त धन को सिर्फ धन लिखा जायेगा) यह सारा धन हमारा अपना आम जनता का था जो हमसे विभिन्न प्रकार के टैक्सों (करों) आदि द्वारा लिया जाता है। जिसकी बन्दरबांट कुछ ग्राम-प्रधानों, कुछ जनता के प्रतिनिधिगणों एवं अधिकांश अधिकारीगणों आदि द्वारा आपस में कर ली गई और हम आम जनता के लोग चौपालों तथा अन्य सार्वजनिक स्थलों पर बैठकर सिर्फ यह कह भर रहे हैं कि सारी योजना का धन मिलकर सभी उपरोक्त ग्राम प्रधान, जनता के प्रतिनिधिगण एवं अधिकांश अधिकारीगण आदि खाँ रहे है। आजकल के समय में यह हम आम जनता के लोगों के बीच सिर्फ चर्चा का विषय मात्र ही है। आज हम जनता के लोग चौ० साहब कि सीख को बिल्कुल भूल गये हैं हम आम जनता के लोग भी आजकल के कुछ उपरोकृगणों जनप्रतिनिधिगणों व अधिकांश अधिकारीगणों के समान कायरों की जमात में शामिल हो गये हैं। जो सब कुछ जानते हुये भी यह कहकर सन्तोष कर रहे हैं कि हमारे लिये जारी योजनाओं का धन कुछ लोग मिलजुलकर खा रहे हैं। चौ० साहब के जीवनकाल के समय में ऐसी परिस्थितियां नगणीय तो न थीं परन्तु बहुत कम थीं।

आज के समय में दिल्ली की गद्दी से पहले हमें अपने उपरोक्त जनप्रतिनिधियों, ग्राम प्रधानों, ब्लॉक प्रमुखों, जिला पंचायत अध्यक्षों, विधायकगणों, लोकसभा सदस्य गणों एवं अधिकारीगणों आदि पर कड़ी निगाह रखनी होगी। क्योंकि चौ० साहब के प्रयत्नों एवं जनजागरण से देश के राजकोष द्वारा ग्रामीण जनता के "किसानों" कामगारों, बेरोजगारों, गरीबों एवं मजदूरों आदि के लिए योजनायें बनाई जाने लगी है। परन्तु जैसा पहले बताया जा चुका है उन योजनाओं का 90 प्रतिशत धन उपरोक्तों द्वारा अपहरण किया जा रहा है। हमारा आम जनता से आह्वान है कि

प्रत्येक छः माह बाद हम अपने-अपने जन प्रतिनिधियों अर्थात् सभी उपरोक्तों से अपने धन का हिसाब माँगे यदि वे राजकोष द्वारा प्रदत्त धन का अपहरण कर चुके हैं और हम आम जनता को उसका हिसाब न दे पायें तो शान्तिपूर्ण ढंग से अपनी समस्याओं को देश व प्रदेश के मंत्रियों, मुख्यमंत्रियों तथा प्रधानमंत्री के समक्ष एक जुट होकर प्रस्तुत करें। यदि तब भी कोई हमारी शिकायत न सुने तो शान्तिपूर्ण प्रदर्शन किया जाये। अन्यथा जिला मुख्यालयों पर, जिला मजिस्ट्रेटों (डी० एम०) मण्डल के कमीश्नरों का एक जुट होकर घेराव किया जाये तथा स्पष्ट कहा जाये कि हम आम जनता आपको कार्य नहीं करने देंगे जब तक कि देश के राजकोष से प्रदत्त हमारे लिये आये हुये धन का पूर्ण हिसाब हमारे आम जनता के सम्मुख सार्वजनिक रूप से न सही **"कम से कम प्रचार एवं प्रसार माध्यम द्वारा"** हम आम जनता के सम्मुख प्रस्तुत न किया जाये।

मेरा आम जनता से आह्वान है कि हम आम जनता के लोगों ने अपने हितों एवम् मौलिक अधिकारों की सुरक्षा के लिये जिन उपरोक्त प्रतिनिधिगणों आदि को चुना है उन पर सदैव कड़ी निगाह रक्खें। सिर्फ तभी चौ० साहब की आत्मा को शान्ति प्राप्त होगी। अन्यथा में यह कहने का साहस कर रहा हूं कि हम आम जनता के लोग भी आजकल के कुछ उपरोक्त नेतागणों, प्रतिनिधिगणों एवं अधिकाँश अधिकारीगणों आदि से भी कहीं अधिक कायर हैं। क्योंकि हम अपने हितों, मौलिक अधिकारों एवं कर्त्तव्यों के प्रति बिल्कुल भी सजग नहीं हैं। जो कि प्रजातंत्र व्यवस्था में आम जनता का प्रमुख अधिकार है। मैंने एक कहावत सुनी है कि **"मां भी अपने बच्चों को जब दूध पिलाती है जब उसका बच्चा रोता है।"** अर्थात् वह रोकर मां का ध्यान अपनी ओर आकर्षित करता है कि मैं भूखा हूं। हम आम जनता के लोगों को भी उपरोक्तों ने धर्म, जाति नाम की अफीम खिलाकर शान्त कर रक्खा है। सुना है कुछ मातायें जिनका अपना दूध नहीं उतरता, बच्चे के भूख पर रोने पर कुछ समय के लिये उसे अफीम खिलाकर सुला देती हैं। ठीक इसी प्रकार उपरोक्तों ने धर्म व जाति के नाम की अफीम खिलाकर हम आम जनता के

लोगों को सुला रक्खा है। ताकि हम अपने हितों मौलिक अधिकारों एवं कर्त्तव्यों के प्रति जागरूक न हो जायें। परन्तु हम आजकल के आम जनता के लोग दूध पीते बच्चों से भी गये बीते हैं क्योंकि हम अपने मौलिक अधिकारों, हितों एवं कर्त्तव्यों को पूरी तरह भूल गये हैं। मां का अफीम के नशे में सोया बच्चा अफीम के नशे से मुक्त होकर रोकर फिर दूध की मांग करता है तो उसे मां के द्वारा दूध प्राप्त हो ही जाता है। हमारा आम जनता के लोगों से आह्वान है कि सजग हो जाओ अब भी समय है एक जुट होकर अपने मौलिक अधिकारों, हितों एवं कर्त्तव्यों को समझो तथा प्रदेश एवं देश की सरकारको बाध्य कर दो कि देश की योजनाओं का कम से कम 90 प्रतिशत धन हम आम जनता तक पहुंचे। यदि किसी भी प्रकार हमें आम जनता को अपने मौलिक अधिकारों एवं हितों की प्राप्ति नहीं होती है तो अपने अधिकारों को छीनना सीखो। क्योंकि मैंने सुना है कि सच्चा पुरूष वही है जो अपने अधिकारों को न मिलने पर उन्हें छीन लेता है। मेरा सर्वप्रथम आम जनता से आह्वान है कि सर्वप्रथम हम कम से कम दूध पीते बच्चों के समान बनकर इन उपरोक्तों से सभी प्रकार के अपने अधिकारों, हितों, आदि की मांग रखकर दिखायें। हम आम जनता के लोग आजकल के समय में सिर्फ अपने-अपने छोटे छोटे हित एवं अपने-अपने छोटे स्वार्थ देख रहे हैं। हम सब अपनी-अपनी ढपली अपना अपना राग नामक क़हावत के पर्यायवाची बन रहे हैं।

यही कारण है कि आजकल के सभी उपरोक्त हमें आम जनता को धर्म, जाति, वर्गों एवं सम्प्रदायों के नाम पर आपस में बांटकर अपना उल्लू सीधा करने में पूर्ण रूप से सफल रहे हैं। वे हमें आम जनता को मूर्ख बनाकर अथाह धन-सम्पदा एकत्र करने में पूर्ण रूप से सफल रहे हैं और रहेंगे। यदि हम आम जनता के लोग उनके खिलाफ एक जुट नहीं होंगे। अब समय आ गया है कि हम चौ० साहब के इस कथन का कि **जातिवाद एवं धर्मवाद समाज का कलंक है।** का अर्थ समझकर अपने छोटे-छोटे हितों एवं अपने छोटे-छोटे स्वार्थों में न बंटने के स्थान पर एक जुट होकर अपने मौलिक अधिकारों, हितों एवं कर्त्तव्यों का सजग प्रहरी बनकर अपने

जन प्रतिनिधिगणों आदि उपरोक्तों पर एक निगाह नहीं बल्कि सभी मिल जुलकर अपनी पूरी निगाहें उन लोगों पर रक्खें तथा ब्रिटिश साम्राज्य की धर्म, जाति, वर्गों एवं सम्प्रदायों के नाम पर हमारे समाज को बांटने की मानसिकता जो कि आजकल के उपरोक्तों ने अपना रक्खी है को जड़ से उखाड़कर फेंक दे। तभी चौ० साहब की ग्रामीण क्षेत्रों के विकास एवं ग्रामोत्थान स्वप्न पूर्ण करने में हम सब मिल जुलकर सफल हो पायेंगे। तथा **"तभी हम आम जनता के लोगों को समृद्धि एवं खुशहाली के नये युग का सूत्रपात करने में सफलता प्राप्त होगी।"**

चौधरी साहब के उच्च विचार थे, उनका ग्रामोत्थान का इरादा पक्का था। उन्होंने जीवनभर गरीबों, कामगारों, एवम् किसानों के हितों तथा ग्रामोत्थान के लिये लिये लड़ाई लड़ी। वे एक निस्वार्थ व्यक्ति थे। उनमें स्वार्थ था तो सिर्फ देश के विकास का। उन्हें सभी देशवासियों से प्रेम था चाहे वह किसी भी धर्म जाति व वर्ग का क्यों न हों। उन्हें कायरत, धन लोलुपता तथा पदलोलूपता से घृणा थी, वे देश में व्याप्त भ्रष्टाचार व रिश्वतखोरी के प्रबल विरोधी थे। वे दूरदृष्टि के धनी थे। वे कहाँ करते थे कि यदि देश में से रिश्वतखोरी व भ्रष्टाचार को समाप्त करना है तो हमे सबसे पहले इसे उच्च स्तर से समाप्त करना होगा, यदि शीर्ष पदों पर बैठे (कार्यरत) लोग भ्रष्टाचार व रिश्वतखोरी में लिप्त रहेंगे तो निचले स्तर के लोगों (कर्मचारीगण) को वैसा ही करने की खुली छूट मिल जायेगी।

इस कारण भ्रष्टाचार व रिश्वतखोरी का खात्मा होना तभी सम्भव है जब उसे उच्च स्तर से समाप्त कर दिया जाये। जब देश में शीर्ष पदों पर बैठे (कार्यरत) लोग ईमानदार एवम कर्त्तव्यनिष्ठ होंगे तभी वे निम्न स्तर के लोगों (कर्मचारीगण) के विरूद्ध निर्भय होकर दण्डात्मक कार्यवाही करने में पूर्ण रूप से सक्षम होंगे। वे एक सच्चे देशभक्त, स्वतन्त्रता सेनानी, ईमानदार, चरित्रवान, संघर्षशील, त्यागी, निडर, कर्मठ, कर्त्तव्यनिष्ठ तथा सच्चे इन्सान थे। वे गुणों की खान थे। उन्होंने अपने पूरे जीवन में किसी भी अवगुण को अपने पास नहीं फटकने दिया। वे सादगी व शालीनता की प्रतिमूर्ति थे, वे जब तक जीवित रहे देश के हित के बारे में सोचते

रहे। बीमारी की अवस्था में मृत्यु शैय्या पर भी वह यह पूछते रहे कि मेरे देश में क्या हो रहा है ? बीमारी की अवस्था में देश के बारे में जानकारी लेकर उन्हें फूँट-फूँट कर रोते हुए देखा गया। ऐसे थे हमारे चौधरी चरण सिंह जी। आज हमारे देश को चौधरी साहब जैसे नेतागणों की आवश्यकता है। आज के समाज में जो आगे बढ़कर उनकी विचारधारा को आगे बढ़ायेगा तथा उनका अनुसरण करके सच्चे मन से देश सेवा का बीड़ा उठायेगा तथा अपने अन्दर चौधरी साहब जैसी दूरदृष्टि, सच्ची लग्न, मेहनत, स्वच्छ चरित्रता, सत्यता, ईमानदारी, त्यागशीलता, निडरता, संघर्षशीलता, कर्त्तव्यनिष्ठता, स्वार्थ विहीनता एवम् कर्मठता पैदा करेगा तथा जिसका ग्रामीण क्षेत्रों के विकास एवम् ग्रामोत्थान का इरादा चौधरी साहब के समान फौलाद जैसा पक्का होगा, सिर्फ ऐसा ही व्यक्ति चौधरी साहब का सच्चा उत्तराधिकारी कहलायेगा और तभी **"इस महान् सपूत की आत्मा को शान्ति प्राप्त होगी।"**

चौधरी साहब के राजनैतिक जीवन के संबंध में मेरे विचार

स्व: पूर्व प्रधानमंत्री चौ० चरण सिंह जी का राजनैतिक जीवन सच्चाई व देश प्रेम पर आधारित है। उन्होंने आजीवन ग्रामीण क्षेत्रों के विकास एवं ग्रामोत्थान के लिये कार्य किया। और सदैव गरीबों के हितों की लड़ाई लड़ते रहे। उन्होंने देश के स्वतंत्रता आन्दोलन में भाग लिया तथा कई बार जेल गये। देश स्वतंत्र होने पर उन्हें उ० प्र० सरकार में मंत्री बनाया गया। परन्तु उन्होंने देखा कि कांग्रेस पार्टी के अधिकतर नेतागण शहरों की बात सोचते हैं। तथा शहरों से संबंधित इस बात से क्षुब्ध होकर एक अप्रैल सन् 1967 में उन्होंने कांग्रेस पार्टी छोड़ दी तथा 3 अप्रैल सन् 1967 में उन्होंने कई दलों को एक साथ मिलकर सविंद सरकार का गठन किया। और वे उ० प्र० के मुख्यमंत्री बने। तथा दस माह तक उ० प्र० में मुख्यमंत्री रहे। सन् 1968 को उन्होंने भारतीय क्रान्ति दल नामक पार्टी की स्थापना की। फिर कई दलों के एक साथ मिलाकर दिनांक 17 फरवरी सन् 1970 को उन्होंने फिर दुबारा उ० प्र० में संविद सरकार का गठन किया। और वे फिर उत्तर प्रदेश के

मुख्य मंत्री बने। कई दलों की मिली-जुली सरकार होने के कारण वे अपनी नीतियों को कार्यरूप न दे पाये। इसके अतिरिक्त उनका उत्तर प्रदेश के मुख्य मंत्री पद का कार्यकाल भी बहुत कम समय का रहा। परन्तु वे ग्रामीण क्षेत्रों के लोगों को अपने हितों एवं अधिकारों के प्रति सजग रहने की प्रेरणा देने में सफल रहे। तथा देश के प्रमुख नेतागणों का ध्यान भी ग्रामीण क्षेत्रों के विकास एवम् ग्रामोत्थान के प्रति केन्द्रित कराने में भी वे सफल हो गये थे।

देश के अन्य बड़े नेतागण भी अब ग्रामोत्थान एवम् ग्रामीण क्षेत्रों के विकास के प्रति सोचने लगे थे। तो उन्होंने अपने दल के नाम के बीच से क्रान्ति शब्द हटा दिया। क्योंकि वह समझ गये थे कि देश के अधिकांश नेताओं का ध्यान अब ग्रामीण समाज एवं ग्रामीण जनता की दुर्दशा एवं ग्रामीण क्षेत्रों के अविकसित होने की ओर चला गया है तथा ग्रामीण जनता भी अपने अधिकारों तथा हितों की रक्षा के लिये जाग्रत हो चुकी हैं। तथा उनका ग्रामीण विकास व ग्रामोत्थान के प्रति जन जागरण का कार्य पूरा हो चुका है। इस कारण अब क्रान्ति शब्द का कोई महत्त्व नहीं रहा है। तब उन्होंने सन् 1974 दिनांक 29 अगस्त को अपने दल का नाम भारतीय क्रान्ति दल के स्थान पर भारतीय लोकदल कर दिया। अर्थात् भारतीय लोगों का दल भारतीय लोग दल में उन्होंने उस समय के कई छोटे-छोटे दलों किसान मजदूर पार्टी, पंजाबी खेती बाड़ी, यूनियन, बलराज मधोक की राष्ट्रीय लोक तान्त्रिक संघ, स्वतन्त्रा पार्टी तथा संयुक्त सोशलिष्ट पार्टी का विलय कर लिया तथा भारतीय लोकदल की स्थापना की दिनांक 26 जून सन् 1975 को माननीय स्वः प्रधानमंत्री इन्दिरा गांधी ने विशेष परिस्थितियों में देश में एमरजेन्सी (आपातकालीन स्थिति) लागू कर दी थी तथा देश के प्रमुख राजनैतिक नेतागणों, सामाजिक संगठनों के नेतागणों एवं माननीय स्वः जय प्रकाश नारायण के सर्वोदय दल के संगठन के लोगों को कारागारों (जेलों) में निरुद्ध कर दिया गया। चौधरी साहब को भी जेल की सलाखों के पीछे बन्द कर दिया गया परन्तु उन्होंने जेल में भी अपना कार्य जारी रक्खा और आपातकालीन स्थिति घोषित करने की स्वः प्रधानमंत्री श्री इन्दिरा

गांधी जी की नीति का मुख्य रूप से विरोध करते रहे। स्व: प्रधानमंत्री इन्दिरा गांधी जी ने समय की नाजुकता। को समझते हुये चौधरी साहब को जेल से रिहा कर दिया। बड़े-2 नेतागणों में से सर्वप्रथम चौ० साहब को जेल से रिहा किया गया।

यहां हमें यह कहना है कि आखिर स्व: प्रधानमंत्री इन्दिरा गांधी ने देश के प्रमुख नेतागणों में से सर्वप्रथम चौ० साहब को ही जेल से रिहा करने का निर्णय क्यों लिया? उसका मुख्य कारण यह है कि वह चौ० साहब को एक देशभक्त, एवम् सच्चा इन्सान समझती थी। वह जानती थी कि चौधरी साहब को ज्यादा दिन जेल में निरूद्ध रखने से जनता में विद्रोह होने की सम्भावना है। कारागार (जेल) से मुक्त होने के पश्चात् चौ० साहब घर नहीं बैठे। उन्होंने देश में चारों ओर सभायें करके आपातकालीन स्थिति (एमरजेन्सी) घोषित करने का विरोध करना तथा बड़े-2 राजनैतिक, सामाजिक संगठनों के नेतागणों तथा सर्वोदय दल के नेतागणों को जेल से रिहा कराने के लिये आम जनता के घरों से निकलकर सड़कों पर आने का आह्वान करना शुरू कर दिया। उन्होंने एक सभा में स्पष्ट कहा कि **"हम देश में वंशवादी विचारधारा को लागू नहीं होने देंगे। भारत देश की जनता को मौन आर्की (राजतन्त्र) बर्दाश्त नहीं है। भारत देश इन्दिरा गांधी की जागीर नहीं है। यहां परिपक्व लोकतंत्र व्यवस्था लागू है। हम भारतवर्ष की कार्यपालिका व पुलिस तंत्र को बता देना चाहते हैं कि वह इन्दिरा गांधी के आदेशों को आंख बन्द करके ना माने। अन्यथ इसके बहुत बड़े दुष्परिणाम होंगे।"** उसका परिणाम साकारात्मक निकला।

स्व: प्रधान मंत्री इन्दिरा गांधी को विवश होकर सभी राजनैतिक, सामाजिक एवं सर्वोदय दल के नेतागणों को (कारागारों) से (जेलों से) रिहा करना पड़ा। तथा **"स्वतंत्रता के एक नये युग का सूत्रपात हुआ"** ऐसे निडर संघर्षशील, देशभक्त, इन्सान थे हमारे स्व: प्रधानमंत्री चौ० चरण सिंह जी। जिन पर आज की वर्तमान पीढ़ी जितना नाज करे वह कम है। नेतागणों के जेल से रिहा करने के पश्चात् स्व: प्रधानमंत्री श्रीमति इन्दिरा गाँधी ने देश में आम चुनाव कराने का निर्णय

लिया। चौधरी साहब अत्यधिक भावावेश में थे। उन्होंने देश के सभी प्रमुख दलों के राजनेताओं से वार्ता करके सभी दलों को एक साथ मिलाकर एक दल बनाने की अपनी विचारधारा से अवगत कराया। तो देश के सभी नेतागण सर्हष तैयार हो गये। क्योंकि अधिकांश दलों के नेतागण स्व: प्रधानमंत्री इन्दिरा गांधी की देश में एमरजेन्सी (आपातकालीन स्थिति) घोषित करने तथा देश के सभी प्रमुख नेता गणों को जेल में निरूद्ध करने की नीति के विरूद्ध थे। सन् — 1977 में चौ० साहब अथक प्रयासों से देश के अधिकांश राजनैतिक दलों ने मिलकर जनता पार्टी नामक दल का गठन किया। जिसके चौ० साहब ने अग्रणीय भूमिका अदा की। चौधरी साहब को उत्तर भारत का प्रभारी नियुक्त किया गया। उन्होंने पूरे उत्तर भारत में जनता पार्टी को सफल बनाने की जिम्मेदारी स्वीकार की तथा पूरे उत्तर भारत में कांग्रेस पार्टी के विरूद्ध बहुत कम समय में एक बहुत बड़ा संगठन तैयार करने में उल्लेखनीय सफलता प्राप्त की। ऐसे थे हमारे चौ० साहब। उन्होंने जनता पार्टी द्वारा सौंपी गई जिम्मेदारी को निभाने में कोई कसर नहीं छोड़ी। उन्होंने दिन-रात जनजागरण करके अपनी चुनाव सभायें कीं। वे अत्यधिक भावावेश में थे। वे चुनावों में स्व: प्रधानमंत्री इन्दिरा गांधी की दमनकारी नीति के सबसे अग्रणीय प्रबल विरोधी होकर देश की जनता के सम्मुख प्रकट हुए।

आपातकालीन स्थिति (एमरजेन्सी) में हुये अत्याचारों का विवरण करते हुये वे फूट-फूट कर रो पड़ते थे। तथा जनता से आह्वान करते थे कि ऐसी दमनकारी सरकार को जड़ से उखाड़ फैंको जो भारतवर्ष जैसे हमारे देश में लोकतंत्र का मजाक उड़ा रही है। इस दमनकारी सरकार के पुलिस कर्मचारी हमारे देश के युवाओं के नाखून खींच-खींच कर अंग्रेजों के समान हमारी नई पीढ़ियों के हौंसले परस्त कर रहे हैं। वे आंसू पौंछकर मेरठ की एक जनसभा में भावावेश में उत्तेजित होकर बोले **"मेरे देश में मेरे बच्चों के इन्दिरा गाँधी की सरकार के पुलिस तन्त्र के कर्मचारी नाखून खींच लेते हैं। हम फिर गुलाम हो गये हैं। हम ऐसे पुलिस कर्मचारियों (रुंधे गले से) बता देना चाहते हैं कि इस देश में**

अभी इन्दिरा गांधी के अतिरिक्त अन्य नेतागण भी मौजूद हैं। युवाओं पर जुल्म करने वाले इन पुलिस कर्मचारियों को समझ लेना चाहिये कि देश में सदैव इन्दिरा गांधी का शासन नहीं रहेगा। ऐसे पुलिस कर्मचारियों को कठोर दण्ड दिया जायेगा। हमारे देश की जनता के साथ जो जुल्म हो रहे हैं उन्हें हम सहन नहीं कर सकते। ऐसे पुलिस वाले समझ लें कि चरण सिंह अब कारागार (जेल) से बाहर हैं।"

मैं जिला मेरठ का निवासी हूं। सौभाग्य से मैं भी मेरठ शहर को भैंसाली मैदान की इस जनसभा में उपस्थित था। मैंने चौ० साहब की इस जनसभा में अपने साथ अन्य उपस्थित जनता के लोगों को भी अपने आंसूओं को पोंछते देखा। उन्होंने जनता में उत्तर भारत में एमरजेन्सी (आपातकालीन स्थिति) के विरूद्ध जनजागरण करने में बहुत बड़ी सफलता प्राप्त की। चौधरी साहब एक सच्चे देशभक्त इन्सान थे। एमरजेन्सी (आपातकालीन स्थिति) में हुये अत्याचारों से उनका मन व मस्तिष्क अत्यधिक दुःखी था। यही कारण था कि वे अपने प्रभार की उत्तर भारत की जनता की भावनाओं को आन्दोलित करने में पूर्ण रूप से सफल रहे। फलस्वरूप जनता पार्टी को उत्तर भारत में भारी सफलता प्राप्त हुई। यहां तक कि स्व: प्रधानमंत्री इन्दिरा गांधी भी अपने रॉय बरेली क्षेत्र से चुनाव में परास्त हो गई। जबकि दक्षिण भारत में कांग्रेस पार्टी को काफी हद तक सफलता मिली क्योंकि दक्षिण भारत में जनतापार्टी के पास जन जागरण करने के लिये सच्ची लग्न, सच्चे हृदय व मस्तिष्क तथा दिनरात एक करने वाला चौधरी साहब के जैसा कोई ईमानदार, सच्ची लगन वाला, साहसी व कर्त्तव्यपरायण नेता नहीं था। फलस्वरूप जनता पार्टी सत्ता में आई। सन् 1977 के इस चुनाव में जो भूमिका चौधरी साहब ने निभाई वह सर्वविदित है। माननीय स्व: जय प्रकाश नारायण जी ने चौधरी साहब के स्थान पर माननीय स्व: मोरार जी देसाई का नाम प्रधानमंत्री पद के लिये रक्खा। स्व: मोरारजी देसाई के नाम पर विवाद उठ खड़ा हुआ। परन्तु चौ० साहब ने सहशीलता एवं त्यागशीलता का परिचय देते हुये माननीय स्व: जयप्रकाश नारायण की इच्छा का

आदर करते हुये स्व: प्रधानमन्त्री मोरार जी देसाई को अपना समर्थन देने की घोषणा कर दी। उनका समर्थन मिलने के पश्चात् माननीय स्व: प्रधानमंत्री मोरारजी देसाई भारतवर्ष के प्रधानमंत्री बने।

ऐसे महात्यागी थे हमारे चौधरी साहब जिन्होंने अपनी त्यागशीलता का परिचय दिया तथा जनता पार्टी को अर्न्तद्वन्द्व से बचा दिया। यद्यपि अनेक नेतागण इस विचारधारा के थे कि चौधरी साहब ही प्रधानमंत्री पद के सच्चे अधिकारी थे। स्व: चौधरी चरण सिंह को भारत सरकार में ग्रह मंत्री बनाया गया। चौ० साहब माननीय स्व: प्रधानमंत्री मोरारजी देसाई की विचारधाराओं से सहमत नहीं हुये। उन्होंने अपने पद का लालच छोड़कर सर्वप्रथम स्व: मोरारजी देसाई के सम्मुख उनकी विचारधारा का विरोध किया। तथा उनकी विचारधाराओं के प्रति स्पष्ट रूप से अपनी असहमति दर्शायी। (यहाँ विचारधाराओं का वर्णन नहीं किया जा रहा है) इस पर स्व: प्रधानमंत्री मोरार जी देसाई उनके विरूद्ध हो गये। परन्तु चौधरी साहब ने अपनी जंग जारी रक्खी। तथा अपनी कुर्सी की परवाह न करते हुये **(यहां यह स्पष्ट करना अनिवार्य होगा कि चौधरी साहब पदलोलुप नहीं थे। वे देश में अपनी ग्रामोत्थान विचार धारा एवम् ग्रामीण सोच को लागू कराना चाहते थे)** उन्होंने सार्वजनिक रूप से आम जनता में स्व: प्रधानमंत्री मोरारजी देसाई की नीतियों एवं विचारधारा का विरोध करना शुरू कर दिया जिससे क्षुब्ध होकर स्व: प्रधानमंत्री मोरारजी देसाई ने दिनांक 23 जून सन् 78 को रात्रि में चौधरी साहब को ग्रहमंत्री पद से बर्खास्त कर दिया। अपने भारत सरकार के ग्रहमंत्री के पद पर रहते हुये उन्होंने मण्डल आयोग का गठन कराया। जिसे प्रधानमंत्री विश्वनाथ प्रताप सिंह ने देश में लागू किया। तथा पिछड़े वर्गों की जातियों को आरक्षण प्राप्त हुआ।

चौधरी साहब को कुर्सी का तनिक भी लालच न था। वे अवचलित रहे उनके समर्थक स्व: मोरारजी देसाई के कटु विरोधी हो गये। वे इस बात से चकित थे कि जिस व्यक्ति ने त्यागशीलता का परिचय देते हुये अपना प्रधानमंत्री पद का दावा छोड़कर स्व: प्रधानमंत्री मोरारजी देसाई को भारतवर्ष का प्रधानमंत्री बनाने में स्व:

जयप्रकाश नारायण जी की इच्छा का आदर करते हुये अपनी अधिकार का त्याग कर दिया। उसी ने रात्रि को माननीय स्वर्गिय प्रधानमन्त्री चरणसिंह जी का किन कारणों से बर्खास्त कर दिया। माननीय स्वः प्रधानमंत्री स्वः मोरारजी देसाई का यह निर्णय चौधरी साहब के समर्थकों को तो क्या देश की आम जनता के गले भी नहीं उतर रहा था। इस कारण जनता पार्टी के अधिकांश नेतागण व लोकसभा सदस्यों ने स्वः प्रधानमंत्री मोरारजी देसाई के विरुद्ध पार्टी के अन्दर एक विरोधी मोर्चा बना लिया। जनता पार्टी के लोकसभा सदस्यों एवं अधिकांश नेतागणों ने स्व० प्रधानमन्त्री मोरार जी देसाई की व्यक्तिगत आलोचना करनी शुरू कर दी।

अधिकांशी जनता पार्टी सदस्यों ने उन्हें तानाशाहा की संज्ञा देना शुरू कर दिया आम जनता में भी उनका विरोध होने लगा। सन् 1979 दिनांक 23 दिसम्बर को मोरार जी देसाई की तानाशाही रवैये (अर्थात् बिना किसी कारण के चौधरी साहब को ग्रहमंत्री पद से बर्खास्त करने) के विरूद्ध दिल्ली में आम जनता में एक ऐतिहासिक रैली की। जिसमें असंख्य लोग शामिल थे।

दिल्ली में जैसे जनसैलाब उमड़ पड़ा वोट क्लब तथा दिल्ली में चारों ओर जगह-जगह विभिन्न ग्रामीण वेश भूषाओं में विभिन्न प्रदेशों के लोग जगह-जगह दिखाई पड़ रहे थे। यह रैली चौधरी चरण सिंह के 78वें जन्म दिवस पर मनाई जा रही थी। इस रैली में 78 लाख रुपये की ही थैली चौ० साहब को भेंट की गई थी। यह सारा रुपया ग्रामीण क्षेत्रों से आये लोगों ने अपनी मेहनत की गाढ़ी कमाई में से एकत्र करके चौ० साहब को चन्दे के रूप में भेंट किया था। ऐसे धनी थे हमारे चौ० साहब! ऐसे दिल के धनी थी उनसे प्रेम करने वाले ग्रामीण क्षेत्रों के लोग! ऐसे निःस्वार्थ समर्थकों के नेता थे चौ० साहब! चौ० साहब खुशी से गदगद हो उठे इतने लोगों का प्रेम पाकर वे मंच पर प्रसन्नता में विपुलमय होकर फूट-फूट कर रो पड़े। परन्तु चौ० साहब ने इन 78 लाख (78,00,000) में से एक रुपया भी अपने पास नहीं रखा उन्होंने तुरन्त ही एक किसान ट्रस्ट की स्थापना कर डाली इस ट्रस्ट का उद्देश्य किसानों एवं गरीबों के प्रत्येक प्रकार के हितों की सुरक्षा